केरल ज्योति

दिसंबर 2025

ISSN 2320-9976
Reference Resource Journal

केरल हिंदी प्रचार सभा

ISO 9001: 2015

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2025
के विविध दृश्य

केरलज्योति
केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

केरल हिंदी प्रचार सभा के संस्थापक
स्व. के वासुदेवन पिल्लै
पूर्व समीक्षा समिति
प्रो (डॉ) एन रवींद्रनाथ
डॉ के एम मालती
प्रो(डॉ) आर जयचन्द्रन
प्रो (डॉ) जयश्री एस आर
परामर्श मंडल
डॉ तंकमणि अम्मा एस
डॉ लता पी
डॉ रामचन्द्रन नायर जे
प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)
मुख्य संपादक
डॉ. एम एस विनयचंद्रन
संपादक
डॉ. रंजीत रविशैलम
संपादकीय मंडल
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)
सदानन्दन जी
मुरलीधरन पी पी
प्रो रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
डॉ नेलसन डी
प्रकाशन संयोजिका
अर्चना एस

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुष्प : 62 दल : 9 अंक: **दिसंबर 2025**

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

बॉलिवुड इतिहास के चमकीले सितारे धर्मेन्द्र अब न रहे.....
अधिवक्ता (डॉ) बी मधु 6

राजा रविवर्माचरित महाकाव्य – **प्रो.डी.तंकप्पन नायर** 7

दर्शन माला (अनूदित व्याख्या) – **डॉ नेलसन डी** 9

पार्टिशन होरर रिमेंब्रेंस डे की याद में 'मेरी माँ कहाँ?' – **प्रो (डॉ) मनु** 11

दलितों की मानसिक पीड़ा और सामाजिक उत्पीड़न की मार्मिकता :
'वेदना' कहानी के संदर्भ में – **डॉ बिंदुकुमारी सी बी** 14

श्रीरामचरितमानस में संवाद-चतुष्ठयी के निहितार्थ
महेंद्र प्रताप सिंह /डॉ उमेश कुमार 16

'चेम्मीन' : एक साहित्यिक विश्लेषण – **शांती ऐ एस** 22

विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण: वडोदरा
के दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज़्म केंद्र का अध्ययन – **सरिता पॉल** 26

"धूणी तपे तीर" में तप्त आदिवासी जीवन – **डॉ श्रीकला एस आर** 33

मधु काँकरिया की कहानियाँ : नारी अस्मिता की तलाश–**अतुल्या ए** 37

प्रश्नोत्तरी – **डॉ.रंजीत रविशैलम** 38

कुमार अंबुज की काव्य यात्रा – **डॉ अन्सा ए** 39

'स्मृति की रेखाएँ' में मानवीय संवेदनाएँ और उपेक्षित समाज–**विरेश** 43

यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' के उपन्यास 'हज़ार घोड़ों पर सवार' में सामंती समाज
के अंतर्गत स्त्री जीवन का चित्रण–**श्यामसुंदर एवं डॉ राजेंद्र कुमार सेन** 48

मानस कैलास **मूलः मंजु वेल्लायणि**
अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर , डॉ.रंजीत रविशैलम 53

देवयानम् (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा, अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 55

ज़िंदगी : एक लोलक (आत्मकथा) 57
मूल : श्रीकुमारन तंपी अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार

मुखचित्र : हिंदी फ़िल्मी दुनिया के कीर्तिशेष अभिनेता धर्मेंद्र

लेखकों से निवेदनः

• हिन्दी और इतर भारतीय भाषाएँ, साहित्य, संस्कृति आदि पर लिखी गयी उच्च स्तरीय मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ आमंत्रित हैं। • भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि पर आयोजित समारोहों, चर्चाओं, संगोष्ठियों के समाचारों का भी स्वागत है। इन समाचारों को प्रस्तुत करनेवाले का नाम और पूरा पता भी लिख भेजें। • भारतीय भाषाओं से अनूदित कविता, कहानी भी भेजें। उनके साथ मूल लेखक से प्राप्त अधिकार पत्र भी प्रेषित करें। • प्राकाशनार्थ रचनाएँ साफ-साफ अक्षरों में लिखकर अथवा टंकित कर या **डी.टी.पी.** करके **सी.डी.** में भेजें। कृपया कार्बन प्रति न भेजें। • स्वीकृत रचनाएँ यथासमय पत्रिका में प्रकाशित की जाएँगी। • आप ई-मेल द्वारा भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं। ई-मेल में Microsoft Word or Pagemaker फाइल में भेजिए। ई-मेल आईडी :khpsabha12@gmail.com • अपनी रचना के साथ पूरा पता (जिला, राज्य और पिनकोड सहित), लघु परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक, 'केरल ज्योति', केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम-695 014

सभा का मुख्यालय और उसकी गतिविधियाँ

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के वषुतक्काड़ में सभा का मुख्यालय स्थित है। सभा के मुख्य परिसर में सभा के संस्थापक मंत्री की पावन स्मृति में श्री वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिंदी ग्रंथालय, स्नातकोत्तर अध्ययन अनुसंधान केंद्र, साहित्याचार्य महाविद्यालय, केंद्रीय हिंदी महाविद्यालय, टंकण और आशुलिपि संस्थान, परीक्षा भवन, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, राष्ट्रज्योति पब्लिशेर्स के प्रकाशन अधिकारी का कार्यालय, हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी.एड़) और केरल विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त शोध केंद्र हैं।

विज्ञापन दर (साधारण अंक)

	मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4 (रंगीन)	रु.2500.00	25,000.00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 (रंगीन)	रु.2000.00	20,000.00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.1000.00	10,000.00
साधारण पृष्ठ 1/2	रु.600.00	6,000.00
साधारण पृष्ठ 1/4	रु.350.00	3,500.00

एक प्रति का मूल्य रु. 40/- ***आजीवन चंदा : रु. 4000/-*** ***वार्षिक चंदा : रु. 400/-***

A /c No. 57022786007 IFS Code : SBIN0070033
State Bank of India, Vazhuthacaud Branch

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, वषुतक्काडु, तिरुवनन्तपुरम-695 014.
दूरभाष:0471-2321378, 2329200, 2329459. फैक्स:0471-2329200 ई-मेल : khpsabha12@gmail.com

दूरभाष : 0471-2321378, 2329200, 2329459
फैक्स : 0471-2329459
मोबाईल : संपादक : 7898515222/ 9447657301

khpsabha12@gmail.com
www.keralahindipracharsabha.in

केरलज्योति
सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
दिसंबर 2025

संपादकीय

दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र ब्रह्मलीन हुए

हर भारतवासी एवं विश्व के तमाम सिनेमा प्रेमियों के दिल में विशेष पहचान बनाए रखनेवाले धर्मेंद्र केवल किशन देओल उर्फ धर्मेंद्र अब इस दुनिया में स्मृतिशेष रह गए हैं। नब्बे वर्ष की आयु उन्होंने पायी। 8 दिसंबर सन् 1935 को गाँव नसराली, पंजाब में जन्मे धर्मेंद्र सिनेमा में विशेष पहचान अपनी अप्रतिम अदाकारी से बनाई। सन्1960 में "दिल भी तेरे हम भी तेरे" से अपनी फिल्मी सफर आपने शुरु की। शोला और शबनम, सूरत और सरित बंदिनी, गंगा की लहरें, नीला आकाश, फूल पत्थर, देवर, बहारों की मंज़िल, आदमी और इनसान, शराफत, गुड्डी, सीता और गीता, ज्वार भाटा, अपने दुशमन, दो चेहरे, खुदा कसम, अंधा कानून, रज़िया सुलतान सहित दो सौ अस्सी सिनेमा का हिस्सा बने। ड्रीमगर्ल और शोले उनकी सिनेमाओं में उल्लेखनीय हैं। ऐसा माना जाता है कि 'ड्रीमगर्ल' सिनेमा से अपनी जीवन संगिनी और 'शोले' से अपने अंतरंगी अभिताभ बच्चन को आपने पाया। धर्मेंद्र और बच्चन की दोस्ती एक मिसाल है। आपकी संतानें भी कम कामयाब नहीं हुईं। आपके पुत्र सनी देओल, बोबी देओल और बिटिया ईशा देओल भी अपने पिता की तरह बोलीवुड सिनेमा के आभूषण बने।

धर्मेंद्र जी की सिनेमा के गानों से साहित्य की गीत परंपरा की कड़ी बनने का भी अवसर उन्हें प्राप्त हुआ। भाषा सीखने की ओर लोग अक्सर गीतों कहानियों के माध्यम से जा पहुँचते हैं। हिंदी भाषा के प्रति लोगों में रुझान बढ़ाने में धर्मेंद्र जी का योगदान अतुलनीय रहा। ये दोस्ती, चंदा मामा से प्यारा मेरा मामा, दिल से दिल की बात हो गई, बड़ी दूर से आए, कोई हसीना रूढ़ जाती है आदि गाने हर भारतीय के दिल में अंकित हैं। धर्मेंद्र जी का 'उच्चारण' भी स्पष्ट एवं प्रभावी था। हिंदी भाषा सीखनेवालों के लिए आप परोक्ष रूप से निश्चय ही एक 'गुरु' रहे। आपका ध्येय हमेशा से प्रेक्षकों का मनोरंजन करना रहा। सदा ही अपने निजी जीवन में प्यार से ही पेश आते थे। उनके कर्म-धर्म में सदा प्रेम पलता था। उसी 'प्रेम तत्त्व के खो जाने से लोग आज संतप्त हैं। उनके अकस्मात् ब्रह्मलीन होने पर उनकी तिग्म आत्मा को समूचे केरल हिंदी प्रचार सभा परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलियाँ।

2026 निकटस्थ है। छल, कपट, विश्वासघात, भुखमरी आदि से दूर एक शुभ स्थिति 2026 पूरे विश्व को प्राप्त हो जाए। आप सभी को नववर्ष की शुभकामनाएँ।

डॉ रंजीत रविशैलम
संपादक

बॉलिवुड इतिहास के चमकीले सितारे धर्मेन्द्र अब न रहे.....

अधिवक्ता (डॉ) बी मधु

हिंदी फ़िल्मी दुनिया के ख्याति प्राप्त अभिनेता, निर्माता और राजनेता धर्मेन्द्र का निधन मुंबई की जुहुबस्ती में स्थित अपने निवास स्थान पर 24.11.2025 को हुआ। अपनी नवति में पहुँच पाने के लिए थोड़े ही दिन शेष रहे।

करीब उन्नीस सौ साठ - सत्तर से बॉलिवुड के हृदय-नायक बन गये थे धर्मेन्द्र। तीन सौ से अधिक फ़िल्मों में उन्होंने काम किया था। पंजाब के लुधियाना जिले में इनका जन्म हुआ था। एक फ़िल्मकार के रूप में धर्मेन्द्र का हिंदी सिनेमा में एक विशेष योगदान है। आप रोमांटिक एवं सूपरस्टार अभिनेता के रूप में सिनेमा के रुपहले पर्दे पर आए और आजीवन दर्शकों के चहेते बन गए।

रमेश सिप्पी द्वारा निर्देशित क्लासिक फ़िल्म 'शोले' (1975) से पूर्व वे एक शालीन युवा एवं संवेदनशील अभिनेता के रूप में जाने जाते थे। लेकिन 'शोले' फ़िल्म ने उनके अभिनय की दिशा ही बदल दी और एकशन हीरो की ओर वे मुड गए।

प्रणय भावना के छत्रपति रहे धर्मेन्द्र। प्रथम पत्नी प्रकाश कौर के साथ वैवाहिक जीवन बिताते हुए भी ड्रीमगेल हेममालिनी से उन्होंने ब्याह कर दिया। 'दिल भी तेरा, हम भी तेरा उनकी पहली फ़िल्म थी। फूल और पत्थर, मेरा गाँव तेरा देश, सीता और गीता, धर्मवीर, चुपके-चुपके, आया सावन झूम के, प्यार किया तो डरना क्या' आदि अन्य बहुचर्चित फ़िल्में थीं। अंतिम फ़िल्म 'इक्कीस' आगामी क्रिस्तुमस दिन में रिलीज़ होनेवाली है।

सन् 2004 में धर्मेन्द्र राजस्थान के बिकनेर से लोकसभा सांसद बन गये (भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर)। भारत सरकार ने इन्हें सन् 2012 में 'पद्म भूषण' उपाधि से सम्मानित भी किया था।

फिल्म मनोरंजन का माध्यम मात्र नहीं है; ज्ञानवर्द्धन के लिए भी अत्यन्त बेहतरीन माध्यम है। धर्मेन्द्र की सिनेमाई ज़िन्दगी में कलात्मक, सामाजिक और साहित्यिक मूल्य महत्वपूर्ण माना जाता है। अतः भारतीय सिनेमा के इतिहास-लेखन में इनका योगदान भी सराहनीय रहेगा।

कीर्तिशेष फ़िल्मकार धर्मेन्द्र को केरल हिंदी प्रचार सभा और 'केरल ज्योति' परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि.....!

अधिवक्ता(डॉ)बी मधु
मंत्री

केरल ज्योति के पाठकों को क्रिस्तुमस एवं नव वर्ष 2026 की शुभकामनाएँ!

अधिवक्ता (डॉ) मधु.बी.
मंत्री, केरल हिंदी प्रचार सभा

राजा रविवर्माचरित महाकाव्य

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

पाँचवाँ सर्ग

पारिवारिक पृष्ठभूमि

1. उत्तर केरल के अतिप्राचीन राजवंश है 'परप्पनाटु' जिसकी एक शाखा है बेपूर स्वरूप और उससे अलग हो जानेवाली दूसरी शाखा अभिहित हुई 'तट्टारी कोविलकम्' नाम से और स्वरूप और कोविलकम मलयालम शब्द हैं जिनके अर्थ हैं क्रमशः 'देश' और 'राजमहल'।

2. प्रसिद्ध थी तिरुवितांकूर में वेणाडु राजवंश की प्रथा गोद लेने की तट्टारी कोविलकम से और यों छोटे केरल वर्मा पहुँचे तिरुवितांकूर अपनी बहन और माता-पिता के साथ और उनको रहने के लिए किलिमानूर में निर्माण हुआ एक कोविलकम् का।

3. रहकर किलिमानूर में निर्मित केविलकम् में उन्होंने समर्पित किया अपना जीवन ही वेणाडु केलिए और मुख्य सदस्य थे उस परिवार के केरलवर्मा एवं रविवर्मा और वेणाडु केलिए उस परिवार के त्याग की स्मृति बनी ऐतिहासिक।

4. तिरुवितांकूर के मार्ताण्डवर्मा महाराज ने तिरुवनन्तपुरम से चालीस किलोमीटर उत्तरी दिशा में उपजाऊ विशाल भूमि सत्रह सौ तिरपन को दी थी लगान माफ़ करके और यह किलिमानूर गाँव था पेड़ों से भरा और प्रकृति सौन्दर्य से पूर्ण।

5. भरा था किलिमानूर गाँव विशाल खेत, झरना, नारियल के पेड़, सुपारी और अन्य पेड़ों से और निर्मित महल भी संपन्न था ग्रामीण सौन्दर्य और वास्तुविद्या के गुणों से और विस्तृत भूमि सहित राजमहल बन गया तिरुवितांकूर का हिस्सा।

6. साहित्य संगीत कथकली ज्योतिष तर्क व्याकरण जैसे विषयों में रुचि रखनेवाले थे किलिमानूर महल के लोग और वहाँ है इन विषयों को प्रतिपादित करनेवाले ग्रंथों से युक्त पुस्तकालय भी जिनका उपयोग करते हैं जन आज भी।

7. उपलब्ध है ऐतिहासिक दस्तावेज़ कि केरल के
आध्यात्मिक क्रांति के अग्रदूत युगपुरुष श्रीनारायण गुरु और
मलयालम के महाकवि कुमारन आशान पहुँचते थे किलिमानूर
को विलकम् में और भाग लेते थे चर्चा में वेदांत विषयक।

8. रविवर्मा के मामा थे किलिमानूर महल के बड़े राजा
एवं प्रसिद्ध चित्रकार राजराज वर्मा और रविवर्मा की
माता थी मकयिरं तिरुनाल उमांबा बाई जो थी कनिष्ठ पुत्री
अणिमंगलत्तु नंपूतिरि और रोहिणी तिरुनाल रानी की।

9. रोहिणी तिरुनाल रानी थी तत्पर चित्ररचना में और
उनकी कनिष्ठ पुत्री उमांबा बाई प्रवीण होने के साथ-साथ
चित्रकला में संगीत एवं काव्य रचना में थी दिलचस्प
और उमांबा बाई का परिणय हुआ नीलकंठन भट्टतिरिप्पाड़ से।

10. भट्टतिरिप्पाड़ थे पंडित वेद संस्कृत ज्योतिष आदि के
और उनकी पत्नी उमांबा बाई प्रवीण थी संगीत चित्रकला
और काव्य रचना में और दोनों हुए विख्यात भारत के
सांस्कृतिक इतिहास में राजा रविवर्मा के जनक-जननी होकर। (क्रमशः)

मान्य ग्राहकों से अनुरोध-

हिंदीतर प्रांत केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम से नियमित निकलनेवाली लोकप्रिय हिंदी मासिक पत्रिका (Reference Resource Journal) केरल ज्योति का ग्राहक/सदस्य बनिए।

सालाना सदस्यता शुल्क रु 400/- मात्र

पताः मंत्री, केरल हिंदी प्रचार सभा,
वषुतक्काडु, तिरुवनंतपुरम-695 014, केरला

A /c No. 57022786007 IFS Code : SBIN0070033
State Bank of India, Vazhuthacaud Branch

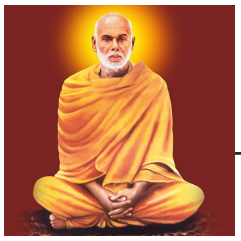

दर्शन माला

डॉ नेलसन डी

अध्यारोप दर्शन

(केरल के महान संत, ऋषि-कवि, समाज सुधारक श्रीनारायणगुरु द्वारा संस्कृत में रची गई वेदांत-संबंधी रचना है 'दर्शनमाला।' दस-दस श्लोकों के दस भाग इसमें समाहित हैं। मुनि नारायण प्रसाद की मलयालम-व्याख्या का हिंदी भाषांतरण डॉ नेलसन डी ने तैयार किया है। - संपादक)

2

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

हम सब मायावी के अद्भुत-जाल देखकर प्रसन्न होते हैं। किंतु प्रभु का मायाजाल रूपी प्रपंच का विलास देखकर कौन प्रसन्न होता है? दूसरा कोई नहीं, प्रभु ही है। एक बच्चा ज़मीन पर पड़ी मिट्टी से कई रूप बनाता है और तोड़ता है, फिर बनाकर प्रसन्न होता है यह किसी भी लक्ष्य के लिए नहीं, केवल अपने भीतर ओझल हुई वासनाओं को स्वयं प्रकट करके प्रसन्न होने के लिए। प्रभु का कार्य भी इसी प्रकार है। अनंत साध्यताएँ प्रभु में वासना के रूप में मौजूद हैं। जब वह स्वयं प्रकट होती हैं तब इस प्रपंच का रूप होता है। पुराने-पुराने रूपों को मिट जाना तथा नए-नए रूपों का निर्माण करना, दोनों की प्रक्रिया अनंत होती जा रही है। इसमें प्रभु को अनंत आनंद भी होता है। आत्माविष्कार का आनंद और आत्मस्वरूप दर्शन का आनंद। इस प्रभु को ही आत्मोपदेश शतक में, नारायण गुरु ज्ञान कहते हैं। गुरु के शब्दों में कहें तो ज्ञान अपने सहज स्वभाव और स्वरूप स्वयं जानने के लिए सबके रूप में खिलकर चमकता है और चढ़ता-बढ़ता जा रहा है। देखिए आत्मोपदेश शतक 33 - ज्ञान निजस्थिति सर्व की समझने/ धरा इत्यादि विभूति होकर स्वयं/ करवट बदल के चढ़ता गोला-/फिरता अंगार सम चकराता है।

3

प्रागुत्पत्तेरिदं स्वस्मिन् विलीनमथ वै स्वतः।
बीजादङ्कुरवत् स्वस्य शक्तिरेवाजऽसृजत्स्वयम्।।

उत्पत्तेः प्राक् - उत्पत्ति के पहले; इदम् - यह प्रपंच; स्वस्मिन् - अपने में (ईश्वर में अथवा आत्मा में); विलीनम् आसीत् - विलीन रहा था; अथ वै - बाद में; बीजात् अंकुरवत् - बीज से अंकुर की तरह; स्वतः - अपने से (ईश्वर से); स्वस्य शक्तिः - अपनी शक्ति; स्वयमेव - अपने आप का; असृजत् - सर्जन किया।

उत्पत्ति के पूर्व यह प्रपंच ईश्वर में ही विलीन हुआ था। बाद में बीज से अंकुर की तरह अपनी शक्ति ने अपने से ही सर्जन किया।

"अध्यारोप दर्शन" के प्रत्येक श्लोक में एक-एक उपमा है। ये सभी उपमाएँ अन्वेषक के अंतर्नेत्रों को ऐसा

अंतर्दर्शन देने में सहायक होती हैं कि ईश्वर से अथवा अकेले सत्य से अनंत वैजात्य सहित का यह विश्व कैसे प्रकट हुआ। वास्तव में इस प्रपंच का सर्जन एक महाश्चर्य और विवरणातीत है। अतः ऋषियों ने अनेक उपमाओं की सहायता से उसको एक सामान्य रूप देने का परिश्रम किया। उसके चित्रीकरण के कार्य में एक भी उपमा पूर्ण नहीं है। इसलिए गुरुजन अनेक उपमाओं को जोड़कर एक की कमी दूसरे से निपटाते और एक का दोष दूसरे से निपटाकर, एक का पूरक दूसरे से पूर्ण करके एक अंतर्दर्शन बनवाने का परिश्रम करते हैं।

पहले श्लोक में स्वीकृत उपमा स्वप्न की है। सब जानते हैं कि स्वप्न के दृश्यों की कोई वास्तविकता नहीं है। कोई भी यह निर्णय नहीं कर सकता कि कौन सा स्वप्न देखना चाहिए। कल दिखे स्वप्न का बाकी आज देख नहीं सकता यह निर्णय भी है। अबोध-दशा में मन से उभरकर मन में ही मिट जाने वाला एक है स्वप्न। वह सत्य है। लेकिन परमेश्वर का देखाज्र हुआ स्वप्न मानने की दशा में इस संसार में ऐसी एक असत्यता नहीं है। हम अपनी पंचेंद्रियों से उसका अनुभव कर सकते हैं। अब तक हम जो देख रहे हैं उसकी अनुक्रमणिका के रूप में आगे भी हम देख सकेंगे। अर्थात् केवल एक स्वप्न की तरह संसार नहीं मिट जाता। इसका मतलब है कि तत्त्व का निर्णय करके इस संसार को झूठा अभियोग मानने के बाद भी संसार दृष्टिगोचर होता जा रहा है।

विश्व विवेक दशा में विलीन हो सर्व-/ मस्वस्थ होके भी इंद्रीयगोचर होगा। तथा

विश्व नहीं परमार्थ में, समस्त विवेक-/ विध्वस्त होके बाद भी आभास होता पहला सा।

इसी अर्थ में नारायण गुरु ने ही अद्वैत-दीपिका 9-10 में कहा है। इसलिए केवल स्वप्न-रूपी उदाहरण से संसार की उत्पत्ति का कार्य नहीं समझेगा।

दूसरे श्लोक में स्वीकृत उदाहरण मायावी के मायाजाल का प्रदर्शन है। सब जानते हैं कि मायाजाल सत्य नहीं है। जादूगर केवल एक प्रतीति बनाकर जनता का मनोविनोद करता है। उदाहरणार्थ, जादूगर एक बच्चे को पकड़कर एक पेटी में रखकर पेटी बंद करता है। फिर जब वह पेटी खोल लेता है तब पेटी में बच्चा नहीं है। लेकिन बच्चा मंच पर आकर कहता है कि "मैं उसमें ही था"। अर्थात् जादूगर ने दर्शकों के मन में केवल एक प्रतीति की सृष्टि की। वह अगले क्षण में ही मिट जाती है। इस संसार की प्रतीति ऐसी नहीं। उसकी अत्यधिक वास्तविकता है।

पहले दिए गए दोनों उदाहरणों से लगता है कि विश्व की किसी भी तरह की सत्ता नहीं है। इस कमी को निपटाने के लिए नारायण गुरु ने यथार्थ सत्ता से नई एक सत्ता बनाने के लिए अन्य एक उदाहरण स्वीकार किया। बीज से अंकुर होने का उदाहरण। (क्रमशः)

पार्टिशन होरर रिमेंब्रेंस डे की याद में 'मेरी माँ कहाँ?'

प्रो (डॉ) मनु

मेरी माँ कहाँ? यह सवाल सिर्फ एक लड़की का सवाल नहीं है, बल्कि तकसीम ए हिन्द के वक़्त, बे वक़्त में कई लोगों के दिल ने यह तपता सवाल उठाया होगा। इसलिए यह उन्वान या सरनामा मेरे वतन के रिश्तेदार कहाँ है? के बड़े दायरे का माना दे देता है । आज़ादी की सब से बड़ी क़ीमत किसको चुकानी पड़ी? जब कभी अगस्त 15 सामने आता है, सब जश्न मनाने लगते हैं। वतन के चेहरे पे खुशियाँ फैलने लगती हैं, बच्चों में जोश पैदा किया जाता है। कागज़ों से बनाये छोटे छोटे झंडे, परचम हाथ में पकड़ के बच्चे, जुवा सब जश्न ए आज़ादी मनाने के लिए राहों, मुहल्लों, कस्बों व आम ख़ास जगहों पे उतर जाते हैं। जश्न ए आज़ादी जस्बा ए जूनून है। मगर आज़ादी के पचहत्तरवीं सालगिरह की शुरु में वर्तमान प्रधान मंत्री ने तकसीम ए हिन्द से पैदा हुए दर्द ए वतन व सोज़ ए वतन, आफ़त ए वतन व खानसदी ए वतन की याद दिलायी। सरकार की तरफ़ से पार्टिशन होरर रिमेंब्रेंस डे मनाने का ऐलान हुआ। यह क्यों हुआ, जश्न ए आजादी के पीछे, तक़सीम ए हिन्द की खानसदी की याद हमें करनी चाहिए। हमारे बच्चे, जुवा, बुज़ुर्ग, सब उस जानलेवा ख़तरे से बिलकुल अनजान है। हिजरत (Migration) में बहुत सारे लोग मारे गये । आज़ादी की क़ीमत समझने के लिए हमें तक़सीम ए हिन्द की याद करनी होगी। अगस्त चौदह की खानसदी ज़ेहन में ताज़ा हो जाये। पार्टिशन होरर रिमेंब्रेंस डे की सार्थकता या अहमियत कहाँ तक 'मेरी माँ कहाँ?' में वजूद है, मौजूद है, यही तलाशना इस शोध का मक़सद है।

कुंजी शब्द : तक़सीम, बँटवारा, सेक्युलरिस्म, हिजरत,किरदार, काफ़िर आदि

कृष्णा सोबती हिन्दी साहित्य की मशहूर दास्तान निगार व अदबी दस्तख़त हैं। वे अपने मासूम बयान और दिलकश तखलीकी सलाहियतों के लिए जानी जाती हैं। दास्तान के ताज़ा बहाव में जुबान की पकड़ उनकी अपनी खासियत है। 'मेरी माँ कहाँ' दास्तान की अहमियत अब विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के संदर्भ में उभर कर आयी है। क्यों? तक़सीम ए हिन्द की दास्तानें उन दिनों में बहुत कुछ लिखी गयी थीं। तकसीम ए हिन्द माउण्टबेटन योजना की बुनियाद पर रचित भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के आधार पर किया गया।

आज एक बार फिर तक़सीम ए हिन्द की दास्तानें सामने आने लगी हैं। तक़सीम के खाव्रैफनाक दिनों की याद करने का ऐलान भी हो चुका है। भीष्म साहनी का तमस, यशपाल का झूठा सच, मंजूर एहतेशाम का सूखाव्र बरगद, असगर वजाहत का जिस लाहौर नइ वेख्या, अज्ञेय का शरणदाता, आदि रचनाएँ तक़सीम की सरहदहीन खानसदियों के दर्दो का इज़हार कर देती हैं। कृष्ण सोबती का उपन्यास सिक्का बदल गया और दास्तान 'मेरी माँ कहाँ' भी दास्तान ए तक़सीम की मिसालें हैं। Partition Horror Remembrance Day के मामले में खानसदी को ताज़ा करना इस शोध पर्चे का ख़ास मकसद है।

बहुत बड़े खूबसूरत तरीके से दास्तान की शुरुआत हुई है। कई दिनों के बाद उसने चांद सितारों को देखाव्र है। एक दंगे फसाद की दास्ताँ की शुरुआत काव्यात्मक लफ्ज़ों से हुई है। इसमें हिन्द और पाक के बंटवारे के वक़्त के दर्द भरी खानसदी की रुसवाई का इज़हार है। दंगाई लोग ज़रूर ही दरिन्दे हैं। दंगे में किसी को भी कत्ल कर देने में कोई नहीं हिचकते हैं। इंसानियत का मर जाना दंगे फसाद में मामूली बात ही है और हैवानियत का ज़िंदा रहना भी

बिलकुल ही आम बात है। दास्तान के मरकज़ में एक मुसलमान किरदार है। यूनस खाज्ञ्न बलोच मुसलमान है। "बलोच पाकिस्तान के बलूचिस्तान और ईरान के सिस्तान में रहनेवाला एक मुसलमान ज़ात है।"[1] यूनस खाज्ञ्न बलोच जुबान का इस्तेमाल नहीं करता है, यह जुबान ईरानी ज़बान के खाज्ञ्नदान से तआलुक़्क़ रखता है। हिन्द और पाक में बंटवारे की वजह माहौल ख़ूब ख़राब हो गया है। सब कहीं लाशें ही लाशें दिखाज्ञ्ई देती हैं।

दस्तान निगार सोबती जी बलोच मुस्लमान के ख्यालों को साफ़ साफ़ इज़हार कर देती हैं कि "वह तो अपने नए वतन की आज़ादी के लिए लड़ रहा था। वतन के आगे कोई सवाल नहीं। अपना कोई ख़याल नहीं।"[2] इसमें राष्ट्रवाद का एहसास भरा हुआ है। दास्तान की शुरू में पाक नामक एक मज़हबी वतन की तामीर के लिए यूनस खाज्ञ्न खड़ा है। खुद का कोई ख़याल उसके दिल में बिलकुल नहीं है। दिमाग में सिर्फ नया वतन। इसके लिए उसकी कोशिशें सरहदहीन है। उसे अपने पर कोई मुहब्बत नहीं। तक़्सीम ए हिन्द की दशहत व हौलनाक मंज़रों का बयान ज़रूर ही यहाँ क़ाबिल ए जिक्र है। "लम्बी सड़क पर खड़े खड़े यूनस खाज्ञ् दूर दूर गाँव में आग की लपटें देख रहा है? चीखाज्ञें की आवाज़ उसके लिए नयी नहीं है। आग लगने पर चिल्लाने में कोई नयापन नहीं। उसने आग देखी है । आग में जलते बच्चे देखे हैं, औरतें और मर्द देखे हैं। रात रात भर जलकर सुबह ख़ाक हुए मुहल्लों में जले लोग देखे हैं।"[3] शायद इसके हज़ारों गुने धधकते हादसे बंटवारे में हुए होंगे। राष्ट्रवादी अपने मक़्सद से कभी पीछे नहीं हटेगा। "राष्ट्रवाद (Nationalism) का यह विश्वास है कि लोगों का एक समूह इतिहास, परंपरा, भाषा, जातीयता या जातिवाद और संस्कृति के आधार पर स्वयं को एकीकृत करता है। इन सीमाओं के कारण, वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उन्हें अपने स्वयं के निर्णयों के आधार पर अपना स्वयं का संप्रभु राजनीतिक समुदाय, 'राष्ट्र' स्थापित करने का अधिकार है।"[4] ये जुमले इसकी शिद्दद मिसाल है "आज़ादी बिना खून के नहीं मिलती, क्रांति बिना खून के नहीं आती" इस जुमले के आगे की गुफ्तगू खूब दर्दनाक व खतरा पैदा करनेवाले हैं "उसे तो लाहौर पहुँचना है। बिलकुल ठीक मौके पर । एक भी क़ाफ़िर ज़िंदा न रह पाये। इस हलकी हलकी सर्द रात में भी। 'काफ़िर' की बात सोच कर बलोच जवान की आँखें ख़ून मारने लगीं।"[5] अपने मज़हबी मक़्सद के लिए नए वतन बनाने के लिए कमर बंद एक युवा किरदार को सोबती जी ने इस दास्तान में उकेर दिया है। मगर दास्तान में नाटकीय बातें पिरो पिरोकर सोबती जी ने अपने मकसद को साबित करने की भरसक कोशिश की है। एक राष्ट्रवादी कैसे अचानक एक धर्म निरपेक्षवादी बन जाता है? एक कौमपरस्त कैसे एकदम सेक्युलर बन जाता है? कट्टरपंथी से वाम पंथी की तरह एक मुसलमान के दौरे का बयान आगे के हिस्सों में उन्होंने किया है। लाहौर के सफर में वह तेज़ रफ़्तार से ट्रक चलाता है तो अचानक सर ए राह पे एक घायल लड़की को देखता है। इस लडकी की सूरत उसे अपनी मरहूम बहन नूरन की याद दिलाती है। फ़ौरन यूनस खान के दिल में इंसानियत का फव्वारा फूट पड़ता है। लड़की की जान बचाने के लिए वह उसे लहौर के हस्पताल में दाखिल कराना चाहता है। शायद यूनस खान के सहधर्मी हाथों ने उसके भाई को मार डाला है और उसे बेहद घायल कर दिया है? अब यूनस खाज्ञ्न उसे बचाने की दावेदारी कर रहा है। उसके मज़बूत हाथों पे पड़ी लड़की उसकी बारह साल की खूबसूरत बहन नूरन का जिस्म सा लगता है। आखिर वह लाहौर पहुँच जाता है। किस अस्पताल में बच्ची को दाखिल करना है? उसके दिल में तनाव बढ़ जाता है। मेयो हस्तपाल या गंगाराम अस्पताल? बच्ची बेहोशी में बड़बड़ाती है। हस्पताल के अनुभवी आँखाज्ञें से देख कर डाक्टर भी काफ़िर लफ़्ज़ का इस्तेमाल करते हुए कह डालता है। "तुम से डरती है , यह क़ाफ़िर है , इसलिए"[6] आगे के जुमले भी खूब फिकरमंद है। "काफ़िर। ..यूनस खान के कान झनझना रहे हैं , काफ़िर .... काफ़िर .... क्यों इसे बचाये जाए ? काफ़िर कुछ नहीं मैं इसे अपने पास रखूँगा।"[7]

कुछ लम्हों पहले बेसबर चीख, जलते बच्चे, जलती औरत और जलते मर्द आदि में यूनस खान ने नयेपन का एहसास न पा लिया था। सब दुश्मन उसके लिए काफ़िर थे। काफिर की बात सोच कर उसकी आँखें खून मारने लगी थीं। वह सब बातें एकदम पलट कर वह काफिर को थपथपाने लगा है , जख्मों से भरी मरहूम बच्ची की लाश देखकर पहले उसे कोई लानत नहीं हुई थी, अब घायल बच्ची को खूब महरबानी आँखाज़्रें से वह देखने लगा है। लड़की की ज़ख्मों पे उसे गहरा दर्द लग रहा है। वतन की लड़ाई एक ओर है यूनस खाज़्रन के दिल की आवाज़ है चुप रहो। दिल बदलाव की ओर यहाँ इशारा हुआ है।

जब बच्ची ठीक हो जाती है मगर वह यूनस पर भरोसा नहीं रख पाती है। जब यूनस उससे प्यार से बातें करता है तब वह डरी डरी रह जाती है। क्योंकि वह मुसलमान है। उसे देखकर बच्ची सदर के मारे सिकुड़ जाती है। अपने घर की तरफ जाने के लिए यूनस उसे जबरदस्ती देता है। दास्ताँ की और एक मार्मिक घटना आखिरी हिस्सों में इज़्हार किया गया है। जैसे कि "ट्रक में यूनस खान के साथ बैठ कर बच्ची सोचती है, बलोच कहीं अकेले में जाकर उसे ज़रूर मार देनेवाला है। गोली से, छुरे से? बच्ची बलोच का हाथ पकड़ लेती है। खान मुझे मतन मारना। मारना मत।"[8] वह कह डालता है कि बच्ची मैं तुम्हारे सागा के माफ़िक है। बच्ची से वह कहता है तुम हमारी बच्ची बनकर रहेगी। दास्तान के आखिरी हिस्सों में सोबती ने बच्ची के मुँह से पाठकों को जो सुनाया , यह पूरी तरह यूनस के बिलकुल खिलाफ है। "नहीं .. लड़की खान की छाती पर मुट्ठियाँ मारने लगीं, तुम मुसलमान हो . तुम..... एकाएक लड़की नफ़रत से चीखने लगी, मेरी माँ कहाँ है, मेरे भाई कहाँ हैं ,मेरी बहिन कहाँ" [9] यह दास्ताँ बँटवारे के करबनाक माहौल को उकेरने में पूरी तरह क़ाबिल है। सोबती जी ने दो किरदारों के सहारे पूरी हौलनाक महौलों का इज़्हार किया है। ये दोनों किरदार नुमाइन्दा किरदार हैं। काफिरों को मारकर नए वतन बनाने के लिए तैयार यूनस खाज़्रन मज़हबी है, मगर एक बच्ची को देखकर अपनी बहिन नूरन की याद आकर उसे बचा लेता है। इससे वह सेकुलर बन गया है यह कभी मान नहीं कर पायेंगे। यूनस खाज़्रन अपने मज़हब पे भरोसा न रखनेवाले सब को काफिर ही मानते हैं। काफिरों को मारना और अपने नए वतन को अमल में लाना उसका मक़सद है। अपनी मरहूम बहन की याद से उसके दिल में इंसानियत जाग उठी है और उस घायल बच्ची को बचाने की कोशिश की है। यह बात भी सोच कर जोड़ सकते हैं कि नूरन की मौत नहीं हुई होती है तो यूनस खाज़्रन कभी भी बच्ची को नहीं बचायेगा। उसके दिल में इंसानियत की पैदायशी भी नहीं होगी । वह बच्ची को मार डालेगा क्योंकि बच्ची काफिर है। बच्ची को बचाने के लिए वह मेयो अस्पताल जाता है। गंगाराम अस्पताल में जाना वह नहीं चाहता है। यह उसकी मज़हबी दिल की ओर ही इशारा कर देता है। दास्ताँ पाठकों के सामने कई सवाल छोड़कर ख़त्म हो जाती है। आखिर बच्ची को क्या हुआ? क्या बच्ची धर्म परिवर्तन का शिकार हुआ? इस दास्तान में घर्मनिरपेक्षता या सेकुलरिस्म को सिर्फ एक मुखाज़्रैटा बना दिया है, जो भी हो बंटवारे के हौलनाक माहौल को उकारने में सोबती जी खूब कामयाब हुई हैं। दास्तान में बंटवारे के कई मार्मिक तस्वीरें दिखाज़्रयी देती हैं । यह दास्तान ज़रूर ही पार्टीशन हॉरर रिमेंब्रेंस डे मनाने की सख़्त ख्वाहिशों को मज़बूत कर देगी ।

(1) गूगल सर्च : बलोच लोग
(2) google search : कृष्णा सोबती : मेरी माँ कहाँ
(3) वही
(4) गूगल : विकिपीडिया : राष्ट्रवाद
(5) google search : कृष्णा सोबती : मेरी माँ कहाँ
(6) वही
(7) वही
(8) वही
(9) वही

विभागाध्यक्ष, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय
पेरिया, कासरगोड , अधिष्ठाता (भाषा एवं साहित्य)
कण्णूर विश्वविद्यालय, तावक्करा, कण्णुर

दलितों की मानसिक पीड़ा और सामाजिक उत्पीड़न की मार्मिकता : 'वेदना' कहानी के संदर्भ में

डॉ बिंदुकुमारी सी बी

हिंदी दलित कहानी की शुरुआत आठवें दशक में हुई है। दलित कहानियों में दलितों के प्रति सवर्णों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों, दलित स्त्रियों का शोषण, जातिभेद, परंपरित व्यवसाय से मुक्ति का चित्रण आदि देखने को मिलता है। दलित साहित्य वेदनामय असहाय द्वारा भोगे हुए यथार्थ का प्रामाणिक दस्तावेज है जिसका उद्देश्य इनसे मुक्ति है। यह एक ऐसी समाज व्यवस्था है,जो अत्यंत क्रूर और अमानवीय है। दलित साहित्य किसी जाति विशेष के प्रति विद्रोह न होकर दलितों द्वारा अपने 'स्व' की खाज्रेज, अस्तित्व की स्थापना और परंपरागत रूढिवादी अनुष्ठान और आचारों के विरुद्ध नफरत करना है। वास्तव में इनका उद्देश्य सामाजिक चेतना जागना और बराबरी का समाज स्थापित करना है।

दलितों का भोगा हुआ यथार्थ है - हिंदी दलित कहानी। मोहनदास नैमिषराय अस्सी के दशक के दलित उत्पीडन और अत्याचार की अनगिनत घटनाओं से पाठकों को रूबरू कराते प्रमुख हिंदी दलित लेखक है। वे दलित चेतना के सशक्त प्रतिनिधि है जिनकी लेखनी ने समाज में बदलाव की चेतना को प्रबल किया है। बचपन से ही जातीयता के नाम पर इन्हें अपमानित किया जाता था। दलित विमर्श के विलक्षण सिद्धांतकार और लेखक मोहनदास नैमिषराय पिछले तीन-चार दशकों से दलित समस्याओं पर लगातार लिखते और विचार करते आ रहे हैं। वर्तमान दलित साहित्यिक आंदोलन के सशक्त लेखक मोहनदास नैमिषराय भीमराव अंबेडकर के मार्ग का अनुसरण करते हुए दलित आंदोलन के लिए दृढता से संघर्ष किया जा रहा है। उनके द्वारा लिखित 'वेदना' कहानी सवर्णो द्वारा किए जा रहे अत्याचार का उत्तम उदाहरण है। दलितों की टूट चुकी मानसिक अवस्था को विषय बनाकर ही 'वेदना' नामक कहानी लिखी गई है।

आधुनिक युग के लोग शिक्षा की दुनिया में कदम रख चुके हैं फिर भी उनके मन में रूढ़ियों से छाया अंधकार अब तक दूर नहीं हो पाया है। यही नग्न सत्य 'वेदना' नामक लघुकथा में प्रकट किया गया है। शिक्षित और उच्च पदों पर आसीन लोगों के भीतर आज भी जाति,धर्म और वर्ण जैसी संकीर्ण सोच बनी हुई है इसका उत्तम उदाहरण है इस लघुकथा का सवर्ण अधिकारी आर.के.शर्मा। जाति व्यवस्था के कारण समाज में दिल टूटकर मरनेवाले व्यक्ति है इस कहानी का मुख्य पात्र हरभजन।

काम के दौरान दुर्घटना में मारे हुए पिता की सिपाही की नौकरी हरभजन को मिली थी। मेट्रिक पास होने के कारण उन्हें पदोन्नति मिलनी चाहिए थी। लेकिन दस साल बीत जाने के बाद भी वह वही सिपाही का काम कर रहा है। इससे हरभजन बहुत दुखी था। सवर्ण जाति के सर्वाधिकारी आर.के.शर्मा के षड्यंत्र के कारण ही उसे पदोन्नति न मिलती है। हमेशा उसे अधिकारियों की ओर से उपेक्षा और तिरस्कार का सामना करना पडता था। दलितों को आज भी चुनौतियों का सामना करना पडता है। इस कहानी के हरभजन नामक पात्र के माध्यम से यह समझा जा सकता है।

पिता की मृत्यु के बाद हरभजन के घर में तीन सदस्य थे- उनकी माँ हरदेयी, पत्नी सुमन और पुत्र आकाश।

समय बहुत बीत जाने पर भी जब उसका बेटा नहीं आया तो हरदेयी दरवाज़े पर टेक लगाकर राह निहारती खडी थी। बेटे की राह देख रही माँ के साथ पति की प्रतीक्षा करती पत्नी सुमन और पिता को न देख पाने के कारण मन लगाकर पढाई न कर पानेवाला बेटा भी एक दूसरे को देखते हुए बैठे थे। बस्ती में चारों ओर कोलाहल होने पर भी, तरह-तरह के डर और आशंकाओं के कारण तीनों मौन थे। बहुत समय के बाद लौटे हरभजन को पूरी तरह दर्द से भरे मन के साथ खडा देखकर हरदेयी और सुमन की आँखें भर आईं और आँसू बनकर बहने लगीं।

उसका दर्द उसके अतीत को छुआ। राज्य सेवा में सिपाही रहे पिता की मृत्यु के बाद मेट्रिक पास होने के कारण हरभजन को सिपाही की वही नौकरी मिल गई। साथ ही उसे पदोन्नति नहीं मिली। इसके बारे में हरभजन और दफ्तर में मौजूद लोगों के बीच रोज झगडा होना आम बात थी। दस साल पहले पदोन्नति मिलनी चाहिए थी। जब मुख्य कार्यालय में इसके बारे में पूछताछ की गई तो पता चला कि पदोन्नति का आदेश भेजा गया था। जब इसके बारे में अफसर से पूछा गया तो शर्मा ने उसकी पहचान को ही हिला कर रख दिया। उच्च अधिकारी शर्मा जी ऊँची जाति के होने के कारण हरभजन के पदोन्नति से जुडे सारे कागजात पास हो जाने पर भी उसे सिपाही के पद पर ही बने रहने का आदेश देता है। सवर्ण वर्ग का यह दृष्टिकोण उसके मन को गहराई तक आहत करता रहा। साथ ही शर्माजी ने घृणा से कहा कि हरभजन मेरे रहते तुम इस दफ्तर में क्लर्क नहीं बन पाओगे। अगर तुम चाहो तो चापरासी का काम करके अपना गुजारा कर लो।

पिता ने सिपाही की नौकरी की, उसके बाद हरभजन को भी वही नौकरी करनी पडी। अब यह सोचकर कि भविष्य में उसका बेटा भी यही काम करने के लिए मजबूर होगा, उसी पीडा में उसकी जिंदगी ही ठहर जाती है। उसका बेहोश शरीर अवर्ण वर्ग से आनेवाले हर एक व्यक्ति के अंत का प्रतीक है। आखिर में जब आर.के.शर्माजी आदेश लेकर आया तो बेटे ने वह आदेश पिता की अर्थी से बांध दिया और उसे चिता की ओर ले चला।

मोहनदास नैमिषराय रचित 'वेदना' नामक इस कहानी के माध्यम से हमारे सामने यह सच्चाई उजागर होती है कि समाज की वर्ण व्यवस्था के आगे पराजित हरभजन जैसे पात्र के जरिए यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्षों बाद भी सत्ता के केंद्र में बैठे सवर्ण वर्ग की मानसिकता में कोई बदलाव नहीं आया है।

दलित सवर्ण विरोधी नहीं है। हमें भी इंसानों की तरह जीने का अधिकार है। इस सत्य को आधार बनाकर अपने अधिकारों के लिए किया गया संघर्ष ही 'वेदना' कहानी में हरभजन नामक पात्र के माध्यम से लेखक ने दिखाया है। आधुनिक युग के मनुष्य ज्ञान के उच्चतम शिखरों तक पहुँच चुके हैं। फिर भी उनके उनके मन में बसे जाति नामक अंधकार को मिटा न सकने के के कारण एक जीवन तक नष्ट हो जानेवाली स्थिति को उजागर करनेवाली अत्यंत दर्दनाक कहानी है मोहनदास नैमिषराय की 'वेदना' कहानी।

संदर्भ ग्रंथ सूचियाँ

1 समकालीन हिंदी दलित कथा - डॉ.आर. शशिधरन
2 दलित साहित्य के बढते कदम- माता प्रसाद
3 दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र- शरणकुमार लिंगायत
4 दलित विमर्श- डा.धीरजभाई वणकर
5 दलित विमर्श और हिंदी साहित्य- दीपक कुमार पांडेय

असिस्टेंट प्रोफेसर
क्राइस्ट नगर कॉलेज , मारनल्लूर

श्रीरामचरितमानस में संवाद-चतुष्ठयी के निहितार्थ

महेंद्र प्रताप सिंह /डॉ उमेश कुमार

सारांश : संवाद-चतुष्टयी श्रीरामचरितमानस की प्रबंध-योजना की अनूठी व्यवस्था है। इसके अंतर्गत इस महाकाव्य में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की कथा को चार वक्ता-श्रोता स्तरों से वर्णित एवं व्याख्यायित किया गया है। श्रीरामचरितमानस में राम-कथा के इन चार वक्ता-श्रोता युग्मों में तुलसीदास-संत समाज, शिव-पार्वती, याज्ञवल्क्य-भारद्वाज और काकभुशुंडि-गरुड़ सम्मिलित हैं। इन्हीं वक्ता-श्रोताओं के बीच संवाद के माध्यम से श्रीरामचरितमानस की कथा आगे बढ़ती है। श्रीरामचरितमानस का अनुशीलन करते हुए सजग पाठकों और श्रोताओं के मन में सहज ही जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि एक ही कथा को, एक ही रचना में अनेक स्तरों से वर्णित किए जाने का क्या कारण है। इस विषय में चिंतन-मनन, अध्ययन और अन्वेषण करने पर ज्ञात होता है कि श्रीरामचरितमानस में संवाद-चतुष्टयी की यह व्यवस्था अनायास या अविचारित नहीं है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसका विधान बड़ी कुशलता और दूरदर्शिता से किया है, जो अनेक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होता है। इन उद्देश्यों में जनमानस में श्रीरामचरितमानस की स्वीकार्यता, उसके वाचन-श्रवण परंपरा की प्रतिष्ठा, भक्ति संबंधी तात्त्विक विवेचन, मुख्य एवं अवांतर कथाओं की प्रस्तुति और श्री राम-कथा की रोचकता में वृद्धि करना है। इस शोध-आलेख में विविध स्रोतों के अनुशीलन, नूतन अभिगम और नवीन दृष्टिकोण से यह विवेचन किया गया है कि संवाद-चतुष्टयी के प्रावधान का क्या औचित्य है और इससे गोस्वामी तुलसीदास जी किन-किन लक्ष्यों का संधान करने में सफल हुए हैं।

मुख्य शब्दः श्रीरामचरितमानस, संवाद, संवाद-चतुष्टयी, वक्ता-श्रोता, वाचन-श्रवण परंपरा

भूमिका : श्रीरामचरितमानस न केवल भाव, अपितु कला की दृष्टि से भी अद्भुत महाकाव्य है। इसके भावपक्ष में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की कथा के माध्यम से मानवीय आदर्शों, जैसे धर्म, सत्य, नीति, दया, करुणा, सदाचार और कर्तव्य-पालन आदि मूल्यों तथा भवसागर से मुक्ति के साधन के रूप में भक्ति की प्रतिष्ठा की गई है; वहीं कलापक्ष के अंतर्गत शिल्प के विविध तत्त्वों जैसे, कथा के सुव्यवस्थित सर्ग विभाजन या काण्ड, काव्य में विशिष्ट छंद विधान, आकर्षक अलंकार योजना, मनोरम संवाद या कथोपकथन, सार्थक प्रतीक विधान, माधुर्य-पूर्ण बिंब योजना और कौतूहलकारी नाटकीयता आदि समाविष्ट हैं। हिंदी साहित्य के लगभग सभी महाकाव्यों में शिल्प या कलापक्ष के इन सभी तत्त्वों का कमोबेश सफलतापूर्वक समावेश होता है, किन्तु श्रीरामचरितमानस के शिल्प में कुछ तत्त्व विशिष्ट और अनन्य हैं। श्री रामचरितमानस के पठन-पाठन अथवा वाचन-श्रवण के आरंभिक क्रम में ही यह वैशिष्ट्य दृष्टिगत हो जाता है।

श्रीरामचरितमानस में मूल राम-कथा के आरंभ के पहले एक सुदीर्घ पूर्व-पीठिका है। इस पूर्व-पीठिका में अनेक घटनाएँ, विचार, पात्र, संवाद और भाव वर्णित हैं, जो राम-कथा की भूमिका बनाते हैं। इसी क्रम में संवाद-चतुष्टयी का प्रारंभ होता है, जो महाकाव्य के अंत तक विकसित स्वरूप धारण करता चला जाता है। संवाद-चतुष्टयी संबंधी यह अंश मूल श्री राम-कथा से भिन्न है, किन्तु श्रीरामचरितमानस का अभिन्न अंग है। इसके बिना श्रीरामचरितमानस का स्वरूप और वैशिष्ट्य वैसा न होता जैसा वस्तुतः है।

श्रीरामचरितमानस का अवगाहन करते हुए यह प्रश्न सहज ही विद्यमान होता है कि तुलसीदास जी ने इस संवाद-चतुष्टयी का विधान क्यों किया? वे संवाद-चतुष्टयी के बिना अपरोक्ष रूप से भी श्रीराम-कथा कह सकते थे। फिर भी उन्होंने चार अवांतर प्रसंगों से श्रीराम-कथा को दीर्घ और विलंबित क्यों किया? गोस्वामी जी जैसा उच्च कोटि का विद्वान और निपुण कवि श्रीरामचरितमानस जैसे श्रेष्ठ महाकाव्य में अनावश्यक तत्त्वों को समाविष्ट करे, यह तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। तब वे कौन से कारण थे, जिन्होंने तुलसीदास जी को संवाद-चतुष्टयी की रचना के लिए प्रेरित किया? यह विचारणीय प्रश्न है।

संवाद-चतुष्टयी का अर्थ : श्रीरामचरितमानस में संवाद-चतुष्टयी से आशय इस महाकाव्य में उल्लिखित वक्ता-श्रोता के उन चार युग्मों से है, जो श्री राम-कथा का वाचन-श्रवण और तत्संबंधी तात्विक चिंतन करते हैं। तुलसीदास जी ने सुचिंतित एवं सुनियोजित ढंग से इन चार वक्ता-श्रोता युग्मों का प्रावधान किया है। इन चार युग्मों में निम्न वक्ता-श्रोता वर्ग सम्मिलित हैं- 1. स्वयं तुलसीदास जी और शेष संत-समाज 2. मुनि याज्ञवल्क्य जी और भारद्वाज जी 3. भगवान शंकर और पार्वती जी; एवं 4.काकभुशुंडि जी और गरुड़ जी।

श्रीरामचरितमानस का आरंभ किसी प्राचीन महाकाव्य की भाँति ही मंगलाचरण से होता है। इसके विस्तृत स्वरूप में माँ सरस्वती, गणेश, शंकर, पार्वती, राम, सीता, हनुमान, गुरु , संत-गण, ब्रह्मा, वाल्मीकि, वेद, जगत, देव, पक्षी, दानव, मानव, प्रेत, गंधर्व, किन्नर, नाग, दशरथ, कौशल्या, जनक, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, सुग्रीव, जांबवंत, विभीषण, अंगद, नारद, शुकदेव, सनकादि, अवधपुरी, सरयू नदी आदि की सुदीर्घ सूची के साथ-साथ श्रीराम के नाम की वंदना की गई है। विशेष बात यह है कि इन सभी समादृत विभूतियों के साथ गोस्वामी जी ने विनम्रतापूर्वक असंतों और खल-चरिखानें की भी वंदना की है। इसी क्रम में तुलसीदास जी ने विनयपूर्वक अपनी तथाकथित क्षुद्रता और दीनता का उल्लेख भी किया है। इसके साथ ही श्रीराम के चरित्र और श्रीराम-कथा का माहात्म्य स्थापित किया गया है। तत्पश्चात श्रीरामचरितमानस के स्वरूप और महिमा का वर्णन है।

इन वैविध्यपूर्ण स्तुतियों और प्रार्थनाओं के सुदीर्घ क्रम के पश्चात किसी भी सामान्य पाठक या श्रोता की अपेक्षा श्रीराम-जन्म के प्रसंग के साथ राम-कथा के प्रारंभ की हो सकती है, किन्तु श्रीरामचरितमानस के रचनाकार की योजना कुछ और है। मंगलाचरण के विस्तार में श्रीरामचरितमानस के स्वरू प का वर्णन करते हुए ही तुलसीदास जी संवाद-चतुष्टयी का उल्लेख करते हैं- "संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा।।/ सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा।।/ तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा।।/ते श्रोता बकता समसीला। सवँदरसी जानहिं हरिलीला।।"[1]

तुलसीदास जी भूमिका में न केवल इन वक्ता-श्रोता युग्मों का उल्लेख करते हैं, अपितु मूल श्रीराम-कथा आरंभ होने के पूर्व ही महाकाव्य में क्रमबद्ध रूप से संवाद-चतुष्टयी विद्यमान भी हो जाती है। ये चारों संवाद युग्म या वक्ता-श्रोता युग्म श्री रामचरितमानस में क्रमशः प्रकट होते हैं। प्रथमतः, गोस्वामी तुलसीदास जी इस श्रीरामचरितमानस महाकाव्य के रचनाकार हैं। इसके प्रथम वक्ता वही हैं और वे आरंभ से ही श्रीराम भक्तों और समकालीन संत-समाज को संबोधित करते चलते हैं- "कहउँ कथा सोई सुखद सुहाई।/ सादर सुनहु सुजन मन लाई।।"[2]

किन्तु गोस्वामी जी सीधे श्रीराम-कथा का आरंभ नहीं करते। पहले वे श्रीराम-कथा के लिए जिज्ञासु ऋषि भारद्वाज का संदर्भ देते हैं, जिन्होंने याज्ञवल्क्य मुनि से श्री राम की कथा सुनाने का आग्रह किया- "जागबलिक मुनि परम बिबेकी। भरद्वाज राखे पद टेकी।"[3] "रामु कवन प्रभु पूछउँ तोही। कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोही।।"[4]

याज्ञवल्क्य मुनि और भारद्वाज का यह वार्तालाप संवाद-चतुष्टयी का द्वितीय वक्ता-श्रोता युग्म है। जब याज्ञवल्क्य जी भारद्वाज ऋषि के अनुरोध पर राम-कथा कहते हैं, तो वे भी सीधे श्रीराम-कथा नहीं कहते। इसके बजाय वे पहले भगवान शिव और उनकी अर्धांगिनी पार्वती जी का उल्लेख करते हैं। यहाँ महाकाव्य में पार्वती जी के श्रीराम के ईश्वरत्व के विषय में संदेह और उससे संबंधित प्रसंग का विस्तार से वर्णन है। यहाँ पार्वती जी के पूर्वजन्म का उल्लेख है, जिसमें उनके द्वारा दक्ष-पुत्री सती के रूप में श्रीराम के ब्रह्म स्वरूप पर संदेह करना, फिर राजा दक्ष के यज्ञ में उनके देह-त्याग तथा पुनर्जन्म के पश्चात शिव-पार्वती विवाह का बहुत विशद वर्णन करना आदि किया गया है। दोनों ही जन्मों में पार्वती जी को श्री राम के ब्रह्मत्व पर संदेह है, जिसके निवारण हेतु वे शिवजी से श्रीराम की कथा सुनाने की प्रार्थना करती हैं- "तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना। कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना।।"[5]

संशयग्रस्त पार्वती और निवारक शंकर जी का

श्रोता-वक्ता युग्म इस संवाद चतुष्टयी का तीसरा स्तर है, जिसमें शंकर जी संसय बिहग उड़ावनहारी श्रीराम-कथा पार्वती जी को सुनाते हैं। राम-कथा का आरंभ करने से पूर्व और कथा पूर्ण होने के पश्चात शंकर जी कहते हैं कि जो कथा वे पार्वती को सुना रहे हैं, वह काकभुशुंडि ने गरुड़ को सुनाई थी- "सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।/ कहा भुसुंडि बखाज़नि सुना बिहग नायक गरुड़।।"[6]

"उमा कहिउँ सब कथा सुहाई। जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई।।"[7] और कथा के अंत में पार्वती जी ने आशंका व्यक्त की, कि काकभुशुंडि जी कौआ होते हुए भी कैसे श्रीराम-कथा के सौभाग्य को प्राप्त कर गए और गरुड़ जी तो स्वयं महाज्ञानी हैं, फिर उन्होंने क्यों एक कौए (काकभुशुंडि जी) से श्री राम-कथा सुनी तथा दोनों के मध्य यह संवाद कैसे हुआ-"कहहु कवन बिधि भा संबादा। दोउ हरिभगत काग उरगादा।"[8]

पार्वती की जिज्ञासाओं के प्रत्युत्तर में शिव जी काकभुशुंडि और गरुड़ के बीच हुए संवाद का वर्णन करते हैं। यही संवाद-चतुष्टयी का चतुर्थ वक्ता-श्रोता स्तर है।

इन चार संवादों के द्वारा तुलसीदास जी श्री रामचरितमानस में योजनाबद्ध ढंग से श्रीराम की कथा और भक्तिकी मीमांसा प्रस्तुत करते हैं।

संवाद-चतुष्टयी का स्वरूप : तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस का सांगरूपक मानसरोवर के साथ बाँधा है। इसमें जहाँ श्रीराम-सीता के यश-वर्णन को सरोवर के सार अर्थात् जल की संज्ञा दी गई है, वहीं सात काण्डों को सरोवर की सात सीढ़ियाँ; दोहा, सोरठा, चौपाई आदि छंदों को कमल-कमलिनी; काव्य के नौ रसों को जलचर जीव तथा ज्ञान, वैराग्य और विचार आदि को इस मानसरोवर के हंस बताया गया है। इसी क्रम में गोस्वामी जी इस संवाद-चतुष्टयी का रूपक श्रीरामचरितमानस रूपी मानसरोवर के चार घाटों के साथ बाँधते हैं। यानी वे कहते हैं कि यह संवाद चतुष्टयी श्रीरामचरितमानस रूपी मानसरोवर के चार घाट हैं- "सुठि सुंदर संबाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि।/तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि।।"[9]

अर्थात मैंने (तुलसीदास जी ने) अपनी बुद्धिमत्ता से विचार करके इस काव्य में बहुत मधुर चार संवाद रचे हैं, जो कि इस पावन और सुंदर सरोवर के चार मनोहारी घाट हैं।

कुछ विद्वानों का विचार है कि ये चारों संवाद भारतीय दर्शन में वर्णित मुक्ति के चार साधनों कर्म, ज्ञान भक्ति और उपासना के घाट हैं। श्री रामचरितमानस में याज्ञवल्क्य-भारद्वाज संवाद को दक्षिणी घाट और कर्मघाट, शिव-पार्वती संवाद को पश्चिमी घाट और ज्ञानघाट, काकभुशुंडि-गरुड़ संवाद को उत्तरी घाट और भक्तिघाट तथा तुलसी-संत समाज संवाद को पूर्वी घाट और उपासना या शरणागति घाट का द्योतक बताया है। इन विद्वानों के अनुसार दर्शन के इन पक्षों के सामंजस्य हेतु इन घाटों की रचना की गई। यद्यपि कुछ अन्य अध्येताओं के अनुसार यह उद्भावना भ्रामक और अनुचित है। डॉ. चंद्रबली पांडेय के मतानुसार- "हमारी दृष्टि में यह धारणा ठीक नहीं। 'मानस' में राम की भक्तिजैसी शिव में है, वैसी क्या किसी में होगी। भक्ति के प्रतीक शिव हैं, अतः श्रीरामचरितमानस में ज्ञान, कर्म और उपासना आदि के कांड देखना ठीक नहीं। याज्ञवल्क्य भी तत्त्वदर्शी ज्ञानी हैं, कुछ कर्मकांडी नहीं... तुलसीदास ने भक्तिही को इष्ट भी ठहराया है।"[10] किंतु मतभेदों के पश्चात भी ये संवाद-घाट इन आध्यात्मिक साधनों के साथ असंपृक्त रूप से देखे जाते रहे हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र लिखते हैं- "काकभुशुण्डि का प्रतिपादन उपासनापरक, शिव का ज्ञानपरक और याज्ञवल्क्य का कर्मकाण्डपरक है, स्वयं तुलसीदास जी की स्वतंत्र उक्ति शीलपरक माननी चाहिए।"[11]

कतिपय विद्वानों ने विविध वक्ता-श्रोता युग्मों के संवादों की प्रकृति और तात्विक विषय-वस्तु में विभाजन करने की चेष्टा की है। आलोचक श्रीधर सिंह का विचार है कि भारद्वाज ऋषि की जिज्ञासा सीधी और सरल थी, जिसके समाधान में सनातन धर्म के आचरण और कर्मकांड की प्रधानता है। इसीलिए यह कर्मघाट है। जबकि पार्वती जी का संदेह गूढ़ और गहन था, जिसके निवारण की शैली अधिक तर्कपूर्ण है। इसमें दांपत्य का भाव भी है। यह ज्ञानघाट का द्योतक है। वहीं, याज्ञवल्क्य जी के यहाँ व्यक्तिगत अनुभूति का विवरण अधिक है। अतः यह भक्तिघाट

है। उनके अनुसार तुलसी के वक्तव्य में उनकी दीनता का प्राधान्य है। अतः इसे वे दैन्यकांड या उपासना कांड कहते हैं।"[12]

संवाद-चतुष्टयी का औचित्य : श्रीरामचरितमानस में इस चतुर्मुखी संवाद व्यवस्था के अनेक निहितार्थ हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी इस संवाद-योजना से अनेक लक्ष्यों की पूर्ति करते हैं। सर्वप्रथम, एकाग्रता से विचार करने पर ज्ञात होता है कि तुलसीदास जी इसके माध्यम से जनकल्याण के हेतु श्रीराम-कथा और विशेषकर श्रीरामचरितमानस को जनमानस में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। श्रीरामचरितमानस सनातन धर्म का सारग्रंथ भी है। इसमें सनातन धर्म के मूलग्रंथों, जैसे वेदों, उपनिषदों, पुराणों, आगमों और रामायण आदि के अंतर्भूत मूल एवं गूढ़ तत्त्वों को राम-कथा के माध्यम से समाहित किया गया है। इसका संकेत करते हुए ग्रंथ के आरंभिक श्लोकों में ही इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं- "नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्/रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।/स्वांतःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-/भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति।।"[13]

सनातन धर्म के अनेक अनुयायियों के लिए आज श्रीरामचरितमानस का वाचन, श्रवण और उसमें वर्णित आदर्शों के अनुरूप जीवन-यापन उनकी धर्म-परायणता का आधार है। श्रीरामचरितमानस में मुक्तिके मार्ग के रूप में भक्ति की प्रतिष्ठा की गई है। श्रीराम के नाम का स्मरण और श्रीराम-कथा का वाचन-श्रवण भक्तिमार्ग के प्रमुख साधन हैं। इन्हीं में जगत और माया के बंधन काटने और मुक्ति पाने का मार्ग निहित है। तुलसी के लिए भी श्रीरामचरितमानस उनके इष्ट राम की भक्ति का आधार है और वे चाहते हैं कि जगत के सभी जीव राम-भक्तिके माध्यम से मुक्ति प्राप्त करें। भले ही उपर्युक्त श्लोक में गोस्वामी जी श्रीरामचरितमानस की रचना का उद्देश्य विनीत भाव से स्वांतः सुखाय बताते हैं, किंतु उन्होंने केवल अपने लिए ही इसकी रचना नहीं की, अपितु सभी राम-भक्तों और आम जनों के लिए भी वे जनभाषा में श्रीराम की कथा सुलभ कराना चाहते थे। संपूर्ण महाकाव्य में वे बार-बार संतों और आम जनों को संबोधित करते हुए श्रीराम-कथा के सुफल गिनाते हैं तथा श्रीरामचरितमानस के वाचन-श्रवण के लिए प्रेरित करते हैं- "कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई।।[14]

बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिं काम मद दंभा।।"[15]

"रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा।।"[16]

डॉ. चंद्रबली पांडेय भी यही विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं- "तुलसी चाहते हैं कि आप भी इस कथा को सुनें। तुलसीदास की बात इस कथा से बन गई, तो आपकी भी इससे अवश्य बन जाएगी।"[17] श्रीरामचरितमानस राम-भक्तों के लिए इहलोक और परलोक, दोनों को साधने वाला है। यह भूलोक में धर्मनिष्ठ जीवन का मार्गदर्शक भी है और भवसागर के पार लगाने का साधन भी है। अपने जनमानस में श्रीरामचरितमानस की स्थापना के उद्देश्य की पूर्ति के लिए तुलसी विविध युक्तियों का संधान करते हैं। संवाद-चतुष्टयी भी उनमें से एक है।

वाचन-श्रवण परंपरा की प्रतिष्ठा : जनमानस को श्रीरामचरितमानस के पठन-पाठन और श्रवण-वाचन के माध्यम से भक्तिमार्ग की ओर प्रवृत्त करने के लिए तुलसी के लिए उसके महत्त्व की प्रतिष्ठा करना आवश्यक था। तुलसी संवाद-चतुष्टयी के द्वारा भी यह लक्ष्य साधना चाहते थे। इस वाचन-श्रवण परंपरा की जड़ें वे पौराणिक काल से स्थापित करते हैं। संवाद-चतुष्टयी से स्पष्ट होता है कि श्रीरामचरितमानस का वाचन-श्रवण केवल आधुनिक काल में तुलसी और संत-समाज के माध्यम से नहीं हो रहा है, अपितु अनादि काल से शिव-पार्वती जी, काकभुशुंडि-गरुड़ जी और याज्ञवल्क्य-भारद्वाज जी इसके वक्ता-श्रोता रहे हैं। इतना ही नहीं श्री रामचरितमानस में वर्णन है कि सती-दाह के पूर्व भी शंकर जी जब अगस्त्य मुनि के आश्रम में जाते हैं, तब अगस्त्य मुनि उन्हें श्रीराम-कथा सुनाते हैं- "एक बार त्रेता जुग माहीं। संभु गए कुंभज रिषि पाहीं।।"[18]

"रामकथा मुनिबर्ज बखानी। सुनी महेस परम सुख मानी।।"[19]

आशय यह है कि जिस श्रीरामचरितमानस का अनादि काल से अनगिनत ऋषि-मुनियों और साधु-संतों

द्वारा गायन-श्रवण किया जा रहा है, उसका पारायण प्रत्येक सनातनी और रामभक्तके लिए अनिवार्य ही है।

ईश्वरीय रचना का माहात्म्य : तुलसीदास जी ने शंकर जी और पार्वती जी को संवाद-चतुष्टयी के वक्ता-श्रोता वर्ग में ही प्रतिष्ठित नहीं किया, वरन उन्होंने शंकर जी को श्रीरामचरितमानस की रचना का श्रेय प्रदान किया है। वे लिखते हैं कि श्रीरामचरितमानस की रचना और नामकरण साक्षात भगवान शंकर ने किया और उचित समय आने पर यह कथा पार्वती जी को सुनाई- "रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन।।"[20] "रचि महेस निज मानस राखाञ्र। पाइ सुसमउ सिवा सन भाखाञ्र।।/तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर।।"[21]

तात्पर्य यह है कि जिस रचना के रचयिता साक्षात भगवान हों, उससे अलौकिक, पावन और कल्याणकारी ग्रंथ दूसरा कौन हो सकता है। डॉ. चंद्रबली पांडेय कहते हैं- "शिवोक्त होने के कारण मानस की गणना आगम ग्रंथों में हो गई... शिव पार्वती के कारण जहाँ मानस आगम ग्रंथ है, वहीं याज्ञवल्क्य, भारद्वाज और काकभुशुंडि के कारण पुराण भी है। तुलसी के कारण वह काव्यग्रंथ है ही...।"[22] जगत में ऐसा कौन शिवभक्तहोगा, जो साक्षात महादेव द्वारा रचित ग्रंथ का माहात्म्य अस्वीकार्य कर सकता है।

विविध वर्गों व स्थलों तक व्याप्ति : संवाद-चतुष्टयी के द्वारा तुलसी श्रीरामचरितमानस की व्याप्ति सृष्टि के विविध वर्गों तक सिद्ध करना चाहते हैं। उदयभानु सिंह अपनी पुस्तक 'तुलसी-काव्य-मीमांसा' में लिखते हैं- "तुलसी ने 'रामचरितमानस' की संपूर्ण कथा तीन परंपरा-प्रसिद्ध वक्ता-श्रोताओं के माध्यम से प्रस्तुत की है- शिव-पार्वती, याज्ञवल्क्य-भारद्वाज और काकभुशुंडि-गरुड़। वे क्रमशः देव, मानव और तिर्यक वर्ग के प्राणी हैं।"[23]

श्रीधर सिंह इन संवादों को दो वर्गों में विभाजित करते हैं, देव और मानव वर्ग। शिव, पार्वती, काकभुशुंडि और गरुड़ देव वर्ग में हैं, जबकि याज्ञवल्क्य, भारद्वाज, तुलसी और संतगण मानव वर्ग में हैं। श्रीधर सिंह कथा के स्थलों का भी उल्लेख करते हैं। देववर्ग में कथा का वाचन-श्रवण कैलाश पर्वत और सुमेर पर्वत पर होता है, जबकि मानव वर्ग की कथा प्रयागराज और अन्य पार्थिव स्थलों पर होती है। यह पात्र तथा स्थल विस्तार भी व्यंजनापूर्ण है। श्रीधर सिंह लिखते हैं- "स्थान एवं पात्र के आधार पर जो प्रभाव पड़ता है, वह दो प्रकार का है। एक तो यह है कि जिस तथ्य को याज्ञवल्क्य से लेकर शिव तक कह रहे हैं और जो प्रयाग से लेकर कैलासादि तक अनुकथित हो रहा है, वह निर्विवाद रूप से मान्य एवं ग्राह्य है। दूसरा यह कि जिस तथ्य को लेकर तर्काधार पर पार्वती और भरद्वाज जैसे लोगों को भी संदेह हो सकता है, उस पर हम जैसे माया-शवलित लोगों का क्या कहना?"[24]

लोक स्वीकार्यता एवं महत्ता की प्रतिष्ठा : लोक में रामचरितमानस की स्वीकार्यता और महत्ता स्थापित करने में तुलसीदास जी को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। इसमें संवाद-चतुष्टयी का प्रभावी योगदान है। जिस ग्रंथ को स्वयं भगवान शिव ने रचा और गाया है; जिसका वाचन मुनिराज याज्ञवल्क्य और ब्रह्मज्ञानी काकभुशुंडि ने किया है और जिसे जगज्जननी पार्वती, ऋषि-श्रेष्ठ भारद्वाज और भगवान विष्णु के वाहन ने एकाग्र-चित्त होकर सुना है, उस मंगलकारी श्रीरामचरितमानस के वाचन-श्रवण का इच्छुक कौन नहीं होगा।

डॉ. राजपति दीक्षित लिखते हैं- "तुलसीदास की लोकनिपुण बुद्धि ने अपनी मानसी कथा में अन्य तीनों संवादों को स्थान देकर भक्तिपरंपरा के महान आचार्य और अनन्य भक्तों की स्वीकृति की मुहर लगाकर अपने अभीष्ट उद्देश्य को अकाट्य और सर्वमान्य बना दिया है।"[25] कहा जा सकता है कि गोस्वामी जी ने साक्षात भगवान शिव, माता पार्वती और याज्ञवल्क्य, भारद्वाज, काकभुशुंडि एवं गरुड़ जी जैसे ऋषियों तथा मनीषियों से श्रीरामचरितमानस का पारायण तथा स्तुति करवाकर इसे जनमानस के लिए स्वीकार्य एवं स्तुत्य बना दिया।

अन्य विविध लक्ष्यों का संधान : संवाद-चतुष्टयी अन्य अनेक लक्ष्यों की पूर्ति में भी सहायक सिद्ध हुई है। श्रीधर सिंह ने संवाद-चतुष्टयी के पाँच उद्देश्य गिनवाए हैं- "1. निश्चयात्मक प्रतीति एवं कथन को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए/2. निष्कर्ष-कथन एवं कथा-प्रवाह के अंतर्गत

राम की लीला से भ्रमित पाठक को सचेत करने के लिए 3. कथा को एकरूपता तथा नीरसता को बचाने के लिए 4. कथा के अंतर्गत नए मोड़ लाने एवं नए प्रसंगों के आरंभ के लिए 5. कतिपय कार्यों का कारण देने के लिए।"[26]

डॉ. राजपति दीक्षित इसे "मुख्य राम-कथा तथा उसका सारभूत अंग बनकर आने वाली गौण कथाओं को मूर्तिमान करने का साधन मानते हैं। वे इनमें पौराणिक और काव्यमयी संवाद-योजना तथा वैष्णव-शैव-तांत्रिक आदि सम्प्रदायों का समन्वय साधने की चेष्टा देखते हैं।" [27]

संवाद-चतुष्टयी ने श्रीरामचरितमानस की सुदीर्घ राम-कथा को अधिक मनोरम और आकर्षक बना दिया है। उदयभानु सिंह कहते हैं- "इस त्रिगुण संवाद की योजना कथा को आप्त, कौतूहलवर्धक और रोचक बनाने के लिए की गई है। संवाद के भीतर संवाद का विधान कलात्मक ढंग से किया गया है।"[28]

संवाद-चतुष्टयी तुलसीदास जी के अद्‌भुत काव्य-कौशल का प्रमाण है। इसने अन्य अनेक लक्ष्यों के संधान के साथ-साथ श्रीरामचरितमानस को मौलिकता प्रदान करने में भी भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष : श्रीरामचरितमानस की भूमिका में संवाद-चतुष्टयी की रचना अनायास या निराभिप्रेत नहीं है। इसका संयोजन गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा अनेक मनोरथों की सिद्धि के उद्देश्य से किया गया है। यह जनमानस में सनातन धर्म के एक महान ग्रंथ के रूप में श्रीरामचरितमानस के प्रति स्वीकार्यता तथा आस्था की स्थापना, श्रीरामचरितमानस की सुदीर्घ वाचन-श्रवण परंपरा की प्रतिष्ठा, मुक्तिमार्ग के रूप में भक्ति के तात्विक चिंतन, जिज्ञासाओं और शंकाओं के निवारण, मुख्य व अवांतर कथाओं के संयोजन और नवीन प्रसंगों एवं घटना-क्रम में परिवर्तन आदि लक्ष्यों की पूर्ति में उपयोगी साबित होती है। इसके अतिरिक्तयह संवाद-चतुष्टयी श्रीरामचरितमानस की सुदीर्घ एवं मनोरम श्रीराम-कथा के रसास्वादन और परमानंद की भी वृद्धि में भी सहायक सिद्ध हुई है। सभी उद्देश्यों की पूर्ति के बावजूद इसका विधान कहीं से भी आरोपित प्रतीत नहीं होता, अपितु संपूर्ण महाकाव्य का सहज अंग परिलक्षित होता है।

संदर्भ-सूची

1. तुलसीदास. (वि. सं. 2080). श्रीरामचरितमानस, बालकांड, चौपाई-3-6, दोहा-30(क). गोरखपुर, गीताप्रेस.
2. वही 3. वही 4. वही 5. वही 6. वही 7. वही
8. वही 9. वही
10. पांडेय, चंद्रबली. (वि. सं. 2014). तुलसीदास. पृष्ठ-92. काशी, नागरी प्रचारिणी सभा.
11. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद. (1965). गोसाईं तुलसीदास. पृष्ठ-81. वाराणसी, वाणी वितान प्रकाशन.
12. सिंह, श्रीधर. (1959). मानस का कथाशिल्प. पृष्ठ-151. वाराणसी, आनंद पुस्तक भवन.
13. तुलसीदास. (वि. सं. 2080). श्रीरामचरितमानस, बालकांड, श्लोक-7. गोरखपुर, गीताप्रेस.
14. वही 15. वही 16. वही
17. पांडेय, चंद्रबली. (वि. सं. 2014). तुलसीदास. पृष्ठ-87. काशी, नागरी प्रचारिणी सभा.
18. तुलसीदास. (वि. सं. 2080). श्रीरामचरितमानस, बालकांड, चौपाई-1, दोहा-48. गोरखपुर, गीताप्रेस.
19. वही 20. वही 21. वही
22. पांडेय, चंद्रबली. (वि. सं. 2014). तुलसीदास. पृष्ठ-87. काशी, नागरी प्रचारिणी सभा.
23. सिंह, उदयभानु. (2008). तुलसी-काव्य-मीमांसा. पृष्ठ-330. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन.
24. सिंह, श्रीधर. (1959). मानस का कथाशिल्प. पृष्ठ-150. वाराणसी, आनंद पुस्तक भवन.
25. दीक्षित, डॉ. राजपति. (वि. सं. 2032). तुलसी और उनका युग. पृष्ठ-313. वाराणसी, ज्ञानमंडल लिमिटेड.
26. सिंह, श्रीधर. (1959). मानस का कथाशिल्प. पृष्ठ-151-152. वाराणसी, आनंद पुस्तक भवन.
27. दीक्षित, डॉ. राजपति. (वि. सं. 2032). तुलसी और उनका युग. पृष्ठ-312-313. वाराणसी, ज्ञानमंडल लिमिटेड.
28. सिंह, उद्भयभानु. (2008). तुलसी-काव्य-मीमांसा. पृष्ठ-330. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन.

शोध निर्देशक : **डॉ उमेश कुमार**
सह आचार्य, जनसंचार एवं नवीन मीडिया विभाग,
जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय

शोधार्थी , भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी
ईमेल : mpsingh_media@yahoo.co.in
मोबाइल नंबर - 9582749900

'चेम्मीन' : एक साहित्यिक विश्लेषण

शांती ऐ एस

शोधसार : केरल के समुद्र तटीय मछुआ समुदाय के जीवन पर मिथक का गहरा प्रभाव पड़ा है। चेम्मीन उपन्यास में एक मुस्लिम मछली व्यापारी के बेटे परीकुट्टी और एक गरीब हिंदू मछुआरे की बेटी करुत्तम्मा के बीच प्रेम को चित्रित किया गया है। उनका प्यार पूर्णता की चरम स्थिति को नहीं छू सका क्योंकि लड़की की शादी पलनी नाम के किसी अन्य व्यक्तिसे हो जाती है। केरल के तटीय क्षेत्र में प्रचलित मिथक के अनुसार, करुत्तम्मा को पलनी के प्रति वफादार रहना चाहिए। लेकिन प्यार उसे अपने प्रेमी की बाँहों में ले जाता है। कटलम्मा उससे बदला लेती है और उसके पति को निगल लेती है।

बीज शब्दः कडलम्मा,मुतलाळी,मूप्पन

आमुख : मिथक लोककथाओं की एक शैली है जिसमें कथाएँ या कहानियाँ होती हैं जो एक समाज में एक मौलिक भूमिका निभाती हैं। मिथकों में मुख्य पात्र आमतौर पर देवता, देव-तुल्य या अलौकिक मनुष्य होते हैं । उल्लिखित उपन्यास का विषय दक्षिण भारत में केरल के तट पर मछली पकड़ने वाले समुदायों के बीच प्रचलित एक मिथक से जुड़ा है। मिथक सतीत्व के बारे में है। यदि विवाहित मछुआरिन अपने पति के समुद्र में होने पर व्यभिचारिणी हो जाती है, तो समुद्र देवी (कटलम्मा का शाब्दिक अर्थ है माँ समुद्र) उसे निगल जाती है। इसी मिथक को बनाए रखने के लिए तकषी शिवशंकर पिल्लै ने यह उपन्यास लिखाञ्र था।[1]

तकषी शिवशंकर पिल्लै का कालजयी उपन्यास 'चेम्मीन' (1956) पाठकों के समक्ष एक ही समय में आशा और निराशापूर्ण प्रेम की एक अनोखी, मायावी दुनिया प्रस्तुत करता है। उपन्यास का मूल भाव यह है कि जिस प्रकार समुद्र की खाञ्री लहरें बार-बार तट से टकराती हैं, उसी प्रकार संकटों की नमकीन लहरें जीवन रूपी किनारे पर लगातार आती रहती हैं। जब 1956 में 'चेम्मीन' पहली बार प्रकाशित हुआ, तो शायद ही किसी ने सोचा होगा कि यह मलयालम साहित्य की दुनिया में सुनहरे अक्षरों में अपना नाम दर्ज कराएगा। कुट्टनाड के महाकाव्यकार के रूप में प्रसिद्ध तकषी शिवशंकर पिल्लै द्वारा लिखित यह उपन्यास मानवीय इच्छाओं और निराशाओं को बड़ी ही खूबसूरती से चित्रण करता है। उपन्यास और लघुकथा के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले पिल्लै (जन्मः 17 अप्रैल 1912) को 1984 में भारत के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

'चेम्मीन' मूल रूप से मछुआ समुदाय की एक हिंदू महिला करुत्तम्मा और एक मुस्लिम मछली व्यापारी के बेटे परीकुट्टी के बीच के प्रगाढ़ प्रेम की मार्मिक गाथा है। उनके इस प्रेम को करुत्तम्मा की माँ चक्की कठोरता से विरोध करती हैं और उसे अपने समुदाय के कठोर सामाजिक बंधनों और आचार संहिता के बारे में चेतावनी देती हैं।चक्की ने बेटी को फिर एक बड़ा उपदेश दिया 'पवित्रता ही सबसे बड़ी चीज़ है, बेटी! मल्हार की असली संपत्ति मल्लाहिन की पवित्रता ही है। कभी-कभी छोटे मुतलाळी (धनिक) लोग समुद्र तट को अपवित्र कर देते हैं। (1) परिस्थितियों से मजबूर होकर, करुत्तम्मा को परीकुट्टी के साथ जीवन बिताने के अपने सपने को त्यागना पड़ता है। इसके बाद, उसके पिता चेम्पनकुंजु उसका विवाह एक अनाथ मछुआरे पलनी से करवा देते हैं, जिससे वह एक मछली पकड़ने के अभियान के दौरान मिले थे।

कहानी एक दुखद मोड़ लेती है जब चक्की की अचानक बीमारी से मृत्यु हो जाती है। चेम्पनकुंजु, जो अत्यधिक लालची हो गया है, अपनी बेटी करुत्तम्मा को मायके में ही रहने के लिए कहता है, लेकिन वह पलनी के साथ रहने चली जाती है। इससे क्रोधित होकर, चेम्पनकुंजु अपनी बेटी को त्याग देता है। कई नावों और जालों का मालिक बनने की उसकी महत्वाकांक्षा उसे एक लापरवाह और लालची इंसान में बदल देता है। अपनी पत्नी की मृत्यु

के बाद, वह उस व्यक्ति की विधवा से विवाह कर लेता है जिससे उसने पहली नाव और जाल खरीदा था। इस नए पारिवारिक माहौल में करुत्तम्मा की छोटी बहन पंचमी का रहना मुश्किल हो जाता है और वह भागकर अपनी बड़ी बहन के पास चली जाती है।

इस बीच, करुत्तम्मा पलनी के साथ अपना जीवन व्यतीत करती है, एक समर्पित पत्नी और उनके बच्चे की माँ बन जाती है। हालाँकि, गाँव में परीकुट्टी के साथ उसके पिछले रिश्ते के बारे में अफवाहें फैलने लगती हैं। तीन-चार दिन के बाद तट पर एक बड़ा झगड़ा खड़ा हो गया। मछली बेचने जानी वाली औरतें मिलकर करुत्तम्मा की शिकायत करने लगीं। करुत्तम्मा किसी से कुछ नहीं कह सकती थी। वह खड़ी-खड़ी रोती रही। एक ने गुस्से में कहा, "वहाँ किसी मुसलमान के साथ रहती थी। अब यहाँ के तट का सर्वनाश करने आई है।"[2]

दूसरी ने कहा, "उसे काम तो मिलेगा ही। सब घरों में मर्द लोग उसी से मछली खरीदने को कहेंगे। यह तो ऐसे ही सज-धजकर घूमने और मर्द को फंसाने वाली है ही।"[3]इस द्वेषपूर्ण निंदा का पलनी की आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उसके साथी उसे अपने साथ मछली पकड़ने ले जाने से मना कर देते हैं। भाग्य के एक फेर में, एक रात करुत्तम्मा और परीकुट्टी समुद्र तट पर मिलते हैं और उनका सुप्त प्रेम फिर से जाग उठता है। उसी रात, पलनी, जो समुद्र में एक बड़ी शार्क से लड़ रहा होता है, एक भयंकर चक्रवात में फँस जाता है और लहरों में समा जाता है। अगली सुबह, करुत्तम्मा और परीकुट्टी के शव किनारे पर मिलते हैं, उनके हाथ मृत्यु में एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। कुछ ही दूरी पर, वह विशाल शार्क भी मृत पाई जाती है, जो पलनी के काँटे में फँसी हुई थी। उपन्यास का अंत पंचमी ने करुत्तम्मा के बच्चे को कंधे पर उठाए समुद्र तट पर अपनी बहन को खोजते हुए आने के मार्मिक दृश्य के साथ होता है।

विषयगत विश्लेषण

जाति व्यवस्था का प्रभाव : यह उपन्यास मुख्य रूप से चेम्पनकुंजु के चरित्र के माध्यम से व्यक्तिगत जीवन पर जाति व्यवस्था के गहरे प्रभाव को दर्शाता है। एक नाव और जाल का मालिक बनने की उसकी महत्वाकांक्षा, जो स्वायत्तता और समृद्धि का प्रतीक है, 'अरयन' समुदाय के भीतर महत्वपूर्ण अशांति पैदा करती है। उसके साथी यह तर्क देते हैं कि वह, निचली 'मुक्कुवा' (मछुआरा) उप-जाति का सदस्य होने के नाते, ऐसे स्वामित्व का हकदार नहीं है। अच्चन ने जवाब दिया कि सबको अधिकार नहीं है। मूप्पन ने उस सवाल के जवाब को और भी स्पष्ट किया। समुद्र-माता की सन्तान तो अनमोल सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी है। उनका हाथ भरा-पूरा रहना साधारण सी बात है। तब सब नाव और जाल रखने की शक्ति है ही। लेकिन घाट पर जितने भी लोग हैं यदि वे सब नाव और जाल रखने लगेंगे तो काम पर कौन जायगा! उसने पूछा, "इस घाट पर कौन ऐसा है जो चाहे तो नाव और जाल नहीं खरीद सकता?"

बात तो ठीक थी। पर अच्चन ने एक भारी सवाल पेश किया, 'तब सबके पास नाव और जाल क्यों नहीं हैं?'

वेलयुधन् ने पूछा 'चेम्पन काका इनमें किस जाति के हैं?' पुण्यन् ने मुस्करा दिया ।

मूप्पन ने जवाब दिया, "मछुआरे।"[4]। स्थापित पदानुक्रम में, नाव रखने का अधिकार केवल एक उच्च उप-जाति, यानी धनी तटीय प्रशासकों के लिए आरक्षित था, जो जाति संरचना के संरक्षक के रूप में कार्य करते थे। यह नियम मछुआरा समुदाय के भीतर कठोर सामाजिक स्तरीकरण को रेखाङ्कित करता है और उन चुनौतियों को स्पष्ट रूप से चित्रित करता है जिनका सामना एक व्यक्ति को अपनी निर्धारित जाति-आधारित सीमाओं को पार करने का प्रयास करते समय करना पड़ता था।

लालच का भ्रष्ट स्वरूप : चेम्पनकुंजु का चरित्र-चित्रण इस बात पर एक शक्तिशाली टिप्पणी है कि जब महत्वाकांक्षा लालच और स्वार्थ में बदल जाती है तो वह कितनी भ्रष्ट हो सकती है। धन प्राप्त करने का उसका जुनून उसे उसके पारिवारिक कर्तव्यों से विमुख कर देता है। चक्की और चेम्पनकुंजु के बीच का वार्तालाप यह स्पट कर देते हैं। चक्की ने दुख और रोष में कहा, 'अच्छा तो नाव और जाल खरीदते रहो!'

चेम्पन ने अपना निश्चय दुहराया - 'कुछ भी हो, मैं उन रुपयों में से चार पैसे भी नहीं निकालूंगा, तुम उन पर आँख मत लगाओ!'

चक्की ने यह कहकर अपना गुस्सा उतारा, "बिटिया को कोई विधर्मी कुमार्ग पर ले जायगा। अब यह होने जा रहा है।"[5] अपने परिवार की रक्षा और पोषण करने के बजाय, वह किसी भी तरह से सामाजिक गतिशीलता हासिल करने का प्रयास करता है। शुरुआत में एक नाव भी नहीं खरीद पाने वाला चेम्पनकुंजु, उधार पर सूखी मछली बेचकर धन जमा करता है और कई नावों का मालिक बन जाता है। "चेंम्पन की नाव सबसे पहले निकली थी। अच्चन कुंच की मंगल ध्वनि की और बाकी लोगों ने उसे दूहराकर साथ दिया।"[6] जब उसका शुरुआती हितैषी परीकुट्टी अपना पैसा वापस मांगता है, तो चेम्पनकुंजु जवाब देता है, 'मुझे यह पसंद नहीं कि कोई मेरी नाव से एक भी मछली ले।' यह क्षण लालच में डूबे एक व्यक्ति को उजागर करता है, जो उसके नैतिक पतन को दर्शाता है।

चेंबन, एक स्वार्थी और अज्ञानी व्यक्ति की विशेषताओं के साथ, उसका समाज उससे जो करने की उम्मीद करता है, उसका एक उत्साही समर्थक बना रहता है और यह सुनिश्चित करता है कि उसकी बेटियाँ अपने करीबी समुदाय और उनके रीति-रिवाजों के बीच की खाई को पाट दें। चेंबन मछुआरों के समूह के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने में अपनी विफलता से अवगत है, कुलीन वर्ग की सीढ़ी में ऊपर उठने की उसकी अथक हताशा, या एक ऐसे व्यक्तिकी पत्नी से पुनर्विवाह जिससे वह पैसे उधार लेता है। यह पाठ इस बात का एक आदर्श उदाहरण है कि भौतिक संतुष्टि के बदले में महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।

समुद्र का मौलिक मिथक : उपन्यास का एक केंद्रीय सिद्धांत 'अरयन' मछुआरा समुदाय का मौलिक मिथक है, जो पीढ़ियों से चली आ रही एक विश्वास प्रणाली है।प्रथम मल्लाह जब पहले-पहल लकड़ी के एक टुकड़े पर चढ़कर समुद्र की लहरों और ज्वार-भाटे का अतिक्रमण करके क्षितिज के उस पार गया तब उसकी पत्नी ने तट पर व्रत-निष्ठा के साथ पश्चिम की ओर देखकर खड़े-खड़े तपस्या की। समुद्र में तूफान उठा, शार्क मुँह बाए नाव के पास पहुँचे, ह्वेल ने नाव को पूंछ से मारा और जल की अन्तर-धारा ने नाव को एक भँवर में खींच लिया। लेकिन आश्चर्यजनक रीति से वह मल्लाह सब संकटों से बचकर एक बड़ी मछली के साथ किनारे पर लौट आया। "उस तूफान के खतरों से वह कैसे बचा? शार्क उसे क्यों नहीं निगल गया? ह्वेल की मार से उसकी नाव क्यों नहीं डूब गई? भँवर से उसकी नाव कैसे निकल आई? यह सब कैसे हुआ? समुद्र तट पर खड़ी उस पतिव्रता नारी की तपस्या का ही वह फल था।"[7] यह प्रचलित मिथक, जिसे उस युग के अनपढ़ मछुआरे अपने घरेलू जीवन की सुरक्षा के लिए एक अटल सत्य मानते थे, स्त्री की पवित्रता की अवधारणा से संबंधित है। इसके अनुसार, समुद्र में एक मछुआरे की सुरक्षा सीधे तौर पर किनारे पर उसकी पत्नी के सतीत्व पर निर्भर करती है। यदि एक विवाहित मछुआरा स्त्री व्यभिचार करती है, तो समुद्र की देवी 'कटलम्मा' क्रोधित हो जाएँगी और उसके पति के प्राण ले लेंगी। उपन्यास में चक्की ऐसे कहते हैं बिटिया मेरी, तू समुद्र में तूफान उठाकर मछुआरों की जीविका नष्ट न कर!' करुत्तम्मा डर गई। चक्की ने आगे कहा, "वह तो विधर्मी है। उसे इन बातों की क्या परवाह होगी!"[8] यह मिथक समुदाय की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक नींव है, और इसकी दुखद पूर्ति उपन्यास के चरमोत्कर्ष का निर्माण करती है।

सती और सावित्री जैसी पौराणिक महिलाओं को आदर्श महिलाओं के प्रतीक के रूप में सराहा जाता है और ये पौराणिक पात्र अपने सतीत्व को बनाए रखते हैं और हमेशा अपने पतियों की सेवा में तत्पर रहती हैं। मिथक इस प्रकार विकसित होता है कि पहला मछुआरा जो मछली पकड़ने के लिए समुद्र में गया था, एक भयंकर तूफान में फँस गया, लेकिन कटलयम्मा द्वारा उसे केवल इसलिए बचाया गया क्योंकि उसकी सती पत्नी ने पूरी रात तट पर प्रतीक्षा, प्रार्थना और उसके लिए तपस्या की थी।'

'चेम्मीन' इस अंधविश्वास का बड़ी कुशलता से उपयोग करके एक ऐसी कहानी बनाता है जो एक ही समय में एक कोमल, काव्यात्मक रोमांस और एक भावनात्मक रूप से विनाशकारी त्रासदी है, जिससे पाठक आसानी से बाहर नहीं निकल पाता।

आचार-परम्परा का पतन :'चेम्मीन' मछुआ समुदाय की कहानी है, जिसमें एक भ्रांति साइक्लोन के रूप में प्रचलित है यदि एक विवाहित मछुआरिन अपने पति की अनुपस्थिति में व्यभिचार करती है, तो समुद्र-देवी काटलम्मा उस पति को समुद्र में निगल लेगी। इसी विश्वास पर आधारित इस कथा में पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के टकराव को दर्शाया गया है।

चेम्बन कुंजु ने परम्पराओं की अवहेलना करते हुए न केवल एक नाव खरीदी बल्कि अपनी बेटी का मुस्लिम व्यापारी के साथ प्रेम भी स्वीकारा। इन सुनियोजित विचलनों की कीमत उसे और उसके परिवार को भारी चुकानी पड़ी। समाज ने उन्हें समाप्त कर दिया और अंततः मृत्यु की अभिशप्तता उन्हें आ घेर ली।

लैंगिक राजनीति : सामुदायिक दृष्टिकोण के अनुसार, मछुआरिनों की नैतिकता समुद्र की रक्षा का आधार थी। चक्की अपने कर्तव्यनिष्ठ योगदान से परिवार की रक्षा में लगी रहीं, लेकिन फिर भी वे कड़ी आचार-निगरानी का सामना करती रहीं।

करुत्तम्मा अपने प्रेम के कारण परम्परागत मान्यताओं से परे चली, लेकिन समाज ने उसे और उसके परिवार को दोषी ठहराया। उसकी प्रेमपूर्ण आयु-नीति ने उसे अपने पति और समाज दोनों से अलग कर दिया।

'नई स्त्री' का प्रतिनिधित्व - करुत्तम्मा : करुत्तम्मा को एक स्वतंत्र, आत्म-साक्षी और समाज विरोधी व्यक्तिके रूप में चित्रित किया गया है जो:

• पिता की लालसा और चालबाज़ी को चुनौती देती है/ • अधिक आत्मसम्मान और नैतिकता की मांग करती है/ • अपनी धरोहरों को स्वयं निर्धारित करने की जिज्ञासा रखती है।

भले ही उसकी कीमत जीवन से ऊँची चढ़ा दी गई हो, उसके प्रेमविरोधी संघर्ष ने उसे नए युग की नायिका बना दी।

निष्कर्ष : तकषी शिवशंकर पिल्लै, मलयालम उपन्यास के नए युग के जनक, ने अपनी कहानियों के लिए आम लोगों को एक मौलिक विषय के रूप में चुनकर मलयालम साहित्य के पुनरुद्धार की घोषणा करने में मदद की, जो केरल के समाजवादी आंदोलन से भी संबंधित हैं। 'चेम्मीन' 1956 में मलयालम में प्रकाशित हुआ था और 1958 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने वाला पहला मलयालम उपन्यास हुआ। तब से इसका 30 से अधिक भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। उपन्यास एक कथा की गुणवत्ता प्राप्त करता है जिसमें मछली पकड़ने वाले समुदाय के जीवन को बड़े भावनात्मक विस्तार के साथ दर्शाया गया है। रीति-रिवाज, वर्जनाएँ, विश्वास, अनुष्ठान और दिन-प्रतिदिन के जीवन का व्यवसाय जो कि कठोर अस्तित्व के बिंदु से है, तकषी शिवशंकर पिल्लै की कलम के माध्यम से जादुई रूप से जीवंत हो उठते हैं।जब इन पारंपरिक कानूनों और रीति-रिवाजों का उल्लंघन किया जाता है और उन्हें लांघा जाता है तो अराजकता और असामंजस्य होता है। उपन्यास उन पात्रों की त्रासदी को चित्रित करके इसे मान्यता देता जिन्होंने उल्लंघन किया है।

संदर्भ सूची

1 मछुआरे, मूल लेखक - तकषी शिवशंकर पिल्लै, अनुवादिका श्रीमती भारती विद्यार्थी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:1971 पृष्ठ संख्या 12

2 वही 3 वही 4 वही 5 वही 6 वही 7 वही

8 तकषी शिवशंकर पिल्लै चेम्मीन, अनुवादः अनीता नायर, हार्पर पेरेनियल, नोएडा 2018.

9 भाग्यलक्ष्मी, आर. (2019)। मिथ ऑफ चैस्टिटी एज ए पैट्रिसेंट्रिक क्लच ऑन वीमेनः ए स्टडी ऑन तकषी शिवशंकर पिल्लै' चेम्मीन इन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंग्लिश लिटरेचर एंड सोशल साइंसेस, खंड 4, अंक- 2।

शोध निर्देशिका:
डॉ. मंजु ए
विभागाध्यक्षा, हिंदी विभाग
श्रीनारायणा वनिता कॉलेज, कोल्लम

शोध छात्रा
श्रीनारायणा वनिता कॉलेज
कोल्लम, केरल

विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण: वडोदरा के दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज़्म केंद्र का अध्ययन

सरिता पॉल

सारांश : दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म सेंटर देश के प्रमुख ऑटिज्म और विकासात्मक विकलांगता केंद्रों में से एक है। यह केंद्र एक ही स्थान पर सारे आवश्यक उपचार प्रदान करता है, जहाँ कुशल, प्रशिक्षित और प्रमाणित विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम कार्यरत है। दिशा ने प्रमाण-आधारित तकनीकों, विश्वस्तरीय पद्धतियों और अत्याधुनिक तकनीक को अपनाकर प्रत्येक उपचार के लिए अपना मानक स्थापित किया है। यह संस्थान व्यक्तिगत शैक्षिक और चिकित्सीय कार्यक्रमों का पालन करता है, जो प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुरूप तैयार किए जाते हैं। दिशा का उद्देश्य अधिक से अधिक बच्चों को मुख्यधारा के विद्यालयों में एकीकृत करना है, जबकि शेष बच्चों को रोजगार योग्य कौशल प्रदान करके आत्मनिर्भर बनाना है। इस अध्ययन का उद्देश्य दिशा स्पेशल स्कूल में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण की जाँच करना था। अध्ययन के लिए 10 नियमित रूप से उपस्थित होने वाले छात्रों का नमूना चुना गया।

कुंजी शब्द: व्यावसायिक प्रशिक्षण, विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र, दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म सेंटर।

परिचय : शिक्षा समाज के सभी क्षेत्रों में समानता और न्याय को प्रोत्साहित करने का प्रमुख साधन है। सभी के लिए समान, गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करना सामाजिक असंतुलन को कम कर सकता है, जिससे एक अधिक संतुलित और शांतिपूर्ण समुदाय का निर्माण संभव है। शिक्षा में समावेश को अपनाना, बच्चों की विशिष्टता की परवाह किए बिना, भारत में एक प्रगतिशील दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिसका उद्देश्य सभी व्यक्तियों के लिए स्वीकृति और समर्थन को बढ़ावा देना है (Devi, 2022)।

नीति प्रत्येक छात्र की 'रचनात्मक क्षमता' के विकास को प्राथमिकता देती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास नहीं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक दक्षताओं को भी बढ़ावा देना है। इसमें 'मौलिक क्षमताएँ' जैसे संख्यात्मक और साक्षरता के साथ-साथ 'उन्नत संज्ञानात्मक कार्य' जैसे आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान को भी सम्मिलित किया गया है। यह नीति प्रभावी शासन, स्वायत्त और सशक्तिकरण के माध्यम से सभी शैक्षिक स्तरों पर रचनात्मकता, नवाचार और पारंपरिक सोच से परे जाने को प्रोत्साहित करती है। विद्यालय और उच्च शिक्षा को अधिक समग्र, व्यावहारिक, एकीकृत, शिक्षार्थी-केंद्रित, चर्चा-आधारित, खाज्रेजोन्मुखी, जिज्ञासु, अनुकूलन शील और आनंददायक बनाने के लिए पाठ्यक्रम और शिक्षा शास्त्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन आवश्यक हैं (Sapakal, 2022)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित सामाजिक पदानुक्रम को समाप्त करने का प्रयास करती है। इसके लिए, नीति के अंतर्गत व्यावसायिक कार्यक्रमों को नियमित शैक्षणिक संस्थानों में क्रमिक रूप से समाहित करने की आवश्यकता निर्धारित की गई है। व्यावसायिक शिक्षा के सहज एकीकरण को प्राथमिकता देते हुए इसकी शुरुआत उच्च शिक्षा से की जाएगी। यह नीति सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि प्रत्येक बच्चा कम से कम एक व्यवसाय में दक्षता प्राप्त करे, साथ ही अन्य कई व्यवसायों का अनुभव भी प्राप्त करे। यह पद्धति कार्य के महत्व और विभिन्न व्यवसायों, विशेष रूप से भारतीय कला और हस्तशिल्प के मूल्य को उजागर करने का प्रयास करती है (NEP 2020)।

व्यावसायिक कार्यक्रम विशेष विद्यालयों, समावेशी शैक्षिक वातावरण और उच्च शिक्षण संस्थानों में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों को उनके व्यक्तिगत कौशल, रुचियों और क्षमताओं के अनुसार विभिन्न कौशल विकसित करने में सक्षम बनाते हैं। व्यावसायिक कार्यक्रमों में पाक कला, फैशन, सौंदर्य

प्रसाधन, मालिश चिकित्सा, कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी, बुनियादी ऑटोमोटिव कौशल, कला, कृषि और मत्स्य पालन, तथा उद्यमिता जैसी विधाएँ शामिल हो सकती हैं। विद्यालयों को भौगोलिक कारकों, व्यक्तिगत विशेषताओं और विशेष आवश्यकताओं वाले अपने छाखानें की रुचियों और क्षमताओं के अनुसार विकल्पों को अनुकूलित करने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है (Jauhari et al.,2020)।

विशेष विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को उनके कौशल के अनुरूप उद्यमिता कौशल प्रदान करती है, जिससे नामित क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सुलभ होते हैं। व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है, विशेष रूप से आर्थिक गतिविधियों में। स्टायरीन एल एस ए, ऑस्ट्रिया में किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि शिक्षा के दौरान व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने से विकलांग व्यक्तियों के करियर की संभावनाएँ काफी हद तक बढ़ सकती हैं। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए व्यावसायिक शिक्षा के लाभ शिक्षा के माहौल से स्वतंत्र रोजगार की ओर परिवर्तन के माध्यम से उत्पन्न होते हैं। यह परिवर्तन विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है, जैसे कि नियोजन, उपलब्धता, पाठ्यक्रम संशोधन, शिक्षण रणनीतियां, दृष्टिकोण, और शिक्षकों की तैयारी। इसके अतिरिक्त, यह अनुमान लगाया जाता है कि शैक्षिक सुधारों और सरकारी नीतियों का विशेष आवश्यकताओं वाले छाखानें के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है (Pasaribu and Harfiani, 2021).

दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म सेंटर को राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो ऑटिज्म और विकासात्मक विकलांगता के लिए समर्पित है। यह केंद्र योग्य, प्रशिक्षित और प्रमाणित विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम को शामिल करता है, जो आवश्यक उपचार प्रदान करते हैं। दिशा ने प्रत्येक उपचार के लिए उन्नत तकनीक, उच्च-स्तरीय प्रक्रियाएँ और साक्ष्य-आधारित पद्धतियों का उपयोग करके अपना मानक स्थापित किया है। यह केंद्र एक सुव्यवस्थित, व्यक्तिगत शिक्षा और पुनर्वास कार्यक्रम का पालन करता है, जो प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं और क्षमताओं को ध्यान में रखता है। दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म सेंटर विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करता है।

दिशा विशेष विद्यालय और ऑटिज्म केंद्र : दिशा स्कूल देश के प्रमुख ऑटिज्म केंद्रों में से एक है, जिसने नवीनतम अमेरिकी पाठ्यक्रम (Unique Learning System) को लागू किया है। इसके सभी स्टाफ सदस्यों को इसकी प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अमेरिका के विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित किया गया है।

दिशा Speech Generating Augmentative and Alternative Communication (AAC) Devices का उपयोग उन बच्चों के लिए करती है जो नॉन-वर्बल हैं या अत्यधिक सीमित रूप से बोलते हैं। इन उपकरणों की उपलब्धता अमेरिका के श्री डेविड गोल्डबर्ग और सुश्री अंबिका भट्टाचार्य के उदार योगदान के कारण संभव हुई है। ये उपकरण इन बच्चों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

दिशा स्कूल देश के प्रमुख ऑटिज्म उपचार केंद्रों में से एक है, जिसने नवीनतम अमेरिकी पाठ्यक्रम (Unique Learning System) को अपनाया है। इसके सभी टीम सदस्य इस पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए अमेरिकी विशेषज्ञ प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित किए गए हैं। श्री डेविड गोल्डबर्ग (संयुक्तराज्य अमेरिका) और सुश्री अंबिका भट्टाचार्य के उदार योगदान के कारण, दिशा गैर-बोलने वाले या सीमित बोलने की क्षमता वाले बच्चों को AAC उपकरण प्रदान करने में सक्षम है। इन बच्चों ने इन उपकरणों को अत्यधिक लाभकारी पाया है (https://disha.org/).

दिशा का उद्देश्य अधिकांश बच्चों को मुख्यधारा के विद्यालयों में समाहित करना और उन्हें रोजगार योग्य कौशल प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाना है। दिशा के 75% से अधिक लाभार्थी वे परिवार हैं जो गरीबी रेखाज्ञ से नीचे जीवन यापन करते हैं, और इन्हें निःशुल्क सेवाएँ, जिसमें चिकित्सा उपचार भी शामिल है, प्रदान की जाती हैं। दिशा एक विशिष्ट गैर-सरकारी संगठन (NGO) है, जिसमें प्रशिक्षक छाखानें के प्रति गहन सहानुभूति और देखभाल प्रदर्शित करते हैं, साथ ही जवाबदेही, पारदर्शिता और सुशासन

के उच्च मानकों को बनाए रखते हैं (https://disha.org)

दिशा विशेष विद्यालय की अद्वितीय विशेषताएँ : दिशा स्पेशल स्कूल में योग्य पेशेवर शिक्षक और चिकित्सक कार्यरत हैं। यह एक विश्वस्तरीय पाठ्यक्रम और विशिष्ट शिक्षण प्रणाली को अपनाता है। यह उन्नत शिक्षण विधियों और अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करता है। प्रत्येक कौशल के अधिग्रहण के लिए अनुकूलित अनुप्रयोग उपलब्ध हैं। दिशा विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है।

दिशा विशेष विद्यालय में चिकित्सा हस्तक्षेप और सेवाएँ : दिशा विशेष आवश्यकताओं वाले छाखानें के लिए विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करता है, जिनमें शामिल हैं:

व्यवहारिक विश्लेषण चिकित्सा (ABA - एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस)/ दैनिक जीवन की क्रियाएँ (ADL - एक्टिविटीज ऑफ डेली लिविंग)/- संवेदी एकीकरण (व्यावसायिक चिकित्सा - ऑक्यूपेशनल थेरेपी)/ फिजियोथेरेपी, भाषण और संचार चिकित्सा/ नृत्य चिकित्सा, कला चिकित्सा, संगीत चिकित्सा, खेल चिकित्सा/पर्यावरण-संवेदनशील बागवानी, कौशल संवर्धन, सहयोगात्मक सेवाएँ /बाहरी छाखानें हेतु गृह कार्यक्रम और ऑनलाइन परामर्श(https://disha.org/)

दिशा विशेष विद्यालय में विद्यार्थियों का अनुभव

दिशा स्पेशल स्कूल में विद्यार्थियों की याखान को दस चरणों में वर्गीकृत किया गया है(https://disha.org):

1) मूल्यांकन और निदान विशेषज्ञों की टीम द्वारा

2) व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP)

3) प्रारंभिक हस्तक्षेप

4) संक्रमण चरण I और II

5) संक्रमण चरण III और IV

6) प्रगति का आवधिक मूल्यांकन

7) उच्च कार्यशील छाखानें का समावेश

8) कौशल विकास (व्यावसायिक प्रशिक्षण)

9) अर्थपूर्ण रोजगार या आजीविका हासिल करना

10) समावेशन के क्षेत्र को स्वीकार करना

दिशा विशेष विद्यालय का हस्तक्षेप : दिशा अधिक से अधिक छात्रों को मुख्यधारा के स्कूलों में शामिल करने का प्रयास करता है, जबकि जो छात्र इसमें सफल नहीं हो पाते, उन्हें आवश्यकतानुसार कौशल विकास प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे रोजगार प्राप्त कर सकें या आत्मनिर्भर बन सकें। अब तक, 22 छात्रों को मुख्यधारा के विद्यालयों में शामिल किया गया है, और 17 छाखानें ने रोजगार प्राप्त किया है या अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू किया है (https://disha.org)।

समुदाय-आधारित पुनर्वास Community Based Rehabilitation (CBR)

दिशा ने वडोदरा के झुग्गी बस्तियों और ग्रामीण क्षेखानें में विकासात्मक विकलांग बच्चों और वयस्कों के लिए समुदाय-आधारित पुनर्वास (CBR) पहल आरंभ की है। हमारी विशेषज्ञ सर्वेक्षण टीम प्रत्येक परिवार का व्यापक मूल्यांकन करती है ताकि सहायता की आवश्यकता वाले व्यक्तियों की पहचान की जा सके। सभी कार्यक्रम प्रतिभागियों को निःशुल्क सेवाएँ प्रदान की जाती हैं, जिनमें परिवहन, पौष्टिक भोजन, यूनिफॉर्म और चिकित्सा सहायता शामिल हैं। इसके अतिरिक्त लाभार्थी कला, नृत्य, संगीत, भ्रमण और खेलकूद जैसी विभिन्न मनोरंजन और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिससे उनका समग्र विकास और कल्याण सुनिश्चित होता है। मुख्यधारा की शिक्षा प्राप्त करने वाले छाखानें को व्यक्तिगत हस्तक्षेप, सुधारात्मक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है, ताकि उनकी अकादमिक सफलता और कौशल विकास सुनिश्चित हो सके।

कौशल विकास केंद्र (Skill Development Centre)

दिशा के कौशल विकास केंद्र में सभी आवश्यक प्रशिक्षण सुविधाएँ और उपकरण उपलब्ध हैं।

दिशा में व्यावसायिक प्रशिक्षण निम्नलिखित क्षेत्रों को समाहित करता है:

1. कंप्यूटर ज्ञान - मूलभूत कंप्यूटर संचालन, टाइपिंग और सॉफ़्टवेयर उपयोग।

2. हस्तकला - आभूषण निर्माण, कढ़ाई, बुनाई तथा अन्य कलात्मक अभिव्यक्तियाँ।

3. व्यावसायिक कौशल - सिलाई, वस्त्र निर्माण, कागज़ के थैले का निर्माण और अन्य हस्तशिल्प कार्य।

4. जीवन कौशल - पाक कला, घरेलू कार्य, व्यक्तिगत स्वच्छता और आत्म-रक्षा कौशल।

5. सामाजिक कौशल - संवाद, सहयोग, समस्या समाधान और विवाद समाधान।

दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म सेंटर के व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य छात्रों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और उद्देश्य की भावना का विकास करना है। शिक्षक और कर्मचारी व्यक्तिगत रूप से शिक्षण और सहायता प्रदान करते हैं, जिससे प्रत्येक बच्चे को आवश्यक मार्गदर्शन और प्रेरणा मिलती है। दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म सेंटर स्थानीय व्यवसायों और संगठनों के साथ सहयोग करता है ताकि छाखानें के लिए इंटर्नशिप और नौकरी के अवसर उपलब्ध कराए जा सकें। यह छाखानें को वास्तविक कार्य स्थलों में अपने कौशल को लागू करने में सहायता करता है और उन्हें उद्योग में सहजता से एकीकृत होने का अवसर प्रदान करता है। दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म सेंटर में व्यावसायिक प्रशिक्षण विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को पूर्ण और उत्पादक जीवन जीने के लिए सशक्तबनाता है, साथ ही समुदाय में समावेश और स्वीकृति को बढ़ावा देता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. विशेष आवश्यकताओं वाले छाखानें द्वारा दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म सेंटर में की जाने वाली विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों का विश्लेषण करना।

2. व्यावसायिक प्रशिक्षण की संरचित प्रक्रिया और इसका छात्रों के विकास पर प्रभाव की जांच करना।

कार्यप्रणाली

अनुसंधान संरचना: यह अध्ययन गुणात्मक केस स्टडी पद्धति का उपयोग करता है ताकि दिशा स्पेशल स्कूल और ऑटिज्म केंद्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण की गहन समझ प्राप्त की जा सके। डेटा के विश्लेषण के लिए विषयगत विश्लेषण (थीमैटिक एनालिसिस) अपनाया गया, जिससे छाखानें और शिक्षकों के अनुभवों से पैटर्न और विषय उभरकर सामने आए।

नमूना: यह अध्ययन दिशा स्पेशल स्कूल में व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे 10 छाखानें को सम्मिलित करता है। चयन मानदंडों में विभिन्न प्रकार की दिव्यांगता वाले छात्र शामिल थे, जैसे ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार, बौद्धिक अक्षमता, आर्थोपेडिक विकलांगता, डाउन सिंड्रोम और ADHD, ताकि विविध अनुभवों का अभिलेख किया जा सके।

उपकरण : यह अध्ययन बहु-पद्धति रणनीति का उपयोग करता है ताकि व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रक्रियाओं की समग्र समझ सुनिश्चित की जा सके।

1. अवलोकन शोधकर्ता ने एक महीने तक गहन अवलोकन किया, प्रशिक्षण सखानें में भाग लिया और छात्रों की भागीदारी, कौशल विकास तथा व्यवहार में परिवर्तनों का अभिलेखन किया। अवलोकन कक्षाओं और कार्यशालाओं में किया गया, जहाँ व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

2. अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार व्यावसायिक शिक्षा में विशेषज्ञता रखने वाले तीन शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया, ताकि निम्नलिखित पहलुओं की जानकारी प्राप्त की जा सके:

- उपयोग की गई शिक्षण विधियाँ

- विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की शिक्षा में आने वाली चुनौतियाँ

- व्यावसायिक प्रशिक्षण का छात्रों के विकास पर प्रभाव

3. दस्तावेज़ विश्लेषण - संस्थागत अभिलेख, छात्र प्रगति रिपोर्ट और पाठ्यक्रम सामग्री का अध्ययन किया गया ताकि अवलोकन और साक्षात्कार के निष्कर्षों की पुष्टि की जा सके।

डेटा विश्लेषण: विषयगत कार्यप्रणाली (Thematic Methodology)

थीम विश्लेषण ढांचे (Braun & Clarke, 2006) का उपयोग संकलित डेटा के गहन अध्ययन हेतु किया गया। विश्लेषण निम्नलिखित चरणों में संपन्न हुआः

1. डेटा से अवगत होना 2) प्रारंभिक कोडिंग उतपन्न करना 3)थीम की पहचान करना 4) थीम की समीक्षा 5) थीम को परिभाषित करना और नाम देना।

केस विश्लेषण द्वारा थीमैटिक निष्कर्षो का प्रमाणीकरण

थीमैटिक निष्कर्षो का समर्थन करने हेतु विशिष्ट केस विश्लेषण किए गए, जिनका उद्देश्य दिशा स्पेशल स्कूल में व्यावसायिक प्रशिक्षण में भाग लेने वाले छात्रों के अद्वितीय अनुभवों और प्रगति को अभिलेखित करना थाः

- केस 1: 26 वर्षीय छात्र, जिसे बौद्धिक अक्षमता और आर्थोपेडिक विकलांगता है। 2013 में 8वीं कक्षा पूरी करने के पश्चात दिशा में प्रवेश किया। वह आभूषण निर्माण, विशेष रूप से बीडिंग और वायर शेपिंग में अत्यधिक कुशल है।

- केस 2: 18 वर्षीय छात्र, जो बौद्धिक अक्षमता से ग्रसित है और वर्तमान में 10वीं बोर्ड परीक्षा की तैयारी कर रहा है। वह खेलों, विशेष रूप से दौड़ में उत्कृष्टता प्रदर्शित करता है और बर्लिन में एक अंतरराष्ट्रीय खेल कार्यक्रम के लिए चयनित हुआ है।

- केस 3: 19 वर्षीय छात्र, जिसे बौद्धिक अक्षमता और आंशिक दृष्टिहीनता है। 2019 में 9वीं कक्षा पूरी करने के बाद दिशा में प्रवेश किया। वह ब्लॉक प्रिंटिंग, आभूषण निर्माण, वस्त्र रंगाई और पाक कला में दक्ष है तथा घरेलू कार्यो में आत्मनिर्भरता प्रदर्शित करती है।

- केस 4: 26 वर्षीय छात्र, जो बौद्धिक अक्षमता से ग्रसित है, ने 2011 में दिशा में प्रवेश किया। इससे पूर्व, उसने किसी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। वह सिलाई, आभूषण निर्माण और कपड़ों की इस्त्री में कुशल है।

- केस 5: 26 वर्षीय छात्र, जो बौद्धिक अक्षमता और डाउन सिंड्रोम से ग्रसित है। उसने 2019 में दिशा में प्रवेश किया और प्रशासनिक कार्यो में जैसे दस्तावेज़ स्टेपलिंग, फोटोकॉपी, फाइलिंग, छिद्रण और कंप्यूटर टाइपिंग में विशेषज्ञता हासिल की।

- केस 6: 12 वर्षीय छात्र, जो बौद्धिक अक्षमता से ग्रस्त है और जिसने 5वीं कक्षा पूरी करने के बाद दिशा में प्रवेश लिया। उसने वारली कला, कक्षा निगरानी, बीडिंग और सब्जी काटने में विशिष्ट कौशल प्रदर्शित किया है।

- केस 7: 24 वर्षीय छात्र, जिसे बौद्धिक अक्षमता और आर्थोपेडिक विकलांगता है। उसने 2012 में 3वीं कक्षा पूरी करने के बाद दिशा में प्रवेश किया। वह पर्स बटन लगाना, बीडिंग, आभूषण निर्माण और इस्त्री करने में सक्षम है।

- केस 8: 23 वर्षीय छात्र, जिसे ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) है। उसने 2002 में दिशा में प्रवेश किया और पेपर बैग निर्माण, कपड़े की सिलाई, सब्जी काटने, खाना बनाने, सैंडविच तैयार करने और कंप्यूटर टाइपिंग में दक्षता प्राप्त की।

- केस 9: 37 वर्षीय छात्र, जिसे ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) है। उसने 2009 में दिशा में प्रवेश किया और वह आभूषण बीडिंग (रंगों के अनुसार), कंप्यूटर टाइपिंग और बैग सिलाई में कुशल है।

- केस 10: 18 वर्षीय छात्र, जिसे अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD) है। उसने 2014 में दिशा में प्रवेश किया और वह हार के मोतियों (रंग और आकार के अनुसार) को व्यवस्थित करने में अत्यधिक कुशल है।

प्रत्येक मामला विशिष्ट कौशल विकास, व्यवहारिक अनुकूलन और सामाजिक प्रगति की प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है। दिशा में व्यावसायिक प्रशिक्षण की अनुकूलित विधि सुनिश्चित करती है कि छात्र अपनी क्षमताओं और रुचियों के अनुरूप कौशल विकसित करें, साथ ही व्यक्तिगत चुनौतियों का समाधान करें।

थीमैटिक विश्लेषण ढांचा (Braun & Clarke, 2006) का उपयोग एकत्रित डेटा के समग्र विश्लेषण के लिए किया गया। विश्लेषण निम्नलिखित चरणों में संपन्न हुआः

1. डेटा से अवगत होना - शोधकर्ता ने अवलोकन नोट्स, साक्षात्कार प्रतियों (ट्रांसक्रिप्ट) और दस्तावेजों की सूक्ष्म समीक्षा की ताकि समग्र ज्ञान अर्जित किया जा सके।

2. प्रारंभिक कोडिंग उत्पन्न करना 3. थीम की पहचान करना 4. थीम की समीक्षा - 5. थीम का निर्धारण और नामकरण -

थीमैटिक विश्लेषण द्वारा प्राप्त तीन प्रमुख विषय

1. कौशल विकास और व्यावसायिक क्षमता

2. व्यवहारिक एवं सामाजिक विकास

3. अवरोध और सहायक तत्व

अतिरिक्त रूप से, व्यक्तिगत केस अध्ययन का विश्लेषण किया गया ताकि कुछ विशिष्ट छात्रों के व्यावसायिक प्रशिक्षण अनुभवों की गहन समझ प्राप्त की जा सके।

निष्कर्ष एवं विमर्श

विषय 1: कौशल अधिग्रहण और व्यावसायिक दक्षता

विषय 2: व्यावहारिक एवं सामाजिक विकास

दिशा में व्यावसायिक प्रशिक्षण छात्रों में महत्वपूर्ण व्यावहारिक सुधार उत्पन्न करता है, जिनमें सम्मिलित हैं:

- आत्मविश्वास में वृद्धि: व्यावसायिक कार्यों के संपादन से छात्रों में उपलब्धि की अनुभूति उत्पन्न होती है, जिससे उनका आत्म-सम्मान और जिम्मेदारी ग्रहण करने की प्रेरणा बढ़ती है।

- संवाद कौशल का संवर्धन: समूह गतिविधियाँ छात्रों को मौखिक और गैर-मौखिक संवाद में सुधार करने में सहायता करती हैं, जिससे सहपाठियों के साथ बातचीत और सहयोग में वृद्धि होती है।

- निर्देशों का पालन करने की क्षमता में वृद्धि: संरचित व्यावसायिक अभ्यास के माध्यम से छात्र धैर्य और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता विकसित करते हैं, जिससे वे कार्यस्थल के लिए तैयार होते हैं।

- सामूहिक कार्य का विकास: अनेक व्यावसायिक गतिविधियाँ सहयोग की आवश्यकता होती हैं, जिससे सहकर्मियों के बीच अच्छे संबंध, आपसी सम्मान और सामूहिक समस्या समाधान कौशल का विकास होता है।

- भावनात्मक संतुलन: रचनात्मक और व्यावहारिक गतिविधियों में संलग्नता से छात्रों को तनाव और चिंता के प्रबंधन में सहायता मिलती है, जिससे उनकी आत्म-नियंत्रण क्षमता और विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन शीलता में वृद्धि होती है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण केवल व्यावहारिक कौशल के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक अनुकूलन क्षमता को भी संवर्धित करता है। ये व्यवहारिक और सामाजिक दक्षताएँ छात्रों की दीर्घकालिक सफलता के लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि वे छात्रों को शिक्षकों, सहपाठियों और संभावित नियोक्ताओं के साथ प्रभावी संवाद करने में सक्षम बनाती हैं। व्यावसायिक प्रशिक्षण, आत्मविश्वास और संवाद कौशल में सुधार के माध्यम से, छात्रों के लिए सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देने वाला एक उत्प्रेरक बनता है।

विषय 3: चुनौतियाँ और सहायक तत्व

चुनौतियाँ:

- व्यावहारिक चुनौतियाँ: कुछ छात्र ध्यान केंद्रित करने, एकाग्रता बनाए रखने और आवर्ती आदतों से संघर्ष करते हैं, जिससे व्यक्तिगत हस्तक्षेप और संरचित सहायता प्रणाली की आवश्यकता होती है।

- सीमित संसाधन: उन्नत प्रशिक्षण सामग्री, उपकरण और विशेषीकृत प्रशिक्षकों की उपलब्धता से कौशल विकास के अवसरों में वृद्धि हो सकती है, जिससे छात्रों को अधिक विविध व्यावसायिक अनुभव प्राप्त हो सकता है।

- माता-पिता की संलग्नता: जागरूकता की कमी या वित्तीय प्रतिबंधों के कारण माता-पिता का सहयोग सीमित हो जाता है, जिससे छात्र विद्यालय के बाहर अपने कौशल का अभ्यास करने में असमर्थ हो सकते हैं।

सहायक कारक:

- प्रशिक्षित शिक्षकों की प्रतिबद्धता: छात्रों के कौशल विकास और आत्मविश्वास में वृद्धि के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

- संरचित शिक्षण दृष्टिकोण: चरणबद्ध कौशल विकास

छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से सीखने और आत्मसात करने में सहायता करता है, जिससे वे अपनी गति से प्रगति कर सकते हैं।

- प्रौद्योगिकी का समाकलनः AAC उपकरण और डिजिटल साधन गैर-मौखिक छात्रों के संचार और व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी को संवर्धित करते हैं।

- सामुदायिक और NGO सहयोगः साझेदारियाँ बाहरी रोजगार के अवसर, इंटर्नशिप, और विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के कौशल की समझ को संवर्धित करती हैं।

यद्यपि व्यावसायिक प्रशिक्षण छात्रों के लिए अत्यंत लाभकारी है, इसकी प्रभावशीलता को अधिकतम करने के लिए कई चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है।

संसाधनों की उपलब्धता में वृद्धि, / अभिभावकों की संलग्नता को प्रोत्साहित करना,/ शिक्षकों के प्रशिक्षण को विस्तृत करना

इन प्रयासों से व्यावसायिक कार्यक्रमों के परिणामों में उल्लेखनीय सुधार संभव है। इन समस्याओं का समाधान करके, दिशा जैसे संस्थान प्रशिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि कर सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि छात्र समग्र विकास प्राप्त करें।

निष्कर्ष : दिशा स्पेशल स्कूल का व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम छात्रों को महत्वपूर्ण जीवन और रोजगार कौशल प्रदान करने में अत्यधिक प्रभावी है। सुनियोजित और व्यक्तिगत दृष्टिकोण के माध्यम से, छात्र तकनीकी कौशल के साथ-साथ व्यवहारिक और सामाजिक प्रगति भी प्रदर्शित करते हैं। यह प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और टीम वर्क को प्रोत्साहित करता है, जिससे छात्र भविष्य में रोजगार और सामाजिक समावेशन के लिए तैयार हो जाते हैं।

हालांकि, सीमित संसाधनों, व्यवहारिक चुनौतियों और अभिभावकों की भागीदारी जैसी बाधाओं को दूर करना आवश्यक है ताकि कार्यक्रम की प्रभावशीलता को अधिकतम किया जा सके। व्यावसायिक संसाधनों में वृद्धि, सामुदायिक समर्थन और अनुकूल शिक्षण विधियाँ इस प्रयास को और अधिक सफल बना सकती हैं।

व्यावसायिक प्रशिक्षण विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। यह केवल कौशल विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वायत्तता, सम्मान और सामाजिक समावेशन की दिशा में एक मार्ग प्रशस्त करता है। दिशा स्पेशल स्कूल जैसे संस्थान समावेशी शिक्षा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो प्रदर्शित करते हैं कि व्यावसायिक कार्यक्रम आत्मनिर्भर और सशक्तव्यक्तियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ सूची

Disha Autism Center (n. d.) https://disha.org/

Devi, S. (2022). Promoting Equality and Inclusivity Through Education: A Novel Approach in India. Journal of Social Justice in Education, 7(1), 23-35.

Jauhari, M. N., Irvan, M., & Sunarya, P. B. (2020). Vocational Education Services in Schools for Children with Special Needs. Advances in Social Science, Education and Humanities Research, 508.

NEP, (2020). National Education Policy 2020. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_ Final_English_0.pdf

Pasaribu, M., & Harfiani, R., (2021). Vocational Education at Special Schools in North Sumatra. Al-Ishlah: Jurnal Pendidikan, 13(2), 1335-1347.

Sapakal, A. (2022). National Education Policy 2020: A Paradigm Shift in Indian Education System. Journal of Educational Policies, 12 (2), 45-57.

Research Guide : Dr. Jaishree Das
Associate Professor
The Maharaja Sayajirao University of Baroda

Research Scholar
The Maharaja Sayajirao University of Baroda
saritapal300@gmail.com

"धूणी तपे तीर" में तप्त आदिवासी जीवन

डॉ श्रीकला एस आर

हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन-यापन की चर्चा ज्यादा पुरानी नहीं है। लेकिन उसका वाचिक साहित्य बहुत पुराना है। आदिवासी साहित्य का केंद्रीय विषय शायद जंगल, जमीन ,विस्थापन, स्थानांतरण, आर्थिक - मानसिक शोषण आदि होगा। जब बाहरी लोगों का उनके दैनिक जीवन में हस्तक्षेप हुआ तब आदिवासी जीवन में विभिन्न समस्याओं की शुरुआत होने लगी। प्रशासन की दो मुँही नीति ने उनके जीवन को संघषमर्य बना दिया।

आज हिंदी साहित्य के क्षेत्र में आदिवासियों के दुःख - दर्द को शब्दबद्ध करने की कोशिश प्रबल हो रही है। इस हाशियेकृत लोगों के पैरोकार के रूप में कई आदिवासी साहित्यकारों का उदय हुआ, उनमें प्रमुख हस्ताक्षर है श्री हरिराम मीणा। 'धूणी तपे तीर' सन 2008 में प्रकाशित उनका चर्चित आदिवासी उपन्यास है। 19वीं शती के उत्तरार्ध में दक्षिणी राजस्थान के मानगढ़ में ब्रिटिश सरकार द्वारा जो हत्याकांड हुआ था इसकी पृष्ठभूमि में लिखाज्र गया उपन्यास भील या मीणा आदिवासियों की समस्याओं की ओर संकेत करता है। उपन्यासकार मीणाजी के पुरखे ब्रिटिश सरकार के विद्रोह के खिलाफ लड़ाई में भाग लिए थे। इसलिए निस्संदेह कह सकते हैं कि उपन्यास का आधार यथार्थपरक है। वरिष्ठ समालोचक डॉ सत्यनारायण व्यास का कथन इस संदर्भ में युक्ति संगत लगता है, "इतिहास को पलायन समझना आधुनिक बोध नहीं है क्योंकि इतिहास को मनुष्य की तीसरी आँख कहा जाता है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की एक महत्वपूर्ण किंतु भुला दी गई घटना राजस्थान के वागड़ अंचल के मानगढ़ नरसंहार पर प्रकाशित उपन्यास 'धूणी तपे तीर' को लेकर व्यक्त किये। इस उपन्यास का आख्यान यद्यपि स्वतंत्रता आंदोलन है तथापि आदिवासी समुदाय की उपेक्षा और गरीबी इसमें क्षोभ के साथ आ गई है।"[1]

स्वतंत्रता आंदोलन को केंद्रीय विषय बनाकर लिखाज्र गया प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्र गोविंद गुरु आदिवासियों की जीवन - शैली को सुधारने के लिए भरसक प्रयास करते हैं, वे कहते हैं, "दारू पीना बुरी बात है। उनके साथ कुछ आदिवासी भी उठक - बैठक करने लग जाते हैं जिससे माहौल खराब होता है। यह दारू बंदी हमारी मुहिम के खिलाफ है। हम इन्हें दारु पीने से नहीं रोक सकते, लेकिन इनके डेरों का हमारे इलाके में , वह भी खाज्रसकर बस्तियों के आसपास रहना ठीक नहीं है।"[2]

भारत में अंग्रेजों की रणनीति के कारण शोषित आदिवासी वर्गों की सामाजिक व्यवस्था, रीति - रिवाज आदि खतरे में पड़ गई। यहाँ शोषण की शृंखला हम देख सकते हैं। अंग्रेजों से लेकर महाराणा, सेठ, साहूकार, जमींदार तक सब कहीं शोषण की परंपरा मौजूद है। 'धूणी तपे तीर' उपन्यास में शोषण का प्रभाव आदिवासी जीवन के विभिन्न पक्षों में हम देख सकते हैं।

सामाजिक पक्षः उपन्यास के मुख्य पात्र गोविंद गुरु की राय में- "राज के आदमी हमपर अनेक प्रकार के अत्याचार करते हैं और जागीरदार हमसे बिना मेहनताना बेगार करते हैं। इन बातों पर सोचने की बजाय, हमारे आदमी दारू पीकर शरीर व माथा खराब करते हैं । अपनी औरतों को आए दिन तंग करते हैं यह बुरी आदत है। इसका विरोध हमें करना चाहिए ना? अगर ऐसी बातें न हो तो क्या हमारा जीवन सुधर नहीं जाएगा?"[3]

गोविंद गुरु जन्म से बंजारा है। वे दूसरों के प्रति संवेदनशील है। उन्होंने जो आंदोलन चलाया, सामाजिक सुधार पर आधारित है। अंग्रेजों द्वारा आदिवासियों का दमन और उनकी कुर्बानी का जीता जागता चित्रण प्रस्तुत करने वाले उपन्यास में कहीं मर्मस्पर्शी घटनाएँ हैं। भील आदिवासियों के लिए गाँव का सम्माननीय व्यक्ति मुखिया होता है। यहाँ आपसी झगड़े का निपटारा गाँव की पंचायत करती है। मुखिया का सहायक तडवी होता है जो लगान वसूल करने का काम करता है। धार्मिक अनुष्ठान पुजारा करता है और बीमारियों का उपचार खाज्रेपा । इस दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि मानगढ की सामाजिक व्यवस्था अपने आप

में पूर्ण है। लोगों को गाँव का मुखिया गोविंद गुरु पर पूरा भरोसा है।

उनका कहना है "पुलिस थाना व कचहरी में किसी भी झगड़े को मत ले जाओ। आपस में विवादों को मिल बैठकर पंच - पंचायती से निपटाओ। दरबारी अदालतों में मनमर्जी से फैसले किए जाते हैं। उनपर भरोसा मत करो। वहाँ अनावश्यक वक्त व धन की बर्बादी होती है। इससे झगड़े और बढ़ते हैं। मनमुटाव नहीं होता। पंज परमेश्वर होते हैं। पंजों की बात को सरमाथे रखाज्रे पंचायत का आदर करो। गाँव में समझदार गामेती का आदर करो।"[4]

पुरुष प्रधान समाज होकर भी भील स्त्रियों को मान्यता देते हैं। स्त्री- पुरुष दोनों मिलकर घर का काम करते हैं। स्त्री साहसी है। दारु पीने जैसी बुरी लतों के कारण आदमी लड़ता झगड़ता रहता है और घर परिवार को चलाने के लिए मेहनत करने की बजाय निठल्ले पड़ा रहता है। आदिवासी औरतें परिवार चलाने की हिम्मत लेती है, जैसे, "अरे! भरत्या! तू गया नहीं? और सुन, यह तेरी भाभी जंगल के जीवन से भली भांति परिचित है। तेरे को डरने की जरूरत नहीं है। वह सारा काम कर लेती है।"[5]

देशी राजा भी ब्रिटिश सत्ता के दबाव में अपनी जनता के प्रति अधिक क्रूर हो गए। ब्रिटिश या रजवाड़ी फौज द्वारा विद्रोही का दामन कठिन हो गया तो स्थानीय भील आदिवासियों की 'मेवाड़ भील कोर' नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया गया। गोविंद गुरु ने शोषण से त्रस्त आदिवासियों की दुविधा कही तो महारावल ने उसे लालच देने की कोशिश की। लेकिन वे नहीं माना तो सीधे कहने लगा 'तू जो बोल रहा है वह राजद्रोह है'। गोविंद गुरु को गिरफ्तार करता है। लेकिन उनकी रिहाई के लिए हजारों आदिवासियों द्वारा हलचल मचाने लगा तो उनकी रिहाई कर दी।

अंग्रेजी सरकार अपनी आय बढाने के लिए आदिवासियों के खिलाफ तरह तरह के नए कायदे - कानून लागू करने की कोशिश करती है। रियासत का महारावल विजय सिंह कहता है "वनोपज पर नियंत्रण और अबकारी नीति को पूरी तरह लागू करना तब तक संभव नहीं होगा जब तक गोविंद गुरु की गतिविधियों पर अंकुश नहीं लगाया जाए।"[6] इसलिए वे मनगढ़ की पहाड़ी पर पूर्णिमा के उत्सव में आए आदिवासी जनसमूह के नरसंहार की योजना बनाती है। हत्याकांड में 1500 से अधिक आदिवासी शहीद हुए।

धार्मिक पक्ष :- भील और मीणा आदिवासियों की धार्मिक व्यवस्था परंपरा से जुड़ी है। गोविंद गुरु में हिंदुत्व का प्रभाव ज्यादा रहा है। उपन्यास में इसका संकेत है, "धर्म प्रचार अर्थात भक्तिभाव भरे गीतों और भजनों को याद किए रहना, नया सृजन करना तथा भजन और वक्तव्य के माध्यम से संप सभा के धार्मिक विचारों का प्रचार करना जिसमें सफाई से रहना, स्नान करना, तुलसी की माला पहनना, कंठी जाप करना, चंदन तिलक लगाना, धूणी में हवन के उद्देश्य से घीर डालना, घी का दीप जलाना, मुख्य तिथियों पर और विशेषकर पूर्णिमा के अवसर पर नारियल चढ़ाना आदि इसमें शामिल था।"[7]

बाबा देव भीलों का प्रमुख देव है। कुटजा देव बीमारी से इनको बचाता है। लेकिन कलांतर में हनुमान, महादेव, राम इत्यादि की उपासना वे करने लगे। भील या मीणा जाति के लोग दुःख के अवसर पर देवी - देवताओं की शरण लेते हैं। देवों में महादेव की महिमा बड़ी है। "लेखक का कहना है, सूर्रा बावड़ी के बारे में यह कहावत प्रचलित थी कि बावड़ी बहुत प्राचीन है और इसे भोलेनाथ ने स्वयं अपने हाथों से बनाया था काफी बरसों तक शिव व पार्वती यहाँ रहे थे कहते हैं तभी से आदिवासियों के लोक देवताओं के अलावा एकमात्र आराध्य देव उनके लिए भगवान शिव ही है।"[8] गोविंद गुरु के प्रभाव से कुछ लोग हिंदू धर्म के अनुयायी रहे। यह भील व मीणा का एक तरह से हिंदूकरण था। उपन्यास में लेखक कुरिया के माध्यम से यह प्रकट करते हैं, "गोविंद गुरु आदमी तो भला है धर्म की बातें करता है आदिवासियों में पड़ी बुरी लतों को छुड़ाने की बातें करता है। यह हमारे लोग देवताओं और पुश्तैनी धर्म की। सीख की जगह केवल धूणीवाले धर्म की बात क्यों करता है।"[9] भील गोविंद गुरु को साधु मानते हैं। लेकिन मिशनरियों का प्रभाव भी उनके बीच में पाया जाता है। मिशनरी ने जगह-जगह स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना की लेकिन उनकी यह मदद निस्वार्थ नहीं थी उन्होंने बड़ी भारी

संख्या में आदिवासियों को ईसाइयत अंगीकार करवाई उपन्यास में ऐसा प्रसंग है, "उदयपुर के चर्च ने अकाल पीड़ित लोगों के लिए खेरवाड़ा में आशियाना खोला कई अनाथों को मिशनरी अपने साथ ले आए हैं। हैजा व प्लेग की महामारियों से बचाव करने के लिए चिकित्सा सुविधा भी उन्होंने मुहैया करवाई इस दौरान उन्होंने काफी आदिवासियों को ईसाई धर्म अंगीकार करवाया।"[10]

गोविंद गुरु में धर्म का प्रभाव इतना गहरा है कि वे अपने प्रवचनों और भजनों की शुरुआत तुलसीदास की चौपाइयों से करते है। उनका मानना है, समस्याओं का कारण भगवान का कोप है। वे कहते हैं, "धर्म के रास्ते पर नहीं चलने से अनावृष्टि, बाढ और महामारी फैलती है जो प्रकृति के माध्यम से भगवान का कोप है।"[11] भीलांचल में सामाजिक, धार्मिक सुधार को प्रभावी बनाने के लिए कई जगह कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। गोविंद गुरु स्वयं भजन रचते थे जिसमें समाज सुधार और धार्मिक उपदेश होते थे। पूरे इलाके में संत सुरमल जी मावजी महाराज और गोविंद गुरु के भजन गाए जाते थे। संप सभा का यह भजन खूब मशहूर था।

सांस्कृतिक पक्ष : 'धूणी तपे तीर' उपन्यास में आदिवासियों के सांस्कृतिक जीवन का बखूबी वर्णन मिलता है। आदिवासियों की वेशभूषा भी उनकी एक प्रमुख सांस्कृतिक पहचान है। इसका उल्लेख उपन्यास में है "पुरुषों ने अघोवस्त्र के नाम पर रेजे का पंजा पहन रखाज्र था युवा व अघेड माथे पर अंगोछे का मंडासा और वृद्ध लोगों ने पगड़ी बांध रखी थी। उनका शेष बदन उघाडा था। जवान स्त्रियों ने घाघरे चोली और औढ़नी से अपना शरीर ढंक रखाज्र था। उनके पैरों और कलाइयों पर गिलट के बिछिया छल्ले कडे न चूड़ियां थी। फैनी और बोरलौं से उनके माथे सजे हुए थे। किसी किसी ने वन- मोगरा या चंमपा के फूल बालों में ठूंस रखे थे। अधिकांश बुजुर्ग महिलाओं ने अधे के घाघरे और अंगिया पहन रखी थी और साधारण रंग की ओढ़नी उनके सिर को ढंके हुए थी।"[12]

आदिवासियों के पारंपरिक नृत्य में हाथजोड़ियाँ, पगपासणियाना, जालॉणियाना, मूरिया, गवरी आदि प्रमुख है। वे विभिन्न प्रकार के वाद्यों का इस्तेमाल करते थे, जैसे थाली , मटका, ढोलकी, बांसुरी आदि। इस नाच - गाने में युवक - युवतियाँ एक दूसरे की ओर आकर्षित होते थे और अपने परिजनों को अपनी पसंद से अवगत करा देते हैं। परिजन बात आगे बढ़ाते हुए उनका रिश्ता तय करते हैं।

भील संस्कृति में लिंग भेद, वर्ग भेद और वर्ण भेद नहीं है। उनकी संस्कृति भारत की सबसे प्राचीनतम संस्कृति है जो भारतीय संस्कृति की नींव मानी जाती है। भील संस्कृति में परिश्रम व मेहनत की बड़ी महिमा है। वे वर्तमान में जीते हैं। भूत और भविष्य की चिंता उनमें नहीं है। उन्हें अपनी आदिम संस्कृति से बहुत लगाव है, बड़ा प्यार है। भील या मीणा आदिवासियों की संस्कृति की विशेषता सामूहिकता है। सामूहिकता उनमें कायम है। खेतों में सामूहिक कृषि कार्य की उदात्त प्रथा हलमा अस्तित्व में है। लेखक ने इसका उल्लेख किया है, "सब जंगल कटाई के लिए राजी थे। सब मिलजुल कर सुबह से इस काम में लग जाएँगे यह तयकर चैन की नींद सोएं।"[13] सामूहिक स्तर पर भाईचारा का भाव रखकर चलने के लिए संप' शब्द का इस्तेमाल करते थे। गोविंद गुरु का कहना है "संप के नाम पर हम सब भाई- बहन -हेल -मेल की भावना से आपसी संबंध मजबूत करेंगे यही मेल जोल हमें एक दूसरे से जोड़ेगा और हम संगठित होकर अपने हितों की रक्षा करेंगे।"[14]

आदिवासी संस्कृति की एक खूबी है अतिथि - सत्कार। गोविंद गुरु के माध्यम से इसकी ओर संकेत मिलता है "पहले भगत की पूरी बात सुन। इस तरह भगत की बात बीच में काटना मेहमान की बेकदरी है।"[15]

भील व मीणा संस्कृति की रक्षा करने में स्त्रियों की अहम भूमिका है। भील स्त्रियाँ चहार दिवारी में रहकर घर की शोभा मात्र नहीं बैठाती है चाहे कृषि हो या शिकार या फिर लड़ाई का मैदान ही क्यों न हो वह हर जगह अग्रसर रहती है।

भील व मीणा आदिवासी बड़े अंधविश्वासी है। वे भूत, प्रेत, चुड़ैल आदि में विश्वास रखते हैं और इससे रक्षा पाने के लिए ओझा की शरण लेते हैं। गुरल्या भोपा के माध्यम से लेखक इसका समर्थन करते हैं, "गुरल्या ने दूसरी शादी नहीं की थी। पुस्तैनी भोपागिरी में मन लगाता रहा। लोगों के दुःख - दर्द को अपनाता रहा जैसा जानता

था उसी झाड़ - फूंक से लोगों का संकट- हरण करने में संतोष करता रहा' ।"[16]

राजनीतिक पक्ष : भील परंपरागत राजनीतिक व्यवस्था का पालन करनेवाले भारत के आदिम निवासी हैं। उनकी अपनी शासन व्यवस्था है। आर्यो के भारत आते समय घुमक्कड़ कबीलों के रूप में भी उनके राज्य अस्तित्व में आये थे। उपन्यास में ऐसे कई प्रसंग है "तुम्हें पता नहीं कि इस पूरे आदिवासी इलाके में पुराने जमाने में हमारे राजा महाराजा हुआ करते थे। कोई दूसरा हम पर राज नहीं कर सकता था।"[17] वहाँ के कई इलाकों के नाम आदिवासियों के नाम से साम्य रखते हैं। जैसे डूंगर के नाम से डूंगरपुर, बसिया भील के नाम से बांसवाड़ा , बूंदा मीणा के नाम से बूंदी, कोटिया भील के नाम से कोटा शहर। राजपूत ने उनके राज्य को अपने अधीन में रखा। प्राचीन काल से भीलों का स्वतंत्र शासन रहा है। इसका नेतृत्व मुखिया करता है। लेकिन राजपूत ने उनके भोलेपन का फायदा उठाकर राज्य छीन लिए।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित राजनीति में महाजनी शोषण का स्वर भी मुखरित है। गोविंद गुरु की राय में, "साहुकारी से हमें अनेक कारण के लिए कर्ज लेना पडता है। कौन - सा हिसाब किताब है कि कई बार चुकाने के बाद भी कर्जा माथे चढ़ा रहता है।"[18] उपन्यास में महाजनी शोषण का जिक्र है - "सूदखोर महाजन कर्ज के झूठे सच्चे कागद हिंदू और मुसलमान के नाम से बनाके रख छोड़ते हैं और झगड़ा करके उसे सच्चे झूठे कर्ज में गरीबों के घर का माल गाय, बैल, भैंस, बकरी बगैरह और जो भी सामान होता है उसे कर्ज में वसूल कर लेते हैं। एक कागद जाली और उस पर अपने व अपने कामदार के दो - चार गवाहों के दस्तखत करके रख छोड़ते हैं और जबकि अदालत में किसी और से नालिश का काम पड़ता है तो ये ठग बनिए उस जाली कागद का सबूत पेश कर देते हैं। अदालत उस जाली कागद को सच्चा मानती हैं।"[19]

अपनी अस्मिता, अधिकार और जमीन के लिए आवाज उठायी आदिवासियों की पारंपरिक राजनीतिक व्यवस्था पूरी तरह बिगड़ जाती है। ईस्ट इंडिया कंपनी और देसी शासकों के हस्तक्षेप से गांव का मुखिया बेबस हो जाता है। गोविंद गुरु द्वारा बनाई गई संप सभा प्रशासन का विरोध करती हैं। अंत में मानगढ़ पहाड़ पर अंग्रेजों से वे युद्ध करने लगे और युद्ध में उन्हें हार का मुँह देखना पड़ा।

'धूणी तपे तीर' उपन्यास के द्वारा श्री. हरिराम मीणा ने भील व मीणा आदिवासी जीवन - यथार्थ को समाज के समक्ष रखने की जो कोशिश की है, बिल्कुल सराहनीय है। उपन्यास पूरा पढ़ने से पता चलेगा कि उपन्यासकार अपने पुरखों के प्रति कितना ईमानदार है। उनके पुरखाओं ने अंग्रेज और देसी शासन से कितने परेशान थे और इसे दूर करने के लिए जी तोड़कर जो परिश्रम किया था, पाठकों को आत्मसात कराने के लिए सचमुच सक्षम है -भील व मीणा आदिवासी जीवन के विभिन्न पक्षों से पाठकों को परिचित कराने के साथ वे यह भी सिद्ध करते हैं कि आदिवासियों की अपनी परंपरा है, स्वतंत्रता आंदोलन में उनका हस्तक्षेप है जो भारत के इतिहास से कभी भी निकाला नहीं जा सकता। इसकी अपनी अहमियत है, अस्मिता है जो इतिहास के पन्नों में आज और आगे भी सुरक्षित रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरावली उद्घोष, पथिक वर्मा, पृष्ठ संख्या -71
2. धूणी तपे तीर, हरिराम मीणा , पृष्ठ संख्या- 236
3. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या. -128
4. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -70
5. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -165
6. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या- 233
7. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -178
8. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 119
9. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -85
10. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -155
11. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -211
12. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -78
13. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -280
14. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -71
15. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -43
16. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -149
17. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -118
18. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -98
19. वही पुस्तक पृष्ठ संख्या -105

प्रोफेसर, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम

मधु काँकरिया की कहानियाँ : नारी अस्मिता की तलाश

अतुल्या ए

भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं साहित्य में नारी को एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण पद प्राप्त है। भारत में नारी को देवी मानकर पूजते हैं, मातृःदेवो भवः कहते हुए उसका स्थान सभी संबंधों से उपर मानते हैं तो दूसरी और उसी नारी को कुप्रथाओं और नरकीय जीवन की यातनाओं की आग में जलाते हैं। वैदिक काल से ही स्त्रियों की दुर्दशा एवं पतन की यात्रा शुरू हुई। आधुनिक काल में इन कुकर्मो के खिलाफ नारी अपना प्रतिशोध दिखाने लगी। वह शिक्षित होकर समाज की कुप्रथाओं के विरुद्ध लड़ने के लिए सक्षम बनी। वह अपनी अस्मिता की पहचान करने लगी। सुप्रसिद्ध समकालीन महिला कहानीकार मधु कांकरिया जी ने भी अपनी कहानियों में नारी जीवन के संघर्ष तथा नारी अस्मिता की तलाश आदि मुद्दों का यथार्थ चित्रण किया है।

मधु कांकरिया की 'जलकुंभी' कहानी यूरोप में रहनेवाली प्रणीता नामक युवती का अपने वजूद की तलाश करना तथा उसके जीवन संघर्ष पर आधारित है। एक विदेशी दंपतियों द्वारा गोद लिए प्रणीता का बचपन और यौवन यूरोप में गुज़रती है। जब उसे पता चलता है कि उसका जन्म भारत में हुआ था तो वह अपनी माँ की तलाश में भारत आती है। लाख ढूँढने पर भी उसे माँ की कोई खबर नहीं मिलती है। तो वह अत्यंत दुःखी और निराश होकर वापस जाने के लिए तैयार होती है, तो लेखिका उसे सांत्वना देती है- "जीवन संयोग का दूसरा नाम है प्रणीता! हमें अपनी इच्छा के बिना ही जीवन में जीने केलिए धकेल दिया जाता है,क्या यह हमारे हाथ में है कि हम अपने जन्म का समय, परिस्थिति,स्थान या माँ-बाप तय करें? इसलिए अपनी जड़ों को लेकर तुम परेशान मत हो प्रणीता, तुम जलकुंभी की तरह बनो,जो जहाँ होती है,वहीं अपने जड़ों को फैला लेती हो।"

'जलकुंभी' नामक कहानी में अपने अस्तित्व की जड़ों को खोजनेवाली एक युवति की मानसिक द्वंद्व का सजीव चित्रण हुआ है। माँ-बाप के होने पर भी वह अपने को अपूर्ण और अस्तित्वहीन समझती है। अपनी अस्मिता की तलाश में उसे आखिर निराशा प्राप्त होती है। जीवन के नज़दीक रहनेवाली मधु जी की यह कहानी पाठकों को भी भाव-विभोर करती है।

मधु जी की 'सहेली' कहानी की नायिका तवलीन पति के अत्याचार तथा शोषण के शिकार होने पर भी अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्षरत है। कहानी के सभी स्त्री पात्र अपनी अस्मिता की तलाश में है। तवलीन जो शादी के पहले सितार बजानेवाली, ग़ज़ल गानेवाली, क्रियाशील एवं जीवंत लड़की थी, वह शादी के बाद सेहमी-सेहमी दिखाइ देती है। पति द्वारा प्रताड़ित तवलीन अपने जीवन घुट-घुटकर बिता रही है। तवलीन की सास की हालत भी अत्यंत दुष्कर थी। वो औरत परिवार और पति की सेवा में इतनी मग्न थी कि अपना अस्तित्व तक भूल गयी थी।

इस प्रकार परिवार की सेवा करते करते अपना अस्तित्व भूलनेवाली घरेलु औरतों की दयनीय दशा का यथार्थ वर्णन इस कहानी में हुई है।

मधु जी की 'फैलाव' नामक कहानी में भी स्त्री अस्मिता को तलाशती हुई पात्र दिखाई देती है। कहानी की नायिका एम एस सी पास श्रुति अपने पति के दफ्तर में काम करती है। वह घर और ऑफिस के सभी कार्य सफलतापूर्वक संभालती है। पहले तो श्रुति सबकुछ एक साथ संभालने में सक्षम थी। बाद में ऑफिस के काम के बोझ इतना बढ जाती है कि घर और ऑफिस संभालना उसके लिए मुश्किल बन जाती है। इसी बीच थकान और

ऑफिस के मानसिक दबाव के कारण श्रुती क्षितिज की कामवासना को नकारती है, इससे क्षितिज नाराज़ होता है। क्षितिज के पुरुषत्व को ठेस पहुँचने के कारण वह ऑफिस में श्रुति को सबके सामने डाँटता है तो श्रुति समझ जाती है कि बिस्तर पर नकारने का प्रतिशोध क्षितिज ले रहा है। इस प्रकार बिस्तर की लड़ाई दफ्तर तक फ़ैल जाती है तो श्रुति निराश होकर दफ्तर से चली जाती है। वह अपने आपको समझाती है कि- "उसने एक प्रयास किया था,अपने ज़िन्दगी की सीमित परिधि को फैलाने का, पहले उसकी ज़िन्दगी में सिर्फ बिस्तर था फिर आया दफ्तर अब यह मुकाम कि बिस्तर और दफ्तर गडडमड्ड हो गए हैं।"

इसप्रकार 'फैलाव' कहानी स्वावलंबी और आत्मनिर्भर होकर अपनी सीमित परिधि को विस्तृत बनानेवाली एक युवती के जीवन संघर्ष का चित्रण है जो जीवन के विकासोन्मुख पथ पर में चलनेवाली स्त्री समाज के लिए प्रेरणादायक है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मधु काँकरिया की उपर्युक्तकहानियों के स्त्री पात्र जीवन के संघर्षों तथा समस्याओं का सामना करके अपनी अस्मिता तथा अस्तित्व की पहचान करने में सफल हुई है। 'अर्धनारीश्वर' की संकल्पना करनेवाले भारतीय समाज में स्त्री अपनी शक्ति एवं क्षमता को पहचानकर पुरुषों की भाँति जीवन के सभी क्षेखानें में कार्यरत है। इसी सत्य का उद्घाटन मधु जी ने अपनी कहानियों में किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जलकुंभी - मधु काँकरिया- पृ.77
2. वही - पृ.124
3. और अंत में ईशु - मधु काँकरिया- पृ.84

शोध छाखान

हिंदी विभाग, कार्यवट्टम कैंपस

केरल विश्वविद्यालय , तिरुवनंतपुरम

प्रश्नोत्तरी

डॉ. रंजीत रविशैलम

1. "साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है" यह परिभाषा किसकी है?
2. अपभ्रंश के प्रथम कवि कौन थे?
3. सूफी काव्य का उद्देश्य क्या है ?
4. "तुम निद्युत बन जाओ पाहुन, मेरे नयनों पर पग-पग घर"–पंक्ति किसकी है?
5. नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना किस वर्ष में हुई थी?
6. साधारणीकरण संकल्पना के उद्गाता कौन है?
7. बनारस क्षेत्र की बोली को क्या कहा जाता है?
8. तमिल किस भाषा परिवार की भाषा है?
9. 'कितने पाकिस्तान' किसका उपन्यास है?
10. "मंगल का विधान करने वाले दो भाव है।" –किसका कथन है?
11. 'आलोचना का विषय कवि नहीं, कविता है।' – किसका कथन है?
12. राजा लक्ष्मण सिंह ने अभिज्ञान शाकुंतल का अनुवाद कब कियाथा?
13. 'पिंजरे में मैना' किसकी आत्मकथा है?
14. बालकृष्ण भट्ट किस पत्रिका के संपादन कर्म से जुड़े थे?
15. गोस्वामी तुलसीदास की रचना कवितावली किस भाषा की रचना है?
16. खडीबोली के लिए सुनीति कुमार चटर्जी ने किस शब्द का प्रयोग किया है?
17. 'शिवपालगंज' किस उपन्यास से संबंधित है?
18. 'कविता के नए प्रतिमान' के रचनाकार कौन है?
19. 'पतंग और चरखडी' किसका काव्य संग्रह है?
20. 'मेरा जीवन प्रवाह' किसकी आत्मकथा है?

उत्तर पृष्ठ 58 में

कुमार अंबुज की काव्य यात्रा

डॉ अन्सा ए

शोध सार: कुमार अंबुज का काव्य जगत अत्यंत विस्तृत एवं वैविध्य पूर्ण है। आपकी काव्य साधना अस्योत्तर युग से प्रारंभ होती है जो अब भी अनवरत रूप से ज़ारी है। आप जटिल अनुभवों के संवेदनशील कवि हैं। स्थानीयता की पहचान आपका काव्य वैशिष्ट्य है। आपकी आरंभिक कविताएँ इसका सबूत हैं। स्थानीय रंगत के साथ उनमें वर्तमान जटिल यथार्थ के गहन अनुभव भी है। यह सब मूल्य मिलकर आपके काव्य कौशल को विशेष भाव भंगिमा तथा नवीन आयाम प्रदान करते हैं। नीलाभ के अनुसार-"उनकी कविता में जीवन का वैविध्य और सहजता है। उसमें अवसाद भी है और आशा भी। वे अपने समय को, अपने समय के समाज को और उसकी राजनीति को कविता में खुद अपने लिए उपलब्ध करते हैं ताकि उसे हमें भी उपलब्ध करा सके।"[1] इस तरह उनके काव्य में अपने इर्द-गर्द की रोज़मरा की दुनिया उसकी सारी भलाई-बुराई के साथ प्रकट हुई है। आपकी काव्य साधना से किवाड़ (1992), क्रूरता (1996), अनंतिम (1998), अतिक्रमण (2002), अमीरी रेखाञ्र (2011) शीर्षकीय कविता संकलनों का सृजन हुआ है।

बीज शब्द : ग्राम्य संवेदना की कविताएँ, शहरी संवेदना की कविताएँ, वर्तमान यथार्थ से संपृक्त कविताएँ, भविष्य के प्रति उम्मीद रखने वाली कविताएँ, अन्य संवेदनाएँ।

मूल आलेख: कुमार अंबुज की रचनाधर्मिता का विकास ग्रामीण परिवेश से हुआ है। ग्रामीण परिवेश से ही उन्होंने अपने सृजन तंतुओं को पाला है। गाँव और कसबाई जीवन के साथ उनका यह विशेष लगाव आपके काव्य में सब कहीं दृष्टिपात हुए हैं। आपका आरंभिक सर्जन इसका सबूत हैं। आजीविका वश ग्राम से शहर आ जाने पर भी उन्हें गाँव की याद हमेशा सताते रहते हैं। शहर के दम घुटने वाले यांत्रिक जीवन शैली ही इसके कारण के रूप में बतलाया जा सकता है। आपकी प्रारंभिक कविताओं को छोड़कर शेष सभी कविताएँ शहरी जीवन की विडंबना, व्यस्तता, यांत्रिकता, इससे उत्पन्न अलगाव बोध, संवेदन हीनता, संबंध शून्यता, अमानवीयता, बाज़ार प्रदत्त वातावरण और इससे उपज अन्य संस्कृतियों को उभारती हैं।

कुमार अंबुज ने अपनी कविताओं में वर्तमान वातावरण का चित्रण करके नई उपभोक्ता संस्कृति के दौरान हमारी सभ्यता व संस्कृति और मानव की मानसिकता में आए बदलाव पर चिंता व अकुलाहट व्यक्त किया है। क्योंकि यह बदलाव मानवीयता तथा जीवन मूल्यों के खिलाफ होता है। कवि जीवन मूल्यों के विलुप्त होते इस वर्तमान दुर्घट समय में इंसान में इंसानियत का होना अनिवार्य मानते हैं। इसे बरकरार रखने के लिए आपकी वाणी कार्यरत है।

ग्रामीण वातावरण, ग्राम व कसबाई लोक जीवन-शैली, रीति रिवाज, जीव जंतुओं के प्रति कवि का आत्मिक लगाव आदि का चित्र करती है कुमार अंबुज का पहला काव्य संकलन है 'किवाड़'। प्रस्तुत संग्रह में आपने मानवीय संवेदना, जीवन मूल्य एवं सांस्कृतिक गरिमा से सम्पन्न समय का चित्र उकेरते हुए ग्राम्य संवेदना की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। यह आपके काव्य विकास का पहला चरण है।

'क्रूरता' काव्य संकलन कुमार अंबुज के काव्य विकास की दूसरी सीढ़ी है। अपना प्रथम काव्य संग्रह 'किवाड़' में कवि लोक जीवन के साथ अपने

आत्मिक रिश्ते का गवाही देकर अपने समय की विसंगतियों को दर्शाते हैं। यहाँ 'क्रूरता' की कविताओं में कवि ने नई सभ्यता के नतीजतन उपज स्थिति गतियों का सविस्तृत निरूपण किया है। ये कविताएँ वर्तमान के नस को उसकी सारी जटिलताओं के साथ चित्रित करने वाली हैं। ऐसे नृशंसतापूर्ण समय की व्यवस्था के प्रति कवि का डटकर विरोध ज़ाहिर है। इन विरोधी स्थिति गतियों से ही कवि कुमार अंबुज के लिए काव्य सर्जना की प्रेरणा मिली है। 'क्रूरता' की कविताएँ इसका प्रमाण हैं।

कुमार अंबुज के काव्य विकास का तीसरा सोपान है 'अनंतिम' काव्य संकलन। प्रस्तुत काव्य संकलन की कविताएँ हमारे वर्तमान कठिन तथा नृशंस समय के सामाजिक कटु यथार्थो से उद्‌भूत हैं। अपने पहले दो काव्य संग्रह 'किवाड़' और 'क्रूरता' की कविताओं के ज़रिए कुमार अंबुज ने यह सिद्ध कर दिया है कि आप एक कवि के रूप में अपने समय व समाज के अंतर्विरोधों, विडंबनाओं और नग्न वास्तविकताओं का चित्रण करने वाले कवि हैं। 'अनंतिम' संकलन की कविताओं में उन्होंने सर्वहारा वर्ग की जीवन स्थितियों को जानने-परखने की कोशिश की है और उनके प्रति अपनी गहन अकुलाहट का भी इज़हार किया है। इन्हीं के साथ इसमें कवि समाज के निम्न-मध्य वर्ग, दमित एवं असहाय आम आदमी के जीवन संघर्ष की अवरोधी स्थितियाँ और उनकी व्यथा का सटीक चित्रण करते हैं। आम मानव की नियति और बद किस्मत भरी उसकी दर्दनाक ज़िंदगी उभारकर कवि ने वर्तमान समाज के हरेक पक्षों को उजागर किया है।

'अतिक्रमण' कुमार अंबुज के काव्य विकास का चौथा चरण है। इसमें कवि अपने पूर्व वर्ती काव्य संकलनों की तरह वर्तमान समाज की गतिविधियों पर विचार करते हैं। प्रस्तुत संकलन की कविताएँ अमानवीयता के बढ़ते अतिक्रमण के समाज में जीवित रहने के रास्ते पर संघर्ष करते आम मानव और उसके द्वारा भुगताए गए कटु अनुभवों की अभिव्यक्ति करती हैं। इसमें जीवन की विविधता और दैन्यता के दर्शन साफ दृष्टव्य है। 'अतिक्रमण' की कविताएँ एक प्रतिबद्ध कवि के क्रमिक रूप से अभिवृद्धि प्राप्त प्रतिभा का परिचायक हैं।

कुमार अंबुज की काव्य साधना का पाँचवाँ सोपान है 'अमीरी रेखा'। प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ अपने पूर्ववत् संकलनों की तरह साधारण आम आदमी की दीन दशाओं का इज़हार करती हैं। इस संग्रह की कविताओं की भाव भूमि के लिए कवि अप्रत्याशित जगहों में नई-नई राहों की तलाश करते हुए दीख पड़ते हैं। यह देखा जा सकता है कि 'किवाड़' से लेकर 'अमीरी रेखाञ्र' तक आते-आते कुमार अंबुज की जीवन दृष्टि अत्यंत अनुभवी, परिवर्धित, सुपक्व सी लगती है। अतएव आपकी कविताएँ अपनी सीमाओं को लांघ कर नई अभिरुचियों, बहसों और चुनौतियों का कारण बनती हैं।

कवि अपनी ज़िन्दगी में हुई कई घटनाओं को बड़ी तटस्थता के साथ देखते हैं 'ज़रा-सी देर में' कविता में। प्रस्तुत कविता में कवि अपनी स्मृतियों के सहारे अपनी खोयी हुई ग्रामीण ज़िन्दगी की मिठास का अनुभव इस प्रकार करते हैं- "ज़रा- सी देर में बड़ा हो गया मैं /और गाँव की सिवान से बाहर निकल आया/शहर की लड़की से प्यार किया /और ज़रा-सी देर में वह लड़की/लिपिस्टिक की दुनिया में गायब हो गयी/ज़रा-सी देर में मैं शराब पीने लगा/ कॉलेज की आखिरी साल की परीक्षा से भाग आया/ नौकरी खोजते हुए भूल गया मैं /गेहूँ- चने के खेत / मेथी की भाजी और एक कोस दूर कुएँ का पानी।"[2]

यह कविता कवि की गहन जीवनानुभव की अभिव्यक्ति करती है। गाँव के साथ कवि का जो आत्मिक रिश्ता व लगाव है उसका प्रकटीकरण यहाँ मिलती है।

कुमार अम्बुज की कविताओं में शहरीकरण के नतीजतन उपज यांत्रिक सभ्यता और उसका मानव पर पड़ते असर का अच्छा खासा चित्रण मिलता है। यांत्रिक सभ्यता के इस युग में मानव का जीवन नीरस एवं तनावग्रस्त होना स्वाभाविक है। 'चुपचाप' कविता में कवि ने यांत्रिकता के कारण मरुस्थल के समान उजड़ गए मानवीय ज़िन्दगी को उजागर किया है। कवि कहते हैं कि मशीनी सभ्यता सामाजिक जीवन को चुपचाप निगल रहा है साथ ही हमारे पवित्र सभ्यता व संस्कृति में क्षय पहुँचा रही है। इसका चित्रण कवि यों करते हैं- "पत्ते चुपचाप पीले पड रहे हैं/ रास्तों की धूल/चुपचाप जमा हो रही है रक्त में / दरिद्रता ने उजाड़ दिए हैं जीवन /मरुस्थल फैल रहा है चुपचाप / मशीनी दैत्य चुपचाप तरीकों से निगल रहा है / मेरा सामाजिक जीवन।"[3]

कवि का कहना है कि हर आदमी में उदासीपन है, लेकिन इस उदासीपन में टिका रहने के बजाय इसे खींचकर फेंकना ज़्यादा बेहतर है। ऐसा करे तो व्यक्ति में उम्मीद का संचार शुरू होता है। इस के लिए चाहिए कुछ अंगुलियाँ, थोड़े से कुछ हाथ और उम्मीद से भरी हुई थोड़ी-सी हिम्मत। कवि का संकेत हैं- "मैं इस जोंक उदासी को /खींचकर फेंकना चाहता हूँ /और इस के लिए चाहिए फ़िलहाल मुझे /कुछ अंगुलियाँ थोड़े-से कुछ हाथ /और उम्मीद से भरी हुई थोड़ी-सी हिम्मत / धीरे-धीरे इस अतल उदासी में / फैल रही है एक आकांक्षा।"[4]

'अनंतिम' काव्य संग्रह की एक सशक्त कविता है 'जंजीरें', जो वर्तमान समाज में कई तरह की जंजीरों में जकडे हुए आदमी की बदहालत का चित्रण करते हुए मानव मुक्ति की प्रबल आकांक्षा इज़हार करती है। कवितांश हैं- "अक्सर होता था कि जंजीरों को काटने की कोशिश में /उनकी भारी कड़ियाँ गिर पड़ती थीं हमारे माथों पर / माथे पर पड़े उन निशानों से पहचान लिए जाते थे/हम अपने लोगों के बीच/ बाकी दूसरे समझते थे कि ये निशान यों ही /लड़ाई-झगड़े के हैं या कहीं गिर पड़ने के / इन वजहों से भी मुमकिन होता था कि /जंजीरें कटी जा रही थी थोड़ी-थोड़ी रोज़-रोज़।"[5]

प्रस्तुत कविता के ज़रिए कवि संस्कारों की तरह तथा पवित्र बंधनों की तरह युगांतर से हमारी त्वचा से चिपकी हुई जंजीरों को पहचानने और तोड़-फोड़ने की प्रेरणा देते हैं।

कुमार अम्बुज की कविता समाज के सबसे पराधीनस्त जनता की दैन्यता व पीड़ा को शब्दबद्ध करती है। आपने 'अमीरी रेखा' कविता में श्रमशील जिंदगी का जीवंत चित्रण किया है। इसमें उन्होंने ख़ामोशी से सब कुछ सहन करने वाले श्रमिक और दिन रात काम करने पर भी सही मजदूरी न मिलने पर नमक तक न खरीदने के लिए तड़पती उनकी निर्धनता व टूटती जिंदगानी का चित्रण किया है। कविता के कुछ प्रकरण इस प्रकार हैं- जो इस वक्त नमक भी नहीं खरीद पा रहा है/या घर की ही उस स्त्री के पास /जो दिन-रात काम करती है /और जिसे आज भी सही मजदूरी नहीं मिलती"[6]

थके-हारे श्रमिकों की मजबूरी यहाँ प्रकट हुई है। कवि की प्रगतिशील दृष्टि शोषित व पीड़ित साधारण जन की मुक्ति के लिए संघर्षरत है।

देश के वर्तमान राजनीतिक प्रणालियों के और भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के पोल खाज़ेलने वाली कविताएँ हैं- "चुनाव, पक्ष, फ़िलहाल, अधिकार, बहस की ढलान पर"आदि। कविताएँ जैसी- 'किसी भी दिन, क्रूरता, असंबंध, ईश्वरीय संगठन' आदि धार्मिकता को उभारती हैं। मौजूदा परिस्थिति के मुताबिक हमारे समाज में जो नई-नई संस्कृति पनपती जा रही है वह हमारी परंपरागत सभ्यता व संस्कृति को संकटग्रस्त

बना देती है। यह हमारे परंपरागत मूल्यों एवं मान्यताओं को भी विनष्ट कर देती है। इसकी ओर इशारे करने वाली कविताएँ हैं- 'मेरे पास, शहद, चुपचाप, नई सभ्यता की मुसीबत आदि।'

अम्बुज की काव्य संवेदना अप्रत्याशित जगहों में कविता की खोज करती है। 'अनंतिम' काव्य संग्रह की छिपकलियों की स्मृति, हारमोनियम की दूकान से, तबादला, प्रक्रिया जैसी कविताएँ इसका नमूना पेश करती हैं।ये कविताएँ विस्थापन के ज़माने में अपनी आँखों से ओझल हो जा रही वस्तुओं का ज़िक्र करने के साथ इनका अपने अस्तित्व को बचाए रखने के संघर्ष को प्रकट करती हैं।

'अनंतिम' काव्य संकलन की शीर्षकीय कविता है 'अनंतिम' जो भली-भांति शीर्षक की सार्थकता को इज़हार करती है। प्रस्तुत कविता में कवि के भीतर के अपराजित मनुष्य का स्वर गूँज उठता है जिसमें उम्मीद और अदम्य जिजीविषा भरा पड़ा है- "यह थकान, यह हताशा, यह मलबा, यह पराजय/ कुछ भी अंतिम नहीं/देखते-देखते अभी उठूँगा पस्ती को रौंदता हुआ/आएगा मेरे भीतर से मेरा अपराजित मनुष्य/फिर से शुरू होगा जीवन /धूमिल हो रहीं चीज़ों पर फिर से आएगी चमक"[7]

यहाँ कवि अपने को पराजित नहीं मानते हैं। तमाम तरह की मुसीबतों एवं जीवन संघर्षों से मुठभेड़ करके वे ज़िन्दगी को आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रयासरत है।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः कुमार अम्बुज की सृजनात्मकता के पहले चरण की कविताएँ ग्राम्य संवेदनाओं के रंग से भरपूर हैं। उनके प्रारंभिक दौर की कविताओं को छोड़कर शेष सभी कविताएँ अपने समय व समाज की सच्चाईयाँ तथा उसमें जीते मानव की जीवन संघर्षी - स्थितियों और उनकी बदलती मानसिकता पर विचार करती हैं। तमाम तरह के जीवन संघर्ष के अवरोधी स्थितिगतियों से गुजरने के बावजूद भी उनकी कविता जीवन राहों में आलोक फैलाकर भविष्य के लिए नई आस्था जगाती है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उनके काव्य वैशिष्ट्य है। इससे बढ़कर उनकी कविता मानवीयता की हिमायती है। अतः कहा जाए तो कुमार अम्बुज की काव्य संवेदना ग्राम से होकर शहर से गुज़रकर अब वर्तमान समय की विविध गतिविधियों का आकलन करते हुए विकास के पथ पर अग्रसर होती हुई दिखलाई पड़ती है।

सन्दर्भ

1. संपा. शैलेन्द्र कुमार शैली- राग भोपाली, जीवन का जीवट, नीलाभ, पृ. सं. 43
2. कुमार अम्बुज- किवाड़, ज़रा-सी देर में, पृ. सं. 24
3. कुमार अम्बुज- क्रूरता, चुपचाप, पृ. सं. 35
4. कुमार अम्बुज- किवाड़, उदासी, पृ. सं. 31
5. कुमार अम्बुज- अनंतिम, जंजीरें, पृ. सं. 17-18
6. कुमार अम्बुज- अमीरी रेखाञ्र, अमीरी रेखाञ्र, पृ. सं. 22
7. कुमार अम्बुज- अनंतिम, अनंतिम, पृ. सं. 100

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अतिक्रमण- कुमार अम्बुज, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2002
2. अनंतिम- कुमार अम्बुज, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1998
3. अमीरी रेखाञ्र- कुमार अम्बुज, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2011
4. किवाड़- कुमार अम्बुज, आधार प्रकाशन, पंचकूला, द्वि. सं. 1996
5. क्रूरता- कुमार अम्बुज, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वि. सं. 2007
6. राग भोपाली- संपा. शैलेन्द्र कुमार शैली, भोपाल, वर्ष 12, अंक 2, मई 2007

सहायक आचार्य , हिंदी विभाग
सरकारी ब्रेण्णन कॉलेज , धर्मडम, तलश्शेरी
कण्णूर, केरल- 670 106,
मोबः 9995083552

‘स्मृति की रेखाएँ’ में मानवीय संवेदनाएँ और उपेक्षित समाज

विरेश

शोध सार : हिन्दी साहित्य में रेखाचित्र ; संस्मरण साहित्य की एक महत्वपूर्ण शाखाग्र है, जो आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक विकसित विधा के रूप में दर्ज हुई। रेखाग्रचित्र में किसी व्यक्ति के भाव, उसकी दशा तथा घटना का कम से कम शब्दों में प्रभावशाली एवं मर्मस्पर्शी तरीके से जीवंत अंकन करना है। इस विधा का हिन्दी संस्मरण साहित्य में विकसित करने का अभूतपूर्व योगदान छायावाद के चार स्तंभों में से एक महादेवी वर्मा को जाता है। ‘पथ के साथी’, ‘अतीत के चल चित्र’ और ‘स्मृति की रेखाएँ’ उनके संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं, जो हिन्दी साहित्य को समृद्ध करते हैं। ‘पथ के साथी’ संकलन में महादेवी वर्मा ने अपने साहित्यिक मिखानें के बड़े ही प्रभावशाली एवं सुंदर चित्र खींचे हैं। अन्य दो रेखाचित्र संकलन में महादेवी वर्मा ने उन लोगों को वर्णित किया है जो उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा न होते हुए भी कहीं न कहीं किसी मोड़ पर उनके समक्ष रहे। मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत ‘स्मृति की रेखाएँ’ इसी प्रकार का एक समृद्ध संकलित संग्रह है, जिसमें समाज का उपेक्षित वर्ग अपनी अहम भूमिका में स्थान पाता है, और इस कारण यह संकलन साहित्य में अपना महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ता दिखाई देता है। यह माना जा सकता है कि प्रत्येक रचना मानवीय सरोकार से संबंध रखती है, सरोकार अर्थात ‘परस्पर संबंध’ और यही सरोकार मानवीय संवेदनाओं को जन्म देते हैं। संवेदनाएँ ही मनुष्य को मनुष्य मानकर चलती हैं। समाज में मनुष्य का मनुष्य से और मनुष्य से इतर सभी प्राणियों में परस्पर कोई न कोई संबंध होता ही है, तथा परस्पर संबंध से संवेदनाओं का पैदा होना लाजमी है। ‘स्मृति की रेखाएँ’ रचना भावनाओं से परिपूर्ण है। इसलिए मनुष्य का सरोकार बृहद स्तर पर है, उसमें प्रेम, करुणा, क्षोभ, रोष,आदि का जुड़ाव रहता ही है। अतएव इस शोध आलेख में मानवीय संवेदनाएँ और उपेक्षित समाज को उद्घाटित करने की चेष्टा की है।

बीज शब्द- मानवीय, संवेदनाएँ, सरोकार, उपेक्षित, समाज, रेखाचित्र, संस्मरण, स्मृति।

प्रस्तावना : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है और उसी के अनुकूल तथा प्रतिकूल कार्य करता है। मनुष्य की भावनाएँ ही प्रमुख होती हैं जो संसार की प्रत्येक चेतन और अवचेतन वस्तु को स्नेह और आक्रोश की दृष्टि से देखती हैं, और जो वस्तु मनुष्य के अंतर्मन को द्रवित कर जाएँ या फिर स्नेह की फुहार भरी सजलता पैदा कर दे, तथा अपनी ओर आकर्षित कर ले, तो वह मानवीय संवेदनाओं के विकास में वृद्धि करती है। और उसका साहित्य के माध्यम से नज़र आना ही ‘स्मृति की रेखाएँ’ खींचना है। इस संसार में मनुष्य प्रत्येक वस्तु से रूबरू होना चाहता है, और उस दौरान वह अपनी भावनाओं से संबंध स्थापित करता है, यह मानवीय संबंध ही लगाव को जन्म देते हैं । भावनाएँ एक ऐसी परस्परता लिए हुए हैं, जिसमें मानवता सबसे उपर होती है। मानवीय सरोकार के संबंध में भीष्म साहनी लिखते हैं - “साहित्य का सरोकार चूंकि मानव स्थिति से होता है, इसलिए वह मानवीय - मूल्यों से, गहरी मानवीय सहानुभूति से, मनुष्य के कुशल क्षेम की चिंता से, मानवता के प्रति गहरे आत्मीय लगाव से प्रेरित होता है।”[1] यह आत्मीय लगाव ही रचनाकार को भावनाओं के नजदीक लेकर आता है जिसमें वह विचार मंथन कर जीवन की प्रत्येक सजीवता को सम्मान और महत्व की दृष्टि से देखता है । रेखाचित्र ‘स्मृति की रेखाएँ’ में वह सजीवता देखने को मिलती है जिसमें रचनाकार ने एक ऐसे समाज को अपनी स्मृति में रखकर ; खुलकर बात की है, जो समाज की मुख्य धारा से दूर है । उपेक्षित और हाशिये पर है,तथा अपनी मेहनत एवं लगन से जी रहा है। संस्मरण परंपरा को देखें तो पता चलता है, कि संस्मरण उन लोगों के लिए ही लिखे जाते रहे, जिन्होंने अपना व्यक्तित्त्व प्रभावशाली बनाया। लेकिन ‘स्मृति की रेखाएँ’ में महादेवी वर्मा ने उस पुराने पारंपरिक ढांचे को तोड़ दिया, जो व्यक्ति विशेष से होकर चलता था। इस संस्मरण रेखााचित्र में समाज के कामगार वर्ग ने अपना स्थान पाया तथा अति सामान्य जीवन जी रहे आम पाखानें की रेखाओं को महादेवी जी ने अपनी स्मृतियों में खींच कर समाज के हवाले किया। स्मृति की रेखाएँ से पाठक गुजरता है तो पाता है, कि महादेवी वर्मा का कहीं न

कहीं इनसे गहरा लगाव है, जिससे वे इस समाज के प्रति आकर्षित होती हुई गुजरी ही नहीं बल्कि अपने विचारों में उन्हें पिरोती भी गईं । महादेवी वर्मा का उपेक्षित समाज को सजलता की दृष्टि से देखना, ग्रामीण समाज की स्त्री पीड़ा को समझना तथा मानवीयता से भरे स्वभाव को जानना, एक संवेदनशील मनुष्य की पंक्ति में ले जाकर स्थापित कर देता है।

समाज, परिवार में उपेक्षित स्त्री- साहित्य में उपेक्षित समाज का चित्रण अनेक विधाओं में हुआ है। उनकी पीड़ा, सुख-दुख सभी साथ - साथ उसमें आए, लेकिन कथेतर साहित्य की गद्य विधा में संस्मरण साहित्य के भीतर इस प्रकार के समाज का उद्‌भव पहली बार महादेवी वर्मा के समय में हुआ । नेता- राजनेता, बड़े कलाकारों आदि से हटकर भक्तिन, चीनी फेरीवाला, जंग बहादुर, मुन्नू, ठकुरी बाबा, बिबिया, गुंगिया जैसे वास्तविक पात्र संस्मरण रेखाचित्र में दर्ज हुए। इन वास्तविक पाखानें का जीवन संघर्ष यथार्थ से भरा हुआ था। इनका यह संघर्ष पाठक वर्ग को प्रभावित ही नहीं कर पाया बल्कि अंदर से झकझोर भी गया। भक्तिन, बिबिया, गुंगिया, ठकुरी बाबा आदि पाखानें के माध्यम से भारतीय समाज के ग्रामीण समाज का यथार्थ समझने को मिलता है । स्त्री उपेक्षा के विषय में बताते हुए महादेवी वर्मा भक्तिन के परिवार द्वारा किए व्यवहार के संबंध में लिखती हैं "जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है। जब उसने गेहुएँ रंग और बिटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि सास तीन-तीन कमांउ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के उपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक - भुशुंडी - जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं । छोटी बहु के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया।"[2] पितृसत्तात्मक समाज में व्याप्त है कि पुरुष के आगे स्त्री का कोई महत्व नहीं। भक्ति न का बाल्य अवस्था में विवाह हो जाना, और फिर तीस उम्र पहुँचते - पहुँचते उसका विधवा हो जाना, एतएव ससुराल में तीन बेटियों को जन्म देने की सजा काटना, परिवार वालों के तंग सुनना, बाद में तीनों बेटियों का जोड़ - तोड़ कर विवाह सम्पन्न करना, फिर बड़ी बेटी के पति की मृत्यु हो जाना, तथा भक्तिन का घर छोड़ बाहर रहना ; उसका अपने परिवार, समाज से मोहभंग का संकेत देता है। उपेक्षित हुई भक्तिन के विषय में महादेवी जी आगे लिखती हैं कि "जिठानिया बैठकर लोकचर्चा करतीं... वह मठ्ठा फेरती,टूटती, पीसती, राँधती और उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं, कंडे पाथती। जिठानियाँ अपने भात पर सफेद राब रखकर गाढ़ा दूध डालतीं और लड़कों को औटते हुए दूध पर से मलाई उतार कर खिलातीं । वह काले गुड की डली के साथ कठौती में मठ्ठा पाती और उसकी लड़कियां चने - बाजरे की घूघरी चबतीं।"[3] भक्ति न बेटियों को जन्म देने की वजह से समाज में उपेक्षित की गई। यह उपेक्षा उसे परिवार से विरक्तता की ओर लेकर जाती है। अगर कहा जाए कि उसने बेटियों को जन्म देकर अपने जीवन की हानियों में वृद्धि की तो यह कहना असंगत न होगा। भक्तिन वर्तमान समय में भी प्रासंगिक बनती नज़र आती है, पुत्र कामना समाज में आज भी जोरों पर है, भ्रूण हत्या इसका ठोस प्रमाण है।

महादेवी वर्मा परिवार से उपेक्षित हुई भक्तिन को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हुए लिखती हैं और भक्तिन को सुख - दुख की सार्थकता का साथी मानती हुई, उससे एक प्रकार का गहरा संबंध जोड़ते हुए चलती हैं, अपने परस्पर संबंधों को बताते हुए वे लिखती हैं "भक्तिन और मेरे बीच में सेवक - स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है ; क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी से चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी - बारी से आने- जाने वाले अंधेरे- उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना । वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं, जिसे सार्थकता देने के लिए ही हमें सुख - दुख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे हुए है।"[4] भक्तिन के जीवन संघर्ष को महत्व देते हुए महादेवी वर्मा की भक्तिन के प्रति आत्मीयता स्पष्ट समझ आती है जो मानवीयता को उद्‌घाटित करता है ।

रेखाचित्र की इस अगली शृंखला में 'चीनी फेरीवाला' मानवीय संवेदनाओं से संबंध जोड़ती रचना है। इस रचना का मुख्य पात्र चीनी मात- पिता विहीन मजदूर आदमी है,

जो भारत आकर सिल्क के कपड़े गली-गली घूमकर बेचता है, बचपन से ही माँ- बाप का साथ छूट जाना और फिर बड़ी बहन का लापता हो जाना उसके भीतर अकेलापन को भर देता है, लेकिन वह अपने जीवन में हार नहीं मानता तथा छोटी उम्र से ही कपड़े का काम सीखता है । उसका गली- गली घूमकर कपड़े बेचना किसी अपने की तलाश करना है; और यह अपना, उसकी बचपन में बिछुड़ी बहन ही है, उसकी इच्छाओं में पहली इच्छा ईमानदार बनने की और दूसरी अपनी बहन को ढूंढ लेने की है, इसके लिए वह प्रतिदिन भगवान बुद्ध से प्रार्थना करता है। महादेवी वर्मा ने चीनी फेरीवाले की बीती जिंदगी की तहों में जाकर उसकी पीड़ा और संवेदनाओं को जानने का कार्य किया है वस्तुतः इस रेखाचित्र को पढ़कर महादेवी वर्मा की संवेदशीलता को देखा जा सकता है उसका रेखाचित्र खींचते हुए वे लिखतीं हैं "धूल से मटमैले सफेद किरमिच के जूते में छोटे पैर छिपाये, पतलून और पैजामे का सम्मिश्रित परिणाम जैसा और कुरते तथा कोट की एकता के आधार पर सिला कोट पहने, उधड़े हुए किनारों से पुरानेपन की घोषणा करते हुए हैट से आधा माथा ढके, दाढ़ी - मूँछ विहीन दुबली -नाटी जो मूर्ति खड़ी थी, वह तो शाश्वत चीनी है । उसे सबसे अलग करके देखने का प्रश्न जीवन में पहली बार उठा।"[5] वस्तुतः चीनी फेरीवाले की जिंदगी संघर्षो से भरी हुई दिखाई देती। उसके जीवन का संदेश वैश्विक नजर आता है, देश की सीमा से परे किसी ऐसे व्यक्तिऔर समाज के विषय में जानना; यह इस रेखाचित्र में स्पष्ट समझा जा सकता है।

महादेवी वर्मा लिखती हैं "मेरी उपेक्षा से उस विदेशीय को चोट पहुंची, यह सोचकर मैंने 'नहीं' को और अधिक कोमल बनाने का प्रयास किया, 'मुझे कुछ नहीं चाहिए भाई!' चीनी भी विचित्र निकला, 'हमको भाय बोला है तब जरूल लेगा हाँ?'... भोत अच्चा सिल्क लाता है सिस्तर! चाइना सिल्क, क्रेप'... बहुत कहने सुनने के उपरांत दो मेजपोश खरीदना आवश्यक हो गया । सोचा - चलो छुट्टी हुई । इतनी कम बिक्री होने के कारण चीनी अब कभी इस ओर आने की भूल न करेगा । पर कोई पंद्रह दिन बाद वह बरामदे में अपनी गठरी पर बैठकर गज को फर्श पर बजा - बजाकार गुनगुनाता हुआ मिला । मैंने उसे कुछ बोलने का अवसर न देकर व्यस्त भाव से कहा -अब कुछ न लूँगी। समझे? चीनी खड़ा होकर कुछ निकलता हुआ प्रफुल्ल मुद्रा से बोला -सिस्टर के वास्ते हैंकी लाता है - भोत बेस्त, सब सेल हो गया । हम इसको पाकेत में छिपा के लाता है।"[6] चीनी द्वारा महादेवी वर्मा को सिस्तर कहना और फिर यह कहना कि 'हमको भाय बोला है तब जरूल लेगा- हाँ ... भोत अच्चा सिल्क है सिस्तर' मानवीय संबंधों को मजबूत करता है, वे आगे कहती हैं "देखाञ्र, कुछ रूमाल थे। उदी रंग के डोरे से भरे हुए किनारों का हर घुमाव और कोनों की कलात्मकता ही नहीं व्यक्त कर रही थी, जीवन के आभाव की करु ण कहानी भी कह रही थी । मेरे मुख के निषेधात्मक भाव को लक्ष्य कर अपनी नीली रेखाञ्रकृति आँखाञ्रें को जल्दी-जल्दी बंद करते हुए वह एक साँस में - सिस्तर का वास्ते लाता है, दोहराने तिहराने लगा।"[7] रूमालों को हाँथ में लेते हुए महादेवी जी ने कलात्मकता के साथ-साथ जीवन के अभाव को परखते हुए चीनी फेरीवाले की ओर गौर से देखा वह जल्दी- जल्दी दोहरा रहा था सिस्तर के वास्ते लाता है इस दोहराने में करुण भरे चित्र उभरते हैं। जिसमें लेखक उस नीली रेखाकृति आँखाञ्रें में गहरी सजलता को देख पाती हैं। 'स्मृति की रेखाञ्रएँ' में 'जंग बहादुर' तीसरा चित्र है जिसमें समाज से उपेक्षित ऐसे लोग हैं जो अपनी जीविका के लिए कुली का काम करते हैं। गर्मी आरंभ होने पर यह लोग पहाड़ों में जाकर नए ग्राहकों को तलाश करते हैं और फिर शरद ऋतु आते ही वे पुनः अपने गाँव में लौट जाते हैं। रेखाचित्र का चित्र तीन; जिसमें जंगबहादुर सिंह और धन सिंह दो मुख्य पात्र साथ-साथ कुली का काम करते हुए कठिन और जटिल जीवन जीते हुए दिखाई देते हैं। इनके अतिरिक्तपूरा कुली समाज इन पहाड़ों में अपनी रोजी कमाते हुए जीवन बसर कर रहा है। महादेवी वर्मा लिखती हैं "नेपाल, भूटान आदि से कुली इस ओर आते हैं उनकी विशेषता का मापदंड बोझा उठाने की शक्ति मात्र है...यह दीन अधिक हैं कुरूप कम! धूप में बैठकर कपड़ों में से जूएँ बीनता हुआ वानर का स्मरण दिलाता है ये भी मनुष्य हैं,इसे हम अभ्यासवश ही समझते हैं -इनमें मनुष्य का रूप पाकर नहीं।"[8] अपने संस्मरण में इस उपेक्षित समाज को दिखाते हुए रचनाकार के भीतर अनेक प्रश्न जन्म लेते हैं, जंग बहादुर जैसे अनेक लोग हैं जो महादेवी जी के रेखाचित्र आये हैं, रचनाकार की संवेदनाओं से यह अछूते नहीं रहे। यह लोग दरिद्रता का बोझ उठाते हुए जी रहे हैं, एक स्थान पर महादेवी जी जंगबहादुर की दशा देखते हुए उसके नाम से मिलान करते हुए एक नजर उसकी शारीरिक चोटों पर

डालती हुई कहती हैं "मैंने संदेह से प्रश्न से प्रश्न किया - क्या नाम है तुम्हारा? उत्तर मिला -जंगबहादुर सिंह।' नाम ने नाम के आधार को ठीक से देखना आवश्यक कर दिया। पर्वतीय पथ और पत्थरों की चोट से टूटे हुए नाखून और चुटीली उँगलियों के बीच में ढाल बनी हुई मूँज की चप्पल मानो मनुष्य को पशु बनाकर भी खुर न देने वाले परमात्मा का उपहास कर रही थी।"[9] 'नाम ने नाम के आधार को ठीक से देखना आवश्यक कर दिया' यह कहना संस्मरणकार की मानवीय संवेदनाओं को उद्घाटित करता है। जंग बहादुर अपने नाम के अनुकूल दिखाई देता है समाज से वह प्रत्येक दिन जंग करता नजर आ रहा है।

चित्र संख्या छह 'बिबिया' का चित्र खींचता है तथा साथ ही साथ उपेक्षित समाज की स्त्री की पूरी झलक देता हुआ यह पाठ कह उठता है कि 'जीवन - पथ सुगम नहीं है।' महादेवी वर्मा बिबिया के विषय में बताते हुए लिखती हैं- "केवल उसके स्वभाव में अभिमान की माखान इतनी थी कि वह दोष की सीमा तक पहुँच जाती थी। अच्छे कपड़े पहनना उसे अच्छा लगता था और यह शौक ग्राहकों के कपड़ों से पूरा हो जाता था गहने भी उसकी माँ ने कम नहीं छोड़े थे। विवाह संबंध उसके जन्म से पहले ही निश्चित हो गया था। पाँचवें वर्ष में व्याह भी होगा । पर गौने से पहले ही वर की मृत्यु ने उस संबंध को तोड़ जोड़ने वालों का प्रयत्न निष्फल कर दिया। ऐसी परिस्थिति में, जिस प्रकार उच्च वर्ग की स्त्री का गृहस्थी बसा लेना कलंक है, उसी प्रकार नीच वर्ग की स्त्री का अकेले रहना सामाजिक अपराध है।"[10] बिबिया अपने घर परिवार में उपेक्षित की गई स्त्री थी। दो जगहों पर उसका विवाह किया गया लेकिन वह अपने चरित्र का प्रमाण दे न सकी । तत्पश्चात उसे समाज वालों ने तिरछी निगाह से देखा। अनेक प्रश्न उस पर दागे गए। इस संबंध में उसकी भाभी उसे संकेत करके कहती "जिनका न घर, न दुआर, उनका का दुसरन कै गिररिस्ती विगौरे का चाही? सरमधरम के बरै तौ चिल्लू भर पानी बहुत है।"[11] संक्षेप में बिबिया के जीवन को अगर देखें तो उसका जीवन बड़ा ही कठोर नज़र आता है समाज से शोषित हुई वह अपने घर से भी तिरस्कृत होती दिखाई देती है, सामाजिक उपेक्षा तथा मनचलों द्वारा उसका विरोध करना, बिबिया के विरोध करने का प्रतिशोध है। उसे चरित्रहीन घोषित करना पूरी कथात्मक बुनावट पाठक वर्ग को अपनी ओर खींचती है, बिबिया का स्वभाव समाज के लोगों को खटकता है, तथा उसका मजबूत होना ही उसके जीवन में संघर्षो को जन्म देता है।

'गुँगिया' रेखाचित्र तमाम मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत है इसमें एक उदाहरण देकर अपनी बात को कहना कठिन प्रतीत होता है। जीवन में अपनी बद्ध - जिह्व की विवशता गुँगिया के समक्ष आई। घर से लेकर अपने ससुराल, समाज में तिरस्कृत हुई गुँगिया का जीवन दुख में बीता। इकलौता पुत्र मोह गुँगिया को बेचैन किए हुए है उससे दूर गए हुलासी को वह एक बार देख लेना चाहती है इसलिए जब वह लेखिका से पत्र लिखवाने के लिए आती है तो स्वयं लेखिका हैरान हो जाती हैं "इतनी सुख-दुख कथाएँ लिख चुकने पर भी एक व्यक्ति उसके ऐसे प्रत्यक्ष सुख-दुख की भाषा नहीं जनता है,ऐसा विश्वास गुँगिया के लिए सहज नहीं था। मैं उसे अनेक बार देखते- देखते अब उसकी उपस्थिति की अभ्यस्त हो चुकी थी। आते समय वह मेरी प्रतीक्षा में बैठी हुई मिलती थी। गुँगिया को यह उपनाम गूँगेपन के कारण मिला है।"[12] अपने जीवन की रिक्तता भरने का अवसर उसे पहली दफा तब मिला, जब उसके जीवन मे हुलासी का आना हुआ, "अपने ही समान वाणीहीन शिशु की टिमटिमाती हुई आँखों में गुँगिया ने कौन-सा संदेश पढ़ लिया, यह तो वही जाने; पर वह उसे लौटा देने का साहस न कर सकी। बहनोई ने दबी जबान से उसे घर ले चलने का प्रस्ताव किया ; पर उसके मुख पर अस्वीकृति की कठोर मुद्रा देखकर बीच में ही रुक गया।"[13] गुँगिया की इस रिक्तता को भरा देख गाँव वालों ने 'दातों तले उँगलियाँ' दबा लीं। लेकिन जब हुलासी को गाँव वालों से पता चलता है कि वह उसकी माँ नहीं है तो वह उसे छोड़ कहीं दूर निकल जाता हैं, लेकिन गुँगिया का मातृत्व प्रत्येक क्षण हुलासी के लिए बेचैन रहता है। अपने पत्र में हुलासी के लिए लिखवाते हुए अपनी संवेदनाएँ लेखिका उड़ेलती हुई गुँगिया लिखवाती है कि "तुम्हारी गुँगिया अम्मा बारह बरस से तुम्हारी राह देख रही है, क्या यह लिखना चाहिए? पूछने पर गुँगिया की अनुकूल सम्मति प्राप्त हुई।"[14] बारह सालों से बेटे से दूर गूंगी स्त्री की कोई शिकायत नहीं है अपनी संवेदनाओं का गुबार बाँधे गुँगिया अपने बेटे के इंतजार में हैं। लेखिका कहतीं हैं "जब कभी मैं गुँगिया को देखने पहुँच जाती, तब वह अपनी थकावट की चिंता न करके विविध संकेतों और चेष्टाओं द्वारा हुलासी के पत्र की बात पूछती।"[15] गुँगिया की सभी

संवेदनाएँ अपने पुत्र हुलासी में बसी हैं। वह बीमार है लेकिन अपने पुत्र का संदेश पाने के लिए सचेत है और जब तब पत्र के विषय में पूछती रहती है। लेकिन गुँगिया के अंत समय तक हुलासी का कोई पता ना मिला। महादेवी वर्मा लिखती हैं "जीवन में मैंने जितने विचित्र व्यक्ति और जैसे रहस्यमय इतिवृत देखे-सुने हैं उनके सामने कल्पना के सभी निर्माण फीके पड़ सकते हैं ; पर गुँगिया मेरे हृदय में जो करुण विस्मय जगा सकी थी, वह फिर नहीं जागा।"[16] महादेवी वर्मा के लिए गुँगिया का जीवन करुण विस्मय लिए हुए रहा। उसकी जीवन जीने की आगद विलक्षणता और अपने बेटे का मोह उसे जीवन के अंतिम समय तक आशावान बनाए रहा। गुँगिया जैसे पात्र लेखक हृदय के भीतर अपनी एक अमिट जगह निर्मित करते हैं जो इस रेखाचित्र में नजर आया है।

निष्कर्ष- कहा जा सकता कि उपरोक्तरेखाचित्र में उपेक्षित समाज का चित्रण महादेवी जी ने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से किया हैं, उपेक्षित समाज के पीड़ित, निरीह, मजदूर, विधवा स्त्री आदि मूक भाषा बोलते हुए दिखाई दे जाते हैं। यह पहले ही कहा जा चुका है कि कथेतर साहिय की गद्य विधा में संस्मरण सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए लिखे जाते रहे थे, जिन्होंने अपने कार्य क्षेत्र में प्रसिद्धि पाई हुई थी; नेता, अभिनेता, कलाकार,तथा बड़ी विभूतियाँ संस्मरण के कथ्य बने थे। लेकिन आजादी से पूर्व ही महादेवी वर्मा ने समाज के उपेक्षित वर्ग को सहानुभूति की दृष्टि से रेखाचित्र में चित्रित किया। आज की नारीवादी दृष्टि के उद्भव से पहले ही स्त्री पीड़ा को वे मार्मिक ढंग से साहित्य में लेकर आई। महादेवी वर्मा के विषय में दूधनाथ सिंह लिखते हैं "महादेवी ने जब स्त्रियों की समस्याओं पर सोचना-लिखना शुरू किया तो उन्हें किसी तरह का प्रलोभन नहीं था। यह एक जेनुइन मानसिक स्थिति थी। यह उनका सचेतपन था जब उन्होंने शृंखला की कड़ियों का अनुभव किया। जिन कड़ियों को वे खुद तोड़ चुकी थीं, उनकी दिली ख्वाहिश थी कि वे दूसरी संगिनियों के लिए भी टूटें।"[17] शृंखला की कड़ियों को तोड़ते हुई महादेवी वर्मा ने समाज की उपेक्षित स्त्री को अपने लेखन का कथ्य बनाया। अतः स्मृति की रेखाएँ- रेखाचित्र मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण है। हृदय विहीन समाज ने इन मूक प्राणियों के भाव को समझा ही नहीं यह कहें कि अपना जीवन तिल-तिल कर मार रहे इस समाज की मानवीय संवेदनाओं के भीतर उतरने का कार्य महादेवी जी ने किया। 'भक्तिन' के प्रति स्वयं महादेवी वर्मा का या फिर अपनी अनकही भाषा में भक्तिन का स्नेह, वहीं चीनी फेरीवाला हो, मेहनतकश मजदूर जंगबहादुर हो, फिर चाहें 'गुँगिया' की मूक भाषा ही क्यों न हो, यह भाषा लेखिका के अंतर्मन को महसूस होती हैं। अर्थात् कह सकते हैं कि सभी ने अपनी एक अलग छाप छोड़ी है, स्वतंत्रता से पहले का ग्रामीण समाज कितना रुढ़ि भरा था, यह इस रेखाचित्र में नज़र आता है। इसमें आए सभी पात्र व्यवस्था में भले मानस हैं,जो बिना बताएँ सब कह रहे हैं।

संदर्भ

1. प्रो. मृदुल शुक्ल, मानवीय सरोकारों के परिप्रेक्ष्य में भीष्म साहनी का रचना विवेक, अनुशीलन, जुलाई 2015
2. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, लोकभारती पेपर बैकस,महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद -211001, छठवाँ संस्करण : 2018, पृष्ठ सं. 10
3. वही पृ सं 10, 11
4. वही पृ सं 18
5. वही पृ सं 21
6. वही पृ सं 21, 22
7. वही पृ सं 21
8. वही पृ सं 29, 30
9. वही पृ सं 30
10. वही पृ सं 85
11. वही पृ सं 96
12. वही पृ सं 107
13. वही पृ सं 109
14. वही पृ सं 116
15. वही पृ सं 116
16. वही पृ सं 117, 118
17. अर्चना सिंह (सम्प.), महादेवी वर्मा विचार का आईना कला साहित्य संस्कृति, लोकभारती पेपरबैकस, प्रयागराज -211001, पहला संस्करण 2023, पृ सं.20

शोधार्थी (पीएच.डी.)

हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' के उपन्यास 'हज़ार घोड़ों पर सवार' में सामंती समाज के अंतर्गत स्त्री जीवन का चित्रण

श्यामसुंदर एवं डॉ राजेंद्र कुमार सेन

सारांश : साहित्य की विभिन्न विधाओं में मानव जीवन का पूर्ण रूप से चित्रण करने की क्षमता अन्य माध्यमों की अपेक्षा उपन्यास में अधिक मानी जाती है। उपन्यास गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है, जिसमें समाज में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं का सजीव चित्रण होता है। उपन्यास में घटनाओं एवं पाखानें के द्वारा उपन्यासकार समाज के सच को यथार्थ रूप में प्रकट करने का प्रयास करता है। हिंदी साहित्य में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का यथार्थपरक लेखन में विशिष्ठ योगदान है। हिंदी साहित्य के यथार्थवादी उपन्यासकारों में इनका योगदान महत्व रखता है।राजस्थान साहित्य अकादमी के द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित राजस्थानी हिंदी साहित्य के गौरव यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने अपने लेखन द्वारा राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र के बीकानेर अंचल के सामाजिक जीवन के यथार्थ को उभारने का प्रयास किया है।इनके उपन्यासों में 'हजार घोड़ों पर सवार' एक प्रमुख उपन्यास है, जिसके पात्र बीकानेर अंचल के तत्कालीन समाज को उद्घाटित करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यास 'हजार घोड़ों पर सवार' में स्त्री जीवन से सम्बन्धित है, जिसमें बीकानेर अंचल सामंती समाज में स्त्री-जीवन का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से चित्रण करने का प्रयास किया है।

बीज शब्दः समाज, स्त्री, सामंती मूल्य, रूढ़ि, परंपरा, संस्कार आदि

मूल आलेखः भारतीय समाज की वैदिककालीन कबीलाई व्यवस्था में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। वैदिककालीन नारी को देवी के समान पूज्य माना गया है। सृष्टि निर्माण की प्रकिया में सम्पूर्ण ब्रह्मांड दो महत्वपूर्ण घटकों पर निर्भर करता है- स्त्री और पुरुष। सृष्टि और सर्जन में नारी की भूमिका का उल्लेख करते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं- "पुरुष स्वभावतः निसंग एवं तटस्थ होता है, नारी ही उसमें आसक्ति उत्पन्न कर उसे नवनिर्माण के प्रति उन्मुख करती है।"[1] स्त्री और पुरुष दोनों को समानता के धरातल पर प्रतिष्ठित करना मानव समाज का प्रमुख उद्देश्य है। वैदिककाल में इन दोनों का समाज में समान महत्त्व था। इस काल में नारी की स्थिति बहुत अच्छी थी और इसलिए इस काल को नारियों के लिए आदर्श काल कह सकते हैं । ऋवैदिक काल की नारी विद्या, शील, ममता, यश तथा सम्पति का प्रतीक थी तथा उसकी अवस्था समाज में उन्नत एवं समृद्ध थी। इस काल में स्त्रियों को शिक्षा के क्षेत्र में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त था तथा वे धार्मिक उत्सवों में भी सहभागिता हेतु स्वतंत्र होती थी। नारी को वैदिककाल में सामाजिक, धार्मिक, तथा राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता थी। वह अपनी इच्छानुसार समाज के समस्त कार्यों में भाग लेती थी। तत्कालीन समाज में स्त्रियों के लिए सामाजिक बुराइयाँ जैसे- बाल-विवाह, सती-प्रथा, पर्दा-प्रथा आदि नहीं थीं।

कालांतर में सामाजिक व्यवस्था में धीरे-धीरे परिवर्तन आना आरंभ हो गया और स्त्री का उत्पादन प्रक्रिया में योगदान कम होता गया। स्त्रियाँ धीरे-धीरे आर्थिक दृष्टि से पुरुष पर निर्भर होने लगी और सामाजिक दृष्टि से उनकी अस्मिता पुरुष की छाया रूप में महत्त्वहीन होती चली गयी। स्त्रियों में शिक्षा सीमित होती चली गयी और उनकी राजनीतिक भागिदारी नगण्य हो गयी। मध्यकाल तक आते-आते स्त्रियाँ अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त हो गयी। धीरे-धीरे पितृसत्ता ने अनेक नियम और बंधन स्थापति कर दिए जिसके चलते स्त्री शोषण का शिकार होती चली गयी। पुरुष ने अपनी जरूरत के मुताबिक स्त्री के शोषण के अनेक नियम बना दिए। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा कहती हैं- "स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध भी अपने क्षणिक विनोद और उतरदायित्व हीनता के कारण पशुत्व का ही एक रूप था। वह यदि पशुत्व से निकृष्ट नहीं कहा जा सकता तो

उत्कृष्ट होने का गर्व भी नहीं कहा जा सकता। कहीं पुरुषों का समूह स्त्री संग्रह से विवाहित था, वहीं एक पुरुष के अधिकार में पालतू पशुओं के समान बहुत सी स्त्रियाँ थीं और कहीं स्त्रियों की संख्या न्यून होने के कारण अनेक पुरुष एक स्त्री पर अधिकार रखते थे। सारांश यह है कि यहाँ जनसंख्या के अनुसार जैसे आवश्यकता थी वैसा ही नियम बन गया।"[2] नारी के शरीर, मन और आत्मा पर भी पुरुष ने एकाधिकार कर पूरी तरह से अपने वश में कर लिया। इसके साथ ही आगे चलकर सामन्तवादी एवं मध्यकालीन भारतीय समाज में विदेशी आक्रान्ताओं एवं मुस्लिम शासकों के आगमन एवं अत्याचारों से अनेक प्रकार की कुरीतियाँ जैसे बाल-विवाह, सती-प्रथा, बेमेल विवाह, महिलाओं के साथ यौन-उत्पीड़न, लैंगिक असमानता आदि बुराइयों का समाज में आगमन हुआ तथा समाज में स्त्री को शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित करने लगे।

हिंदी के लब्धप्रतिष्ठित उपन्यासकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने अपने उपन्यास 'हजार घोड़ों पर सवार' में राजस्थान राज्य के मारवाड़ के बीकानेर अंचल के आस-पास के क्षेत्र की तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक आदि परिस्थितयों का चित्रण किया है। इन्होंने सामन्तवादी समाज में प्रताड़ित एवं शोषित नारी के साथ-साथ रूढ़िवादी सामाजिक विचारों से कुंठित समाज में नारी के सामाजिक जीवन का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी न होने और घर के भीतर जीवन सीमित होने के कारण स्त्रियों का सर्वांगीण विकास नहीं हो सका। आज भी बहुत सी नारियों को केवल अपने और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए साहुकारों एवं जमीदारों की वासना का शिकार होना पड़ता है।इस उपन्यास में किसी न किसी रूप में प्रताड़ित नारी का ही चित्रण हुआ है।

'हजार घोड़ों पर सवार' उपन्यास में सामंतवादी एवं ब्रिटिशकालीन मारवाड़ी समाज में दलित स्त्रियों की दशा और अपना जीवनयापन करने के उनके तरीकों का चित्रण करते हुए लेखक लिखते हैं, "कुछ चूनगारन मोहल्ले की स्त्रियाँ मैले-कुचैले और अनेक 'कारियों' के कपड़े पहने हुए उन कूड़े-करकट के ढेरों में से जलने वाली सामग्री का संचय कर रही थीं। घिन्न से दूर इनके हाथ मल-मूत्र में भर जाने के बाद भी कागज, लकड़ियाँ, चीथड़े, घास-फूस एक ओर एकत्रित कर रही थीं। उन्होंने चूड़ीदार पायजामे, घुटनों तक के कुर्ते व ओढने ओढ़ रखे थे। उनके बाल रूखे और घास की तरह कड़े थे।"[3] इस प्रकार तत्कालीन समाज में बहुत सी स्त्रियों को अपना पेट भरने के लिए समाज में घृणित एवं निम्न श्रेणी के समझे जाने वाले अनेक प्रकार के कार्यों को करना पड़ता था। तत्कालीन समाज में उच्च वर्ग के लोगों का दृटिकोण दलित स्त्रियों के प्रति क्रूरतम व्यवहार का परिचय देता है। दलित स्त्रियाँ समाज में अपमानित होकर जानवरों से भी बदतर जीवनयापन करने को विवश थी। अतः देश स्वतंत्र होने तथा संविधान लागू होने के बावजूद भी समाज का एक वर्ग अपनी बेहतर जीवन शैली के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है और बुराइयों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सका है।

आलोच्य उपन्यास की पात्र योजना यथार्थ भूमि के अनुकूल है। उपन्यास में प्रमुख स्त्री पात्रों में जानकी, हीरी, सलमी, गुन्दली, कमेड़ी, सुरींदर,सेठानी रु कमण, ललाइन आदि का नाम लिया जा सकता है।इन सब स्त्री पात्रों के माध्यम से तत्कालीन समाज में स्त्रियों को लेकर क्या धारणाएँ थी इसका निष्पक्ष चित्रण लेखक ने किया है। छुआछूत की समस्या का जीवंत उदाहरण 'गुन्दली' के माध्यम से किया है। गुन्दली पानी लेने कुवे पर गई तो माली ने दो घड़ी विश्राम करने को कहने पर वह थकी-माँदी सुस्ताने की गरज से पीपल के गटे के पास बैठ गई तो पंडित गजराज किस प्रकार उसके साथ अमानवीय व्यवहार एवं गाली देने लगता है। गुन्दली को माँ-बहिन की गाली देनी शुरू कर दी। फिर उसने लाल आँखे करके उसके पीठ पर गेडिये की दे मारी, साली नगरढोवनी ! तू विष्णु भगवान के गट्टे माथे बैठ गई। तेरा बाप आकर इसे साफ करेगा। दूजी बार यह गलती कर दी तो मादरकाढ की टांगें तोड़कर अलगी कर दूंगा। ...फिर उसने कुआ जोतने वाले माली की ओर देखकर कहा, "अरे ओ मालीडा !...इस गट्टे को धो देना।"[4]

विवेच्य उपन्यास में एक अन्य स्थान पर भंगिन के झाड़ू लगाने पर उड़ने वाली धूल उड़कर ब्राह्मण पर गिर जाने और बदले में उसके द्वारा मारपीट करने के उपरांत बहते खून से

लथपथ ललाट को लेकर भंगिन अलगरजिया बाबा को कहती है- "मैं पंडित लालचंद के यहाँ झाड़ू लगा रही थी कि वे आए। मुझे ध्यान नहीं रहा। धूल उड़कर उन पर चली गई कि बस लाठी ठक से सिर पर मार दी !यह कैसा जीवन है ? "इस जीवन से मौत भली। "यह सही है कि ढेढ़-भंगी को तो स्वर्ग में भी विसाई नहीं मिलती है।उनके लिए तो स्वर्ग में भी बेगार तैयार है।फिर इस जन्म में कैसे आराम मिले लेकिन बेवजह का अत्याचार भी नहीं सहा जाता।"[5] इस अमानवीय स्तिथि की क्रूरता को रेखांकित करते हुए उपन्यासकार ने स्पष्ट कहा है कि "तब छोटी जाति के जीने में कोई मानवीय सार्थकता नहीं थी। सामन्ती संस्कृति और सभ्यता से ग्रस्त व्यवस्था अत्यंत ही अत्याचार व अन्याय से भरी थी। वह व्यवस्था दलित मानव का शोषण कर रही थी। विशेषतः राजस्थान के हरिजन इस व्यवस्था के उत्पीड़न के बहुत शिकार थे और मानव समाज का एक हिस्सा तो जानवरों से बदतर जीवन जी रहा था।"[6]

बाल-विवाह एक सामाजिक कुप्रथा है जो भारतीय समाज के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप है।बाल-विवाह के कारण बहुत सी लड़कियों की जिन्दगी बर्बाद हो जाती है जिसका कुपरिणाम स्त्री को सारी जिन्दगी झेलनी पड़ती है। आचार्य डॉ. हरिशंकर दुबे मध्यकालीन नारी की स्थिति का चित्रण करते हुए लिखते है कि "राजपूतों की शान ने नारी के प्रति समाज के दृष्टिकोण को बदला वहीं विदेशी आततायियों के आक्रमण और वासना लोलुप दृष्टि से बचाने के लिए पर्दा प्रथा का प्रचलन हुआ। बाल-विवाहों के पीछे यही भाव था। समाज में एक और बहुपत्नी विवाहों का प्रचलन बढ़ा तो दूसरी और विधवा विवाहों का विरोध हो गया। सती-प्रथा महिमामंडित होने लगी जोहर को आदर्श माना जाने लगा। जन्मते ही कन्याओं को मार दिया जाने लगा।"[7] बाल विवाह तथा सती-प्रथा के संबंध में आशारानी ठहोरा का कथन इसका प्रमाण है "मुस्लिम आक्रमणों के दौरान लड़कियों के अपहरण की घटनाएँ बढ़ी जिसके परिणामस्वरूप बाल्यावस्था में विवाह किया जाने लगा। विधवा विवाह नीची जातियों के सभी मध्य एवं ऊँचे वर्गो में बुरा माना जाने लगा। सती- प्रथा की पद्धति चरम सीमा तक पहुँच गई थी।"[8] आलोच्य उपन्यास में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' बाल-विवाह का जिक्र पात्र 'हीरी' के माध्यम से करते है, "हीरी ने गंभीर स्वर में कहा - पदुड़ी के लिए अब बींद (वर) ढूँढना चाहिए। धरम में लिखा है कि तिरिया तेरह मरद अठारह। अपनी पदुड़ी तेरह की हो गई है। बेटी को ज्यास्ती बड़ा करने में अधरम होता है। कहते हैं जब छोरी अलगी होने लगती है तब विषकन्या हो जाती है। विषकन्या के हाथ पीले करने पर बड़ा पाप लगता है।"[9]

प्रस्तुत उपन्यास के अनुसार भारतीय समाज में नारी को अनेक प्रकार से प्रताड़ित किया जाता था। दलित एवं गरीबी से मजबूर औरत का विभिन्न तरह से शोषण किया जाता था। वह मेहनतकश होते हुए भी अपना जीवनयापन सुख से नहीं कर पाती थी और अनेक प्रकार के कष्ट उठाकर वह अपनी आत्मा के विरुद्ध जीवन जी रही थी। उपन्यास में सलमी एक गरीब और मजदूर औरत है जो हालातों की सताई हुई है, जिसकी गरीबी का फायदा उठाकर गणेश उसका देह-शोषण करता है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने सलमी के माध्यम से अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए है, 'एक गरीब मेहनतकश ! अपनी आत्मा के विरुद्ध वह जीती है। जीना ही पड़ता है। मरा नहीं जाता इसलिए जीना पड़ता है। बच्चे बिस्मिल के लिए जीना पड़ रहा है। कैसे वह गरीब पेट की आग बुझाएँ? कितनी भयानक है यह आग। जठराग्नि ! भक-भक जलती है। प्रज्ज्वलित होने के बाद नहीं बुझती। तड़फाती है। दग्ध करती है। फिर .... फिर कैसे भी हो रोटी प्राप्त करनी पड़ती है।"[10]

इस उपन्यास के माध्यम से समाज की एक और समस्या पर प्रकाश डाला गया है। समाज में कन्या जन्म को अशुभ माना जाता था। लड़के का पैदा न होना एक बहुत बड़ा अभिशाप माना जाता है।जिस औरत के लड़का पैदा न होकर लड़कियाँ होती हैं उसे समाज में बार-बार अपमानित होना पड़ता है। लड़कियों को लड़कों की तुलना में कम महत्व दिया जाता है। सेठानी रुकमण एक धनाढ्य सेठ की पत्नी है जो लड़का न होने पर बहुत दुखी है और बाबा अलगरजिया के पास पुत्र प्राप्ति के लिए आशीर्वाद लेने आती है और बाबा से कहती है- "मुझे एक लड़का चाहिए। मेरे लगातार सात लड़कियाँ हो गई हैं। इससे मैं और मेरे पति दुखी हैं। मेरे घर-परिवार में मेरी इज्ज़त खराब हो रही है। हमारे

समाज में बेटे की माँ की जो कद्र है वह बेटियों की माँ की नहीं है! आप मुझे आशीर्वाद दीजिए। मैं यहाँ आश्रम बना दूँगी।"[11]

आलोच्य उपन्यास में औसर प्रथा का भी जिक्र हुआ है, जो एक सामाजिक बुराई है। घर में बुजुर्ग की मृत्यु पर दिए जाने वाले मृत्यु भोज को औसर कहा जाता है जिसमें गाँव के सभी लोगों और अपने सभी कुटुंब एवं सम्बन्धियों को भोज दिया जाता है जिसके लिए लोगों को ब्याज पर कर्ज भी उठाना पड़ता है और वह कर्ज पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। इसी बात से परेशान होकर जब गिधू ने अपने पिता एवं ताऊ की मृत्यु पर मृत्युभोज देने का विरोध किया तो उसकी माँ और ताई विरोध करने वाली नारी के रूप में चित्रित हुई है। वह इस प्रकार विरोध करती है, हाय मैंने कैसा कपूत जाया कि वह अपने देवता सरूप बाबा व बाप को बिना पानी भेज रहा है! लखमी ताई ने घोषणा कर दी थी कि वह अपने घर का हिस्सा बेचकर भी अपने पति के पीछे औसर करेगी। उसने चीखकर कहा, "मैं निपूती हूँ तो क्या हुआ; पर मैं अपने पति को कुत्ते की तरह अकूड़ी पर नहीं फेकनें दूँगी। "जो पूत-लुगाई अपने धणी का मरने के बाद सुधारो न करा सकें, वे पाप के भगी होते हैं। कपूत होते है।"[12]

आलोच्य उपन्यास में महंत चनुली को अपने वश में कर अपनी भोग-लिप्सा के लालच में आकर चनुली और उसके पति पर किस प्रकार के हथकंडे अपनाता है और अंत में उसे डरा-धमकाकर धार्मिक पाखंडों के माध्यम से उसके पति रमेश को पागल घोषित कर चनुली को अपने वश में कर प्रमुख सेविका बनाकर उसका देह शोषण करने लगता है और धर्मानंद का उसी के परिणामस्वरूप जन्म हुआ और वह अत्यंत सुविधाभोगी बन गई थी। अतः धर्मानंद गिधू को कहता है-"वह स्त्री बहुत ही सुविधाभोगी हो गई है। लगता है कि उसकी आत्मा मर गई है। उसका मेरे प्रति जरा भी लगाव नहीं है। वह एक यांत्रिक गुड़िया है या महंत के सम्मोहन से ग्रस्त। वैज्ञानिक शब्दावली में कहे तो महंत के आंतक से भयभीत वह एक चलता-फिरता लोंदा है! मैं उसकी मनःस्थिति के बारे में राय नहीं बना सकता क्ष इसका कारण है कि मैं स्त्रियों के बारे में जरा भी ज्ञान नहीं रखता"[13]

विवेच्य उपन्यास में 'चन्द्र' ने अनमेल विवाह का जिक्र किया गया है।अनमेल विवाह के संबंध में प्रेमचंद 'निर्मला' उपन्यास में लिखते हैं- "अब तक ऐसा ही आदमी उसका पिता था, जिसके सामने वह सिर झुकाकर, देह चुराकर निकलती थी। अब उसकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था। जिसे वह प्रेम की वस्तु नहीं सम्मान की वस्तु समझती थी।"[14] इसी प्रकार इस उपन्यास में पिता द्वारा अपनी लड़की की शादी करने के बदले में पैसे लेने का जिक्र भी एक-दो जगह हुआ है। सामंती समाज में नारी को भोग की वस्तु समझा जाता था। पुष्करणा ब्राह्मण तीन हजार रूपये लेकर एक अयोग्य व्यक्तिसे अपनी लड़की की शादी करना चाहता है तो उसकी पत्नी उसका घोर विरोध करते हुए कहती है- "तू मेरी जान निकाल दे कोढ़िया, पर मैं अपनी बेटी का व्याह उस भंगेड़ी और अणकमाउ छोरे से नहीं करुँगी। "मैं तेरे सागे आकर अपने कर्मो को रोती हूँ, दिन-रात तेरे जैसे राखस के जुल्म सहती हूँ पर मैं अपनी फुटरीफरी छोरी का हाथ उस सीवल (चेचक) के सेतखाने के हाथ में नहीं दूँगी।[15]

सामन्तकाल में ठाकुर घरानों की महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था इसका भी उल्लेख विवेच्य उपन्यास में मिलता है। ठाकुर की पत्नी बीमार हो जाती है तो वह अपनी डावड़ी को ठाकुर के पास भेजती है तो डावड़ी ठाकुर से ठकुरानी के पेटदर्द के बारे में बताती है तो ठाकुर डावड़ी से कहते है- "अरे गैली रांड! ठाकुर ने तमतमाकर कहा, तू उस बालनजोगी ठकुरानी को बासती लगा दे। "जब से डेरे में आई है, कभी पेट,कभी माथा,कभी हाथ,कभी पांव! एक दिन भी निरोग व चोखी नहीं रही। मर जाए तो पिंड छूटे। कौन सी एक ठकुरानी के बिना सांभर सूनी हो जाएगी। जा, उसे कह दे कि ज्यादा दर्द हो रहा है तो थोड़ा अफीम खाज्र ले। दर्द भी मिट जायेगा और खुद भी।"[16] ऐसी कठोर और घृणास्पद बातों को सुनकर ठकुरानी के साथ आयी हुई दासी अपने मन की पीड़ा व्यक्त करते हुए कहती है, "बाई सा! इन राजे-ठाकुरों व भूपतियों के लिए लुगाई धूल के बराबर है।उससे उन लोगों को कोई मोह-प्यार नहीं है।एक मरेगी तो दूसरी आ जाएगी। कुंवारी क्षखानणी का बाप यह नहीं देखता कि उसकी बेटी का होने वाला पति कैसा है।वह

तो उँचा खाज़नदान पाकर बस अपनी बेटी का कुंवारापन मिटाना चाहता है।"[17]

विवेच्य उपन्यास में लेखक ने नारी पात्र 'जानकी' के माध्यम से ऐसी नारी का भी चित्रण किया है जिसका पति समाज में अच्छे कार्य करके जाग्रति लाना चाहता है लेकिन वह समाज के डर से अपने पति का घोर विरोध करती है।गिधू जाति-पाति की आलोचना करते हुए छुआछूत को मिटाने के प्रयास में हड्मान सांसी के घर खाना खाज़ लेता है, तो तुरंत मेघवंशियों की एक पंचायत बिठाई गई और गिधू को जाति से बहिष्कृत कर उसका हुक्का-पानी बंद कर देते है, फिर भी गिधू कोई परवाह नहीं करता है परन्तु उसके संबंधि इस वजह से मिनकी की शादी के लिए रिश्ता तोड़ने की धमकी देते है और कहते है कोई भी अपनी जाति-बिरादरी से बाहर नहीं रह सकता। गिधू एक बार तो उनका विरोध करता है परन्तु उसकी पत्नी के अफीम खाकर मर जाने की धमकी से वह पीछे हट जाता है।उसे धमकी देते हुए कहती है, "तुम अभी जाकर पंचों से माफ़ी मांगों। इसी समय जाओ। मैं तुझे कह देती हूँ कि मैं अम्ल खाकर मर जाउँगी। मैं अपनी बेटी की जिन्दगी खराब नहीं होने दूँगी। सबके बिना आदमी काम-धंधा चला सकता है पर बिरादरी के बिना नहीं।"[18] पत्नी की कटु बातों से मजबूर होकर गिधू अपनी बिरादरी के पंचों से माफ़ी मांगता है और सारी न्यात-बिरादरी को भोज करवाता है।

21वीं सदी का पाठक जब ऐसी समस्याओं के विषय में पढ़ता है तो पाता है कि कहीं न कहीं ये समस्याएँ आज भी समाज में मानस मन में आशिंक रूप से व्याप्त है। इन बुराइयों का अंत ही सच्चे अर्थो में नारी मुक्ति होगा। जब आधी आबादी यानी स्त्रियों को उनके अधिकार मिलेंगे और उनका जीवन गरिमापूर्ण होगा तभी सही मायने में हम एक सभ्य समाज कहलाने के अधिकारी होंगे। यदि स्त्रियों की दशा में सुधार होगा तब उनके साथ-साथ परिवार और भविष्य की पीढ़ी की नींव भी मजबूत होगी। यद्यपि यह उपन्यास एक अंचल विशेष की कथा और पाखानें को केंद्र में रखकर लिखा गया है परन्तु इस में लेखक की दृष्टी अत्यंत व्यापक और मानवीय कही जा सकती है। निःसंदेह सामंती समाज के सरोकारों में नारी मुक्ति का सशक्तस्वर और संवेदना इस उपन्यास में निहित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, बाणभट्ट की आत्मकथा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सोहलवा संस्करण, 2009, पृष्ठ स. 88
2. वर्मा, महादेवी, मेरे प्रिय निबंध, नेशनल पुब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1986, पृष्ठ स. 110
3. चन्द्र, यादवेन्द्र शर्मा, हजार घोड़ों पर सवार, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण, 1997, पृष्ठ. 20
4. वही, पृष्ठ.स. 21
5. वही, पृष्ठ स. 139
6. वही, पृष्ठ स. 21
7. दुबे, आचार्य डॉ. हरिशंकर, महिला उपन्यासों की नारीः प्रगति एवं पीड़ा के आयाम, अमन प्रकाशन, कानपूर, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ स. 18
8. व्योरा, आशारानी, भारतीय नारः दशा एवं दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1983, पृष्ठ.स. 7
9. हजार घोड़ों पर सवार, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' चन्द्र शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण, 1997 पृष्ठ स. 58
10. वही, पृष्ठ सं. 60
11. वही, पृष्ठ सं. 87
12. वही, पृष्ठ सं. 94
13. वही, पृष्ठ सं. 178
14. प्रेमचंद, निर्मला, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2016 पृष्ठ स. 34
15. हजार घोड़ों पर सवार, यादवेन्द्र शर्मा - चन्द्र - चन्द्र - शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1997 पृष्ठ स. 218
16. वही, पृष्ठ सं. 243
17. वही, पृष्ठ सं. 244
18. वही, पृष्ठ सं. 292

शोध निर्देशक : **डॉ. राजेन्द्र कुमार सेन**
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा

याखानविवरण

मानस कैलास

अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर

मूल : मंजु वेल्लायणि

अनुवाद : डॉ.रंजीत रविशैलम

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

सूर्यरश्मियों के अनुरूप रंग बदलते कमल की तरह है कैलास। चारों ओर पंखुडियों जैसे छोटे-बड़े पर्वत। कभी कभी एकदम सफेद कमल जैसा। स्वर्णवर्ण की सूर्य रश्मियाँ पड़ने पर स्वर्णकमल उदयास्त में कभी लालपद्म के रूप में भी दर्शन देता है।

लालपत्थर एवं काले पत्थरों से भरे पडे दोरजी पर्वत भय एवं गंभीरता का प्रतिफलन करता है। कैलास के उत्तर-पश्चिम दिशा में ही यह पर्वत स्थित है। यम का दोस्त दोर्जी अस्थिमाला पहनकर शव के ऊपर खडा होकर नाचने का विश्वास तिबतवालों को है। बौद्ध एवं पुरातन बोण धर्मवाले लोग दोर्जी की आराधना करते हैं। शरीर अग्निवर्णा है। घोडे पर सवार होता है। दुष्टों का रक्त है पसंदीदा पेयवस्तु। पसंदीदा खाद्यना दिमाग। शायद हमारे विश्वासों में जो अर्थ निवासिनी भद्रकाली है वही दोर्जी हो सकता है।

गोंपा को लक्ष्य करके दो घंटे चलने पर ही देरापुक का बोर्ड दिखाद्यई दिया। रास्ते दो दिशाओं में दिखाई देते हैं। पहला बौद्ध विहार की ओर, सीधे ही चले। कुछ दूर चलने पर पूरा रास्ता कीचड़ से लबालब हुआ दिखाई दिया। रास्ता छोड़कर उसके समांतर ही चला। कैंप के नज़दीक होने की स्थिति समझकर ही थकावट पूरा खत्म खाद्यने चुकी है। सड़क के किनारे एक घोडे का मृतशरीर। कितने ही लोगों को स्वर्ग दृश्यों की ओर अनुनय से ले जानेवालों घोडा। जैसे पेट्रोल खत्म होने पर वाहन पडा रहता है वैसे ही वह वहाँ पड़ा है। बडे ही सम्मान के साथ कितने ही यात्रियों को लेकर चलनेवाले पशु का पार्थिव सड़क के किनारे पड़े कितने ही दिनों से अपमानित होने की स्थिति में है। वहाँ से अलग कर दाहकर्म करना भी किसी को सूझा नहीं। खतरनाक रास्तों से होकर बोझ एवं यात्रियों को ठोकर मज़दूरी लेते लोगों को भी यह महसूस नहीं होता, यह दुविधाजनक है। कालपुरी के नज़दीक में स्थित कैलासवीथि में गिरनेवाले पशु हो या मानव गति समान है।

देरापुक में तारपोलिन बंधे तंपू ही उपलब्ध है। नीचे नदीतट पर जो कमरे है, उन्हें पहले आए यात्रीगण बुक कर रखा है। तंपू के पास से कैलास को देखा। आज रात ठहरने हेतु जो निवास स्थान मिला है उसके नज़दीक में है कैलास। गाइड डारजी ने कहा कि देरापुक से ही कैलास को सबसे नज़दीक देख पाता है।

हिमाच्छन्न कैलास। 'पन्नगाभरण' के पाँव तले है तंपु। पुराण में वर्णित सुमेरु। आस्था में जुड़ा कैलास। उसके पाँव तले सिर रख सकना ही महाभाग्य है। छः खाट एक के बाद एक डाल रखी हैं। खाट हिलती भी हैं।

तंपू भी मज़बूत नहीं है। अंदर तिबत के चित्र एवं कपडे से अलंकृत किया हुआ है। फिर भी आँधी या हिमवृष्टि को पार करने की ताकत उसे है या नहीं इसपर संदेह है। भवसागर को हटानेवाले साक्षात् मृत्युंजय वटक्कुमनाथ के चरण कमलों पर दण्डवत् प्रणाम करने की तरह कंपल ओढे सोने के लिए लेटा।

13. हिमशैल रुद्राक्ष

सूप, चाय, कॉनफ्लैक्स - गाइड डारजी और निमा के इस तरह चिल्लाते सुनने पर ही आँखें खुली थीं। गिलास एवं भाप निकलती केतल के साथ षेरपा लोग हँसते हुए खडे हैं। दो गिलास सूप एवं बिस्कुट खाने पर बडे ही सुकून महसूस किया। षाजु और बिजु अभी भी होश में आए नहीं थे।

'हैलो' - नज़दीक की खाट से परिचित आवाज़। साई मीरा है। थकावट के कारण तंपु की खाट पर गिरते वक्त अन्य खाटों पर कौन लेटा है, इसका ध्यान नहीं दिया था। अतुल भार्गव और खन्ना मीरा के अगल बगल की खाटों में हैं। अतुल थरथरा काँपते और आवाज़ निकालता है। मानसरोवर में देखा गया धीरज एवं ताकत उसको अब नहीं थे। कुल डरा हुआ -सा लग रहा है। अत्यंत सर्दी लगने पर भी खन्ना के भाव हाव में कोई बदलाव नहीं। वह एक सिगरेट जलाकर धूम्रपान करने लगा। मीरा ने भी सिगरेट के लिए हाथ बढ़ाया। खन्ना ने जो दो सिगरेट दी थीं उनमें एक को सूप लाने वाले षेरपा को दिया। उसकी मुस्कराहट शायद निधि पाने जैसे भाव में थी।

बरसाती से गिरा पानी तंबू के अंदर संग्रहित हो गया है। हाथ रगड़कर बाहर निकला। वर्षा पूर्ण रूप से थम गई है। षेरपा लोग खाज्ञना पकाने में व्यस्त है। तराई के गोंपा एवं नीचे के कैंप से धुआँ उठ रही है। जहाँ खाना पक रहा होता है वहाँ बहुत भीड़ है। वह आग सेंकने के लिए है। आसमान पर देखने पर पहले कैलास यात्रियों को डरानेवाली वर्षा हुई थी जैसा नहीं लग रहा है। ईश्वर का चेहरा है आसमान। नवरस उसमें स्पष्ट प्रकट होते हैं। न रूप है न भाव। चाँदनी जैसा स्मयन करता है। बारिश से कारुण्यवर्षा भी। काली घटा छाने पर क्षिप्रक्रोध। जब वह हटता है तो क्षिप्रप्रसाद।

दिवाकरन नायर, जयचंद्रन और विजयकुमार अभी आए नहीं हैं। उन्हें खोजने निमा के सहायक गया हुआ है। तंबू के बाहर के विशालकाय मैदान में घोडे चर रहे हैं। देरापुक में आनेवालों में से एक समूह आधी रास्ते में ही षेरसोम की ओर लौटा उन्होंने कहा कि देरापुक और सुत्तुलपुक में हिमपात हो रहा है कहकर कतिपय घोडेवालों एवं पोर्टरों ने उन्हें डराया था। उन्हें मज़दूरी मिल चुकी थी। वह लाभ है। कल दूसरे संघ के साथ आ भी सकता है। ऐसे छल भी कैलासयाखान में सहज है।

घोर वर्षा एवं ठंडी हवा को पारकर शांतकुमारी अम्मा और माताजी को देरापुक में पहुँचाने की खुशी बालगोपाल के चेहरे में दर्ज है। घोडे पर चढ़कर आए राधाकृष्णन नायर बारिश से पहले ही कैंप में पहुँच चुका था। षेरपाओं एवं घोडेवालों के आपसी संवाद सुननेवाले बालगोपाल ने एक बात स्पष्ट कर दी कि कैलास यात्रा की मुश्किल घड़ी पार हो चुकी है। परीक्षाएँ ही महादेव की पसंदीदा पूजा एवं अर्चना हैं। यात्रा के दौरान कहीं पर प्रत्येक यात्री को भगवानआडे हाथ लेते हैं। उसका अहंकार और विभक्ति को हटाने के लिए ही ऐसा करते हैं। कुछ लोग डर के मारे वापस चले जाते है। कुछ लोग बीच रास्ते में किसी सत्र में ठहर जाते हैं। शंकर के चरणकमलों पर पडनेवालों को कभी भी वे लात नहीं मारते। वह भी नहीं कि हाथ बढ़ाकर ताकत भी प्रदान करते हैं। (क्रमशः)

आत्मकथा

देवयानम्

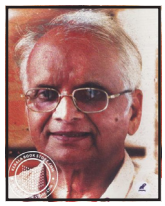

अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना

मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा

सत्रहवाँ देवपद - घरेलू जीवन

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

अपने भाई डॉ पी वी परमेश्वर शर्मा की शादी गुरुवायूर के श्रीकृष्ण स्वामी के मंदिर में भगवान के सामने 1974 में हुई थी। उस समय वे शास्तमंगलं के श्रीरामकृष्ण मिशन के अस्पताल में रेसिडन्ट सर्जन (Resident Surgeon) के पद पर काम कर रहे थे। विवाह के बाद उन्होंने आश्रम के निकटस्थ 'सुशेख' नामक घर किराये पर लिया और अपने परिवार के साथ वहाँ रहने लगे। अगले साल उनकी पत्नी सति ने अपनी बेटी को जन्म दिया और हमारी माँ अपनी पहली पौत्री का मुँह देखने गाँव से आई। कुछ महीने के बाद अपने भाई के बार बार अनुरोध किए जाने पर मैं भी उनके साथ रहने लगा। यह अपनी ज़िंदगी की एक नई शुरुआत थी - ऐसा लगता है अब। श्रीरामकृष्ण आश्रम के निकटवाले इस घर में अपने स्वकीयों के साथ के रहन-सहन से मुझे बड़ा संतोष हुआ था। यहाँ से सबेरे आठ बजे मैं विश्वविद्यालय जाता था और शाम को कोई सभा समारोह होता तो उसके बाद रात को करीब दस बजे घर लौट आता था किसी न किसी काम में मैं हमेशा व्यस्त रहता था। शल्य-चिकित्सक (Surgeon) तथा चिकित्सक दोनों रूपों में अपना भाई प्रसिद्ध हो गए तो वे भी व्यस्त हो गए। इसी बीच उन्हें सरकारी नौकरी मिली तो राज भवन में राज्यपाल की चिकित्सा तथा सरकारी अस्पताल के रोगियों की चिकित्सा - दोनों में वे हमेशा व्यस्त रहते थे।

हमारी बहिन शारदा की बेटी शालिनी यहाँ के कॉलेज में भर्ती हो गई। तब वह हमारे साथ रहती थी और बाद में उसकी बहिन मालिनी भी अपने कॉलेज की पढ़ाई के लिए यहाँ आई। भाई का मित्र श्री राजन नायर भी रोज़ हमारे यहाँ आता था जो अस्पताल का फारमसिस्ट (औषध बनानेवाला) था। वहाँ का मुख्य नर्स श्रीमती नाणिक्कुट्टियम्मा भी कभी कभी हमसे मिलने आती थी। भाई की तबीयत जब बिगड गई थी तब उसकी चिकित्सा करने के लिए हमारे छोटे मामा डॉ पी एन शर्मा करीब तीन महीने तक हमारे साथ रहते थे।

गाँव में हमारा पुराना पैतृक घर नाशोन्मुख था। उसका संरक्षण तो बिलकुल आसान नहीं था। तब हमारे ताऊ के बेटे ने उसे बेच डाला और उसकी जगह पर एक छोटा-सा मकान बनवाया था। पुराने घर के गिरा देने की बात सुन मुझे अत्यधिक पीड़ा महसूस हुई थी क्योंकि अपने बचपन की मीठी स्मृतियाँ उसके साथ जुड़ी हुई हैं।

घर के बँटवारे करते समय हमें जो मकान मिला था कठिन मेहनत कर पिता जी ने उसे अच्छा खाज़सा घर बना लिया था। उनके स्वर्गवास होने पर हमारी माँ और बहिन वहाँ रहती थीं, हम दोनों भाई वहाँ से बहुत दूर तिरुवनंतपुरम में थे। उनका इस प्रकार वहाँ रहना बिलकुल सुरक्षित नहीं था। इसलिए इच्छा न होते हुए भी हमें वह घर बेचना पड़ा। उसके बाद गाँव के पश्चिम भाग में मंदिर के निकट हमारी जो ज़मीन है वहाँ एक नए मकान का निर्माण किया गया जिसका नाम रखाज़ गया 'ब्रह्मविहार'। माँ और

बहिन वहाँ रहने लगीं। इसी बीच हमने शास्तमंगलम में भी अपना एक घर बनवाया; जिसका नाम है 'निवेदिता' जहाँ अब हम रहते हैं। पुराने दोनों घर के नष्ट होने से अपना मन अब भी व्याकुल रहता है।

"जानामि धर्मं न हि मे प्रवृत्ति/जानाम्यधर्मं न हि मे निवृत्ति।।" काल के प्रवाह में मानव हमेशा निराधार एवं बेसहारे हो जाता है। ईश्वर की इच्छा से जो होता है उसे स्थिर चित्त हो स्वीकार करना हमारा धर्म है। 'रामायण' में ऐसा लिखा गया है कि - "नियतिः कारणं लोके नियतिः कर्मसाधनं।/नियतिः सर्वभूतानां नियोगेषु इह कारणम्।

संसार के हर कर्म का कारण नियति है। चर-अचर सबके काम नियतिः निश्चित करती है। सबके कर्म का साधन भी नियति ही है। विधना का यह नियम अपने बारे में भी बिलकुल सत्य है।

हमारे इस 'निवेदिता' नामक घर में कुछ निकट के रिश्ते के लोग आकर रहा करते थे। उनमें प्रमुख थे अपने ही परिवार के बुजुर्ग श्री पी एस शंकर जो केरल सरकार के कृषि-विभाग के उपाध्यक्ष (Deputy Director) थे और हमारे बहनोई श्री पी एन उण्णियप्पन मूत्ततु जो स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर के प्रबंधक थे। अपने भाई ने घर के किसी कमरे को क्लिनिक के रूप में सजाया था ताकि घर आनेवाले बीमारों की चिकित्सा हो सके। हर दिन शाम को बहुत से बीमार लोग आते थे और उनकी चिकित्सा करने में भाई की सहायता के लिए अस्पताल के कर्मचारी श्री कण्णन आता था। वास्तव में वह कमरा एक चिकित्सालय के साथ दोस्तों का मिलन स्थान था।

'निवेदिता' के निर्माण-काल में हम लोग 'कैवल्यं' नामक किराए के घर में रहते थे। उस समय माँ भी हमारे साथ रहती थी। उनकी आँखों की शल्य-चिकित्सा के लिए उन्हें मधुरा (तमिलनाडु) के सुप्रसिद्ध 'अरविन्दो अस्पताल' में भर्ती की गई थी। लेकिन न जाने क्यों उनकी वह चिकित्सा सफल न हो पाई थी और वे अपने मृत्युपर्यन्त अंधी ही बनी रही थी। चिकित्सा के बाद वे गाँव चली गई थीं और वहाँ हमारी बहिन के साथ रहती थीं। वहाँ सब लोग माँ की सेवा-शुश्रूषा में कोई कमी नहीं आने दी थी। हम दोनों भाई बार-बार गाँव जाकर माँ की देख-रेख एवं सेवा शुश्रूषा करते थे।

इसी बीच हरिप्पाडु की आर्थिक सभा (Financial Corporation) की सहायता से भाई ने वहाँ एक अस्पताल खाञ्रेला था जिसका नाम था एस वी एस क्लिनिक (एस वासुदेव शर्मा क्लिनिक)। वासुदेव शर्मा तो हमारे पिताजी का नाम है। मंदिर के पास अपनी माताजी के नाम पर उसने एक दूकान भी खोल दी थी जिसका नाम था 'पार्वती मेडिकल्स'। एक साल बाद उसने वह दुकान बेच दिया था और हमारे ताऊ के बेटे श्री नारायण से पैतृक ज़मीन का कुछ हिस्सा खरीद लिया था। यह तो सब के लिए बड़े संतोष की बात हुई थी। अस्पताल की ज़मीन हमारे पूर्वजों की संपत्ति नहीं; बल्कि पिताजी ने बहुत पहले उसे खरीदा था। उसे खरीदते समय भूस्वामी से उन्होंने एक वादा भी किया था। ग्रामाधीश भगवान श्री वेलायुध स्वामी अपने उत्सव की परिसमाप्ति पर नगरि श्रीकृष्ण स्वामी के मंदिर के तालाब में पुण्य स्नान करने के लिए जाते समय यहाँ पधारेंगे तब यथाविधि उनका स्वागत करना है। इस प्रतिज्ञा के अनुसार पिताजी ने भगवान को 'अनपोलि' अर्थात् दीपक के साथ धान, चावल, पोहा, लाज और केले आदि पाँच विशिष्ट वस्तुएँ समर्पित कर अपने परिवार के ऐश्वर्य के लिए उनसे प्रार्थना की थी। पिताजी के चल बसने पर हम उनका अनुसरण करते हुए इस प्रकार भगवान की पूजा अब भी करते हैं।

(क्रमशः)

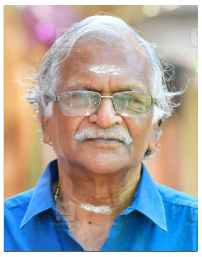

आत्मकथा

ज़िंदगी : एक लोलक

मूल : श्रीकुमारन तंपी

अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

हरिप्पाट्टु के वेलायुध स्वामी ने सहायता की। तोनयक्काट नामक बस्ती से डॉक्टर पद्मनाभन तंपी को एक बुलावा आया। उस बस्ती के भूप्रभुओं में से एक तोट्टामण घर की मुखिया रूपी कुंञम्मा को दाँत में असहनीय दर्द। अनेक दंत वैद्यों को दिखाया। आयुर्वेद की भी सहायता ली। पर कोई प्रयोजन नहीं। वेदना कम नहीं होती है। मसूडे सूज कर पक गये हैं। मुँह खोलने और बंद करने में कठिनाई हुई। भोजन करना तो दूर की बात है। तोट्टमण घर में आनेवाले एक रिश्तेदार ने कहा : "डॉक्टर पी सी तंपी को बुलाओ। हरिप्पाट्टु से। इस ओणाट्टुकरा में तंपी महोदय के समान एक दंत डॉक्टर दूसरा कोई नहीं है। दूर कलकत्ता में जाकर पढ़नेवाला व्यक्ति है। साधारण व्यक्ति नहीं है। श्रीमूलं असेंब्ली में हरिप्पाट्टु से विजयी होकर महाराजा की सभा में बैठनेवाले सदस्य हैं। मोटरकार भेजने पर ही वे आयेंगे। तंपी महोदय को बुलाओ। चेट्टिकुलंगरा माताजी को एक चाँदाट्टम नामक मन्नत भी करना। फिर तो कुंञम्मा को दाँत के संबंध में परेशान होने की नौबत नहीं होगी।" तोनयक्काट्टु से मोटरकार से आदमी आया। चिकित्सा के उपकरणों के साथ पद्मनाभन तंपी तोनय्क्काट्टु की ओर गए।

तोट्टमण घर बड़ा होने पर भी कार के आने की चौडाई सामने की सडक को नहीं थी। जहाँ चौडाई थी, वहाँ गाड़ी रोककर पडोस के घर के आँगन से होकर ही प्रवेश करना चाहिए था। उस घर के सामने पहुँचनेवाले पद्मनाभन तंपी अद्भुत स्तब्ध रह गए। घर के आंगण में पका हुआ चाव सूखने के लिए उपयोग करनेवाली चटाई पर सौ के नोट एक अधेड़ व्यक्ति सूखने के लिए रख दिए जा रहे हैं। एक क्षण उसे देखते रहने के बाद पद्मनाभन तंपी ने पूछा : क्या हुआ?

बिना किसी हिचक के, नोट सूखनेवाले अधेड व्यक्ति ने कहा : बाँधकर रखा गया था, भीग गया. पद्मनाभन तंपी आश्चर्य से मुक्त न होकर चला। तोट्टमण आकर कुञ्ञम्मा के सारे दाँतों की जाँच की। सारे दाँतों को निकाल देना चाहिए। नया सेट दाँत रखना चाहिए।

कुञ्ञम्मा सबके लिए सहमत थी। बस, दर्द से मुक्ति चाहिए। इस तरह इलाज प्रारंभ हुआ। हर एक बार पडोस के घर के सामने पहुँचने पर चाचाजी के मन पर भीगे हुए सौ रुपयों के नोटों का चित्र व्यक्त होगा। धीरे धीरे नोटों को सुखाने के लिए रखनेवाले अधेड व्यक्ति से परिचित हुआ। उन्होंने कहा - हमें बैंकों में विश्वास नहीं है। बहुत रुपए हैं हमारे पास। फिर भी उसे किसी भी बैंक में जाकर जमा करें तो बैंक टूट जाए तो हम क्या करेंगे? हमारे हाथ हमारे ही सिरहाने रहना चाहिए क्यों? मेरे चाचाजी पद्मनाभन तंपी ने उनसे अधिक निकटतम संबंध स्थापित किया।

वे पुत्तूर परिवार के महोदय थे। बँटवारा होने के बाद इस घर में रहने के लिए आए दो भाई हैं - कलरिक्कल नामक इस घर में रहते हैं। साथ ही दो भागिनेय, एक भागिनेयी भी है। राघवन महोदय, कोच्चु राघवन महोदय ये ही उन भाइयों के नाम थे। बाँटवारा होने पर कृतघ्नता दिखाने के कारण हमने पुत्तूर नामक घर का नाम छोड दिया। नाम राघवन पिल्लै और कोच्चुरामन पिल्लै रख दिया। हमको उन कृतध्नतावालों के परिवार नहीं चाहिए। महोदय नामक पदनाम भी नहीं चाहिए।

चाचा को लगा कि धैर्य एवं अभिमानी लोग हैं ये... दो भागिनेयों की उम्र.... बड़े का सत्ताईस, छोटे का इक्कीस। राघवन पिल्लै के रूप में स्वयं परिवर्तित हुए राम महोदय ने कहा बड़ा शादी से इनकार करके खड़ा है। उसे एक प्रकार की बुरी खाँसी है। जितनी भी चिकित्सा करने पर भी दूर नहीं होता है। व्यक्ति बहुत निरीह है। पर छोटा हृष्ट-पुष्ट है। उम्र सिर्फ इक्कीस है। पर देखनेवाले पच्चीस ही बतायेंगे। डॉक्टर पद्मनाभन तंपी के मन में चटाई पर फैले नोटों का हिलना पृष्ठभूमि संगीत बना।

उस इक्कीस उम्रवाले लड़के को छोटी बहन के पति बना सके तो.... लड़के का इक्कीस और लडकी का उन्नीस... सिर्फ दो साल का ही अंतर है। वे सहमत होंगे क्या..? लड़के को आमने सामने देखने पर पद्मनाभन तंपी का आग्रह बढ़ गया। अच्छा सुडौल शरीरवाला लड़का। सही अनुपात में लंबाई और चौडाई। छोटी बहन ज़रा काले रंग की है... युवक का तो अच्छा रंग है। नाक कुछ झुकी हुई, उभरी हुई लंबी नाक ही राजकीय है। फिर भी नाक लंबी होने से मात्र से राजा बनेगा क्या? महोदय हो तो क्या होगा? पिल्लै हो तो क्या होगा? जो होना है वह संपत्ति है। इस दुनिया में धन का ही महत्व है। इतने सालों के अंदर अनुभव से वह इसे समझ चुका था।

तोट्टमण की कुञ्ञम्मा से पद्मनाभन तंपी ने बात की। उन्होंने अधिक बातें बता दीं। "आवश्यकता से कहीं गुना अधिक संपत्ति है। बहन तीसरी संतान के लिए गर्भधारण तो कर चुकी है कुछ ही महीनों के बाद पति मर गए। उनकी संतानों में दो बेटे और एक बेटी।"

कनिष्ठ पुत्र ने पिताजी को देखा नहीं है.... बिना अधिक देरी के बहन की मौत हुई। भानजे की शादी तेरहवीं साल की उम्र में करा दी गई। उनकी भी एक उण्णित्तान ने शादी की थी। उसकी एक बच्चा होने पर मालूम हुआ कि वह व्यक्ति ठीक नहीं है। उसे छोड दिया गया.... अब दोनों चाचा, पति नष्ट होने से मौन हुई भानजी और उसकी संतानें और भानजे ही कलरिक्कल घर में रहते हैं।

राघवन महोदय और कोच्चुरामन महोदय ने शादी न करने का निश्चय किया। बहन और भानजों के लिए वे अविवाहित बनकर जीवन बिताते हैं। पद्मनाभन तंपी ने सोचा। कितना त्यागोज्वल जीवन है। यही मरुमक्कत्तायं का महत्व है। भानजों के लिए दाम्पत्य जीवन ही छोडनेवाले दो चाचे ....। तोट्टमण की कुञ्ञम्मा ने कहा-"अगर डॉक्टर महोदय चाहते हैं तो हम इस रिश्ते के बारे में सोचेंगे। फिर बिना माँ-बाप के पले लड़का है। इसलिए ज़रा अहंकारी है। लेकिन बँटवारा हो जाय तो उसे लाखों की संपत्ति मिलेगी।" (क्रमशः)

प्रश्नोत्तरी उत्तर

1. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
2. स्वयंभू
3. प्रेम निरूपण
4. महादेवी वर्मा
5. 1893 ई.
6. भट्टनायक
7. काशिका
8. द्राविड
9. कमलेश्वर
10. रामचंद्र शुक्ल
11. टी एस इलियट
12. 1863 ई.
13. चंद्रकिरण सोनेरिक्सा
14. हिंदी प्रदीप
15. ब्रजभाषा
16. जनपदीय हिंदुस्तानी
17. रागदरबारी
18. नामवर सिंह
19. मुकेश मानस
20. वियोगी हरि

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2025 के विविध दृश्य

RNI No. 7942/1966
Date of Publication :15-12-2025
Date of posting : 20th of Every month

KERALJYOTI

DECEMBER 2025

Vol. No. 62, Issue No.09
Regn. No. KL/TV(S) 381/2025-2027
Price Rs. 40/-

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha approved for School Libraries by the Education Dept., Govt. of Kerala as per notification No. B-3 / 4036/83 SIE dated 20-9-1985
Approved by University of Kerala as per order No. Ac. A II / 1 / 31965 / Std. Journals/2013 / dtd : 27-6-2013

सुगम हिन्दी पुरस्कार वितरण
तिरुवनन्तपुरम जिला - विविध दृश्य

केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 के लिए मंत्री अ.व.डॉ.मधु बी द्वारा प्रकाशित, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 में मुद्रित डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन व डॉ.रंजीत रविशैलम द्वारा संपादित

Published by the Secretary, Adv. Dr. B. Madhu for Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695014
Printed at Rashtravani Mudranalaya, Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695014 & edited by Dr.M.S.Vinayachandran and Dr.Renjith Ravisailam